सितंबर 2025

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

Vol.24, Issue 11 | Annual Subscription ₹ 480

Rotary

THE COURSE COVERS

- Mr. IEC, did you deliver on the Behavioural Promise?
- Understanding KAP – Knowledge, Attitude, Practice
- Mind, society and Behaviour - Social Preferences and their Implications
- Because True Communication Begins with Listening
- Diagnosing Psychological and social obstacles
- Tools: DILO, MILO, CAR, NOSA, VARIED, EDGES, TOMA, WAIT
- HIC-DARM: Overcoming intention-action Divides
- Social Marketing Communication – 4 Cs
- Psychological and Social Approaches to Changing Behaviours
- Mental Models, Framing and Reframing
- Framework for COMBI Planning
- Monitoring and Measuring Behavioural Impact

The emphasis is to move beyond awareness-building to enable actual behaviour change, and integrate COMBI planning into ongoing and new development

COURSE FEE
₹ 1500/-

COURSE DURATION:
10 HOURS

COURSE TYPE:
ONLINE

COURSE DATES:
SEPTEMBER 19,20 & 21 2025

APPLY VIA

DPIIT #startupindia DIPP205349 | LEND A HAND | Meri LiFE | RJ GARBAGE BANK குப்பை வங்கி

rj_garbagebank www.ilovewaste.in rjgarbagebank@gmail.com 87542 04222

विषयसूची

12

हरी-भरी धरती
के हमसफ़र

22

स्थायी आय और
स्वाद्य सुरक्षा

24

ऑस्ट्रेलिया में भूखों
तक भोजन पहुँचाना

38

कक्षा से धान
के खेत तक

40

मणिपाल में रोटरी का
डेंगू विरोधी अभियान

44

सतारा में नवजातों के
लिए एक नई सुबह

48

महाराष्ट्र के गांवों को
मिले हैप्पी स्कूल

Rotary

A publication of Rotary
Global Media Network

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता
₹420 से संशोधित कर
₹324 कर दी गई हैं।

एक सहज संकेत

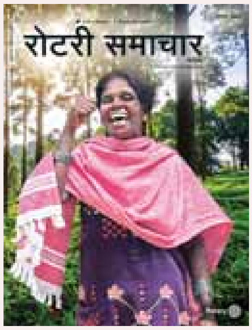

मैं अगस्त अंक की कवर स्टोरी पढ़कर बहुत भावुक हो गया जिसमें रोटरी क्लब कोडाईकनाल से एक अकेले रोटेरियन - राजकुमार रमन ने आदिवासी परिवारों के लिए 14 घर बनाने के लिए धन जुटाया और इस काम को पूरा करने में बहुत मेहनत की। जो बात सबसे ज़्यादा प्रेरणादायक लगी वो थी मुस्कुराती और आत्मविश्वास से भरी मल्लिगा की तस्वीर - जिसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उसने पूरी दुनिया जीत ली हो। आपके लेख में पढ़ा कि इस परियोजना के अंतिम चरण यानी बिजली आपूर्ति के लिए अभी भी कुछ धन की आवश्यकता है। मैं इस नेक कार्य के लिए ₹1 लाख का एक विनम्र योगदान भेज रहा हूँ।

पीडीजी वी आर मुत्तु
मंडल 3212

मुझे कवर पेज की तस्वीर बहुत दिलचस्प और आकर्षक लगी; उस आदिवासी महिला के चेहरे की खुशी देखने लायक थी! ऐसा कहा जाता है, 'एक घर बनवाना और बेटी की शादी करना' - ये दोनों ही मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए बहुत कठिन कार्य होते हैं। और यहाँ रोटरी ने उन आदिवासियों के लिए घर बनाए जिनके लिए घर का सपना देखना भी असंभव जैसा होता है। रोटेरियन राजकुमार रमन को सलाम जिन्होंने उनका यह सपना साकार किया। संपादक रशीदा भगत को भी हमारी हार्दिक बधाई जिन्होंने इस परियोजना और इसके दौरान आई कठिनाइयों को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया।

रोटरी में सेवा कार्य ऐसा होना चाहिए जो आपके मन और आत्मा दोनों को संतोष दे। इस लेख ने निश्चित रूप से हम सबके भीतर ऐसी प्रभावशाली सेवा करने की प्रेरणा जगा दी है। तस्वीरों में लाभार्थियों के चेहरों पर जो खुशी दिखाई दे रही है, वह स्वयं इस सेवा की सफलता की गवाही देती है।

सी पंडियन, रोटरी क्लब डिंडीगुल - मंडल 3000

कवर पेज की तस्वीर, उस पर आधारित लेख और सभी तस्वीरें बहुत खूबसूरती से पेश की गई हैं। रो ई मंडल 3000 के पूर्व असिस्टेंट गवर्नर रोटेरियन राजकुमार रमन वास्तव में इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण हैं कि किसी भी परियोजना की शुरुआत करने से पहले एक रोटेरियन को किन बातों पर ध्यान देना चाहिए। यह जानकर अत्यंत प्रेरणा मिली कि 14 मकानों के निर्माण हेतु ₹70 लाख की लागत एक व्यक्ति ने अकेले, बिना रोटरी या क्लब निधि के समर्थन के कैसे जुटाई। लेखिका ने इस परियोजना के हर चरण का विस्तृत विवरण दिया है - दाताओं की खोज से लेकर सरकारी अधिकारियों की मदद से ज़रूरतमंदों तक सहायता पहुँचाने तक। रमन जी को इस अद्भुत कार्य के लिए सलाम।

के पॉलसामी, रोटरी क्लब श्रीविलीपुत्तूर फ्रेंड्स - मंडल 3212

नेतृत्व की चुनौती

मुझे अगस्त अंक में रशीदा भगत द्वारा संपादकीय टिप्पणी में नेतृत्व पर व्यक्त किए गए उनके विचार बहुत प्रभावशाली लगे। उन्होंने अपने शीर्षक में सवाल उठाया था - क्या नेतृत्व चुनौती है या अवसर? मेरा उत्तर है: रोटरी के संदर्भ में यह दोनों है। रोटरी में नेतृत्व सेवा-प्रेमी लोगों के समूह के भीतर होता है और यह क्लब अध्यक्ष, सचिव जैसे पदों से परे होता है। हमारे अधिकांश रोटेरियन विभिन्न पद स्वीकार करते हैं जिनमें अनेक चुनौतियाँ होती हैं, लेकिन वे इस पद को संगठन और समुदाय की सेवा का अवसर मानते हैं। मेरा मानना है कि इसे किसी कंपनी या उद्यम के प्रबंधन से तुलना नहीं करनी चाहिए, जो पदों या पदानुक्रम पर आधारित होता है। रोटरी जैसे एक सेवा संगठन में नेतृत्व लोगों के दिलों में व्यक्तिगत संबंध के माध्यम से स्थान बनाने का नाम है।

रोटरी में अपने लंबे अनुभव के दौरान मैंने ऐसे कई लोगों को देखा है जो कंपनी के कार्यों या व्यावसायिक लेन-देन में माहिर थे, लेकिन जब बात क्लब नेतृत्व या समाज सेवा की आई, तो वे अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाए। रोटरी में एक अच्छा नेता वही होता है जो अपने साथी रोटेरियनों को सार्थक कार्य करके ऊँचाइयाँ छूने के लिए प्रेरित कर सके। इसके लिए आवश्यक है - सरल सोच, रोटरी की गहन जानकारी और प्रभावी संवाद कौशल।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब बेंगलुरू जे पी नगर - मंडल 3191

अगस्त अंक में रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़्ज़ो का कथन रोटरी की बुद्धिमत्ता से भरे स्वर्णिम शब्द हैं। वह कहते हैं: सदस्यता वृद्धि केवल आंकड़ों की बात नहीं है, यह अवसर प्रदान करने के बारे में है। यह उन लोगों को आमंत्रित करने के बारे में है जो अपना समय, प्रतिभा और दिल किसी ऐसे उद्देश्य के लिए देने को तैयार होते है जो स्वयं से भी बड़ा हो।

''जब हम नए सदस्यों का स्वागत करते हैं, तो हम नई सोच और नई ऊर्जा को साथ लाते हैं। इससे हमारा प्रभाव बढ़ता है, हमारे क्लब मज़बूत होते हैं और यह सुनिश्चित होता है कि रोटरी समय के साथ आगे बढ़ती रहे।'' सच्चाई यह है: जब हम सिर्फ संख्याओं का उत्सव मनाते हैं, तो शायद हमें एक सदस्य मिलता है। लेकिन जब हम लोगों का उत्सव मनाते हैं, तो हमें एक सच्चा रोटेरियन मिलता है।

आर मुरली कृष्णा
रोटरी क्लब बेरहामपुर - मंडल 3262

एक बार फिर यह अंक बहुत ही सुंदर और समृद्ध सामग्री से भरा हुआ है - इसमें मूल्यवान

संपादकीय, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो के साथ रोचक संवाद और एक बेहद जानकारीपूर्ण व विचारोत्तेजक लेख *अपने बच्चों को सही शिक्षा दें* शामिल था।

इस लेख में उचित रूप से कहा गया है कि "आज के बच्चे ही कल के नागरिक हैं।" इसलिए उन्हें शुरू से ही सही दिशा देना आवश्यक है। बच्चों में पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार की संस्कृति विकसित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें विद्यालय के पाठ्यक्रम में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जल संरक्षण जैसे विषयों को शामिल करना चाहिए ताकि विद्यार्थी इस बहुआयामी संकट को सही तरीके से समझ सकें।

हमें घर पर भी पर्यावरण के मूल नियमों का पालन करना चाहिए, जैसे कचरा अलग-अलग करना, प्लास्टिक के उपयोग को कम करना और पानी एवं ऊर्जा की बचत करना। बच्चे भी पूरी तरह से हमारी नकल करेंगे।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूप नगर
मंडल 3080

एक दिल छू लेने वाला लेख

जुलाई अंक में प्रकाशित लेख रोटरी क्लब भावनगर वंचित बच्चों को उम्मीद देता है को मेरी हार्दिक प्रशंसा।

संजय और नेहल की कहानी तथा रोटरी क्लब भावनगर द्वारा चलाए जा रहे रोटरी चाइल्ड एजुकेयर सेंटर की प्रतिबद्धता अत्यंत प्रेरणादायक है। यह निरंतर सेवा का एक उदाहरण है जो केवल व्यक्तिगत जीवन ही नहीं बल्कि पूरे परिवारों और समुदायों को ऊपर उठाती है। वर्षों से रोटेरियनों और रोटरी एंस की समर्पण भावना *सेवा परमो धर्म* की सार्थकता को दर्शाती है।

एक रोटेरियन होने के नाते, मुझे इस उपलब्धि पर गर्व है। यह कहानी हमें याद दिलाती है कि शिक्षा के क्षेत्र में दिया गया एक छोटा-सा योगदान भी किसी के जीवन को पूरी तरह बदल सकता है।

ऐसी प्रभावशाली परियोजनाओं पर प्रकाश डालने के लिए धन्यवाद, जो हमें रोटरी की उस स्थायी शक्ति की याद दिलाती हैं जो सबसे कमजोर वर्गों में उम्मीद और गरिमा का संचार करती हैं।

राज एम खूबलाल
रोटरी क्लब रोज़ बेले - मंडल 9220 (मॉरीशस)

जुलाई अंक के कवर पेज की तस्वीर शानदार थी। जहाँ संपादक का संदेश *देने की खुशी* अत्यंत प्रभावशाली था वहीं टीआरएफ न्यासी भरत पांड्या का संदेश भी शानदार था। महाराष्ट्र के 100 ग्रामीण स्कूलों को डिजिटल कक्षाएं प्रदान करने के लिए रो ई मंडल 3132 के रोटेरियनों को बधाई। जयश्री का लेख *एक छत, अनेक सेवाएँ* दिलचस्प था। 2024-25 के दौरान रोटरी क्लब बॉम्बे बे व्यू, रो ई मंडल 3141 द्वारा ₹4.5 करोड़ मूल्य की 320 परियोजनाएं पूरी करने के लिए शुभकामनाएं जिसने एक लाख लोगों के जीवन को छुआ।

डेनियल चित्तिलापिल्ली
रोटरी क्लब कलूर - मंडल 3205

जुलाई अंक का संपादकीय *देने की खुशी* आज की आवश्यकताओं का सच्चा प्रतिबिंब है। एक परिवार का सम्मान उसकी स्त्री में निहित होता है; यदि वह शिक्षित होती है तो पूरा परिवार लाभान्वित होता है। इसी सोच को ध्यान में रखते हुए मैं पिछले आठ वर्षों से आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की कॉलेज ट्यूशन फीस भर रहा हूँ। अब तक तीन छात्र इस सहायता से अपनी पढ़ाई पूरी करके अच्छे रोजगार प्राप्त कर चुके हैं। वर्तमान में दो छात्र इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं।

सेवा परियोजना के वीडियो आमंत्रित

हम रोटरी क्लबों को आमंत्रित करते हैं कि वे अपनी सेवा परियोजनाओं के संक्षिप्त वीडियो हमें *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर भेजें। हम उन वीडियो को अपनी वेबसाइट *rotarynewsonline.org* पर अपलोड करेंगे।

वीडियो को सहज और स्वाभाविक रखें, जिसमें लाभार्थियों को दिखाया गया हो और यह बताया गया हो कि आपकी परियोजनाओं ने उनके जीवन को कैसे बदला। वीडियो की अवधि दो मिनट से अधिक न हो, इसकी गुणवत्ता अच्छी हो और साथ ही इसका वर्णन प्रभावशाली व स्पष्ट हो।

IKYAM फीडिंग होप संस्था के एक सदस्य के रूप में हम हर सप्ताह ज़रूरतमंदों को भोजन प्रदान करते हैं। मुझे गर्व है कि मैं ऐसे रोटरी क्लब का सदस्य हूँ, जो इन सभी गतिविधियों को संगठित तरीके से संचालित करता है। आपका संपादकीय मुझे और भी ऐसे सेवा कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। आपको धन्यवाद!

शिवपेरुमनल सुब्रमणी, रोटरी क्लब वलाजपेट
मंडल 3231

कवर पर: सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र में उपहारस्वरूप नारियल का पौधा प्राप्त करती हुई एक महिला किसान।

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

शिक्षा के माध्यम से शांति

जब मैंने रो ई अध्यक्ष की भूमिका संभाली, तो वह क्षण अचानक और अप्रत्याशित रूप से आया। इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि कैसे दुनिया एक पल में बदल सकती है, और कैसे रोटरी उस बदलाव में भलाई के लिए एक स्थायी शक्ति बन सकता है। इस महीने, रोटरी के बुनियादी शिक्षा और साक्षरता माह में, हम कार्रवाई का एक स्पष्ट आह्वान कर रहे हैं: हम जिस भी समुदाय की सेवा करते हैं, वहाँ शिक्षा की नींव को मज़बूत करें।

दुनिया भर में लाखों लोग पढ़ने में असमर्थ हैं, और लाखों बच्चों को अब भी बुनियादी शिक्षा तक पहुँच नहीं है। फिर भी, हम इसका समाधान जानते हैं: स्थायी, समावेशी और समान शिक्षा, खासकर लड़कियों और हाशिए पर पड़े युवाओं के लिए। साक्षरता केवल पढ़ने-लिखने की क्षमता नहीं है; यह मानवीय गरिमा, आर्थिक गतिशीलता और शांति की कुंजी है। हर खोली गई किताब, हर कक्षा को सहायता और हर प्रशिक्षित शिक्षक शांति का आधार बनते हैं।

इस वर्ष, हमारा संदेश है *यूनाइट फॉर गुड।* एकजुटता उस शक्ति का प्रतीक है जो हम एक-दूसरे में पाते हैं। जब हम अपनी प्रतिभाओं और संसाधनों को एकजुट करते हैं - न केवल अपने क्लबों के बीच, बल्कि साझेदारों, संगठनों और समुदायों के बीच भी - तब हम अपनी पहुँच का विस्तार करते हैं। और जब हम समय के साथ लगातार ऐसा करते हैं, तो हम स्थायी परिवर्तन लाते हैं। रोटरी सेवा को केवल वार्षिक लक्ष्यों से नहीं मापा जा सकता। शिक्षा के क्षेत्र में हमारा कार्य एक वर्ष से आगे तक फैला होना चाहिए, क्योंकि साक्षरता परियोजनाओं को जड़ पकड़ने, विकसित होने और फल देने में समय लगता है।

अब साहसपूर्वक और रचनात्मक रूप से सोचने का समय है। नए प्रकार के क्लब हमें शिक्षकों, छात्रों और अधिवक्ताओं को नए तरीकों से जोड़ने में मदद कर सकते हैं। आइए इस महीने का उपयोग शिक्षा के प्रति जुनून रखने वाले नए सदस्यों का स्वागत करने और मौजूदा सदस्यों को स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सेवा परियोजनाओं का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाने में करें। चाहे आप पुस्तकालय बना रहे हों, पाठ्यपुस्तकें वितरित कर रहे हों, या छात्रों को मार्गदर्शन दे रहे हों, आपके कार्य महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा शांति निर्माण भी है। हमारे द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रत्येक छात्रवृत्ति, हमारे द्वारा समर्थित प्रत्येक प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम, और हमारे द्वारा वित्तपोषित प्रत्येक वयस्क साक्षरता कक्षा, ये सभी शांति के कार्य हैं। रोटरी एक सदी से भी ज़्यादा समय से इसी तरह शांति का निर्माण कर रही है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि साक्षरता की लड़ाई सिर्फ़ पहुँच की नहीं, बल्कि समानता की भी है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर शिक्षार्थी को, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, अपनी क्षमता तक पहुँचने का अवसर मिले। और इसका उद्देश्य सीमाओं, भाषाओं और पीढ़ियों के पार एक साथ खड़े होकर यह कहना है कि शिक्षा एक अधिकार है, विशेषाधिकार नहीं।

आइए, स्थायी साक्षरता के लिए प्रतिबद्ध हों और *भलाई के लिए एकजुट* हों। आइए, एक ऐसी दुनिया का सपना देखें जहाँ हर बच्चा पढ़ना सीखे। और फिर, कर्मठ लोगों के रूप में, आइए, उस सपने को साकार करने के लिए मिलकर काम करें।

हम सब मिलकर, शिक्षा की शक्ति से शुरुआत करके, ज़िंदगी बदल सकते हैं। हम सब मिलकर, *भलाई के लिए एकजुट* होते हैं।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

भूख का समाधान: मानवता और प्रकृति के लिए

हम भारतीय बचपन से ही इस मूल मंत्र के साथ बड़े होते है: खाना बर्बाद मत करो, थाली में उतना ही लो जितना खा सको या फिर जो थाली में लिया है उसे पूरा खत्म करो। इसलिए जब हम बड़ी मात्रा में खाने की बर्बादी होते देखते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हमें झटका लगता है। इसलिए हाल ही में गोल्ड कोस्ट (ऑस्ट्रेलिया) में आयोजित एशिया पैसिफिक रीजनल रोटरी मैगज़ीन संपादकों की बैठक में जब मुझे यह पता चला कि ऑस्ट्रेलिया और दुनिया भर में हर साल कितना खाना बर्बाद होता है, तो मैं स्तब्ध रह गई। अपनी साँस रोक लीजिए यहाँ कुछ आंकड़े है: हर साल 7.6 मिलियन टन भोजन, जिसमें से 70 प्रतिशत पूरी तरह खाने योग्य होता है, फेंक दिया जाता है। इस बर्बादी की वजह से ऑस्ट्रेलिया की अर्थव्यवस्था को हर साल लगभग **36.6 बिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर** का नुकसान होता है। सबसे ज़्यादा खाना (2.5 मिलियन टन) लोगों के घरों से बर्बाद होता है यानी कि हम और आप ही इसका सबसे बड़ा स्रोत हैं।

और भी चौंकाने वाली बात यह है कि दुनिया में इतना खाना पैदा होता है कि हर इंसान का पेट भर सके। फिर भी विडंबना यह है कि हर साल कुल उत्पादित भोजन का एक-तिहाई हिस्सा – लगभग 1.3 बिलियन टन – या तो नष्ट हो जाता है या बर्बाद हो जाता है। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को हर साल करीब **940 बिलियन डॉलर** का नुकसान होता है। इस अंक की कवर स्टोरी जहाँ दुनिया को हराभरा बनाने और हमारी पृथ्वी को पर्यावरणीय विनाश से बचाने की बात करती है, वहीं इस तथ्य पर भी ध्यान देना ज़रूरी है: दुनिया भर में जितनी ग्रीनहाउस गैसें निकलती हैं, उनमें से करीब 10 प्रतिशत सिर्फ उस खाने से उत्सर्जित होती है जिसे उगाया तो गया मगर खाया नहीं गया।

ये आंकड़े OzHarvest नामक एक प्रभावशाली ऑस्ट्रेलियाई चैरिटी द्वारा दिए गए हैं, जो ऐसे भोजन को बचाने का कार्य करती है जो सुपरमार्केट्स, ग्रोसरी स्टोर्स, लोकल बेकरीज़ आदि में जल्द ही खराब होने वाला हो सकता है। यह संगठन इन खाद्य वस्तुओं को – जैसे अन्न, फल, सब्ज़ियां या पका हुआ भोजन – समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाता है। 2024 में अपने 2,400 दाताओं के नेटवर्क के ज़रिए OzHarvest ने 14,000 टन से अधिक भोजन बचाया। ऑस्ट्रेलिया के कई रोटेरियन इस संगठन के कार्यक्रमों में साझेदारी करते हैं और सक्रिय रूप से योगदान देते हैं। इस बात की गंभीरता इससे समझी जा सकती है कि ऑस्ट्रेलिया जैसे विकसित देश में भी भूखमरी एक सच्चाई है, क्योंकि वहाँ OzHarvest पहले से ही 1,500 समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से जरूरतमंदों को भोजन पहुँचा रही है फिर भी वहाँ 1,000 संस्थाएं प्रतीक्षा सूची में हैं। इस अंक के पृष्ठ 24 पर इस विषय पर और अधिक पढ़ें।

जहाँ एक ओर कुछ संस्थाएं मानव जाति की भूख मिटाने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं – जिसकी ज़रूरत आज भी विकसित देशों में इतनी अधिक महसूस की जा रही है – वहीं दूसरी ओर योद्धाओं का एक वर्ग है जो पूरी निष्ठा, जुनून और समय की मांग के साथ धरती मां की भूख और प्यास मिटाने के लिए संघर्ष कर रहा है। यह धरती आज बिलख-बिलख कर इंसानों से करुण पुकार कर रही है कि वे अब उसका दोहन करना बंद करें। इस संघर्ष में – चाहे उनका योगदान कितना भी छोटा क्यों न हो – वे एक बड़ा परिवर्तन ला रहे हैं जैसे रो ई मंडल 3192 के नवनिर्वाचित डीजी रविशंकर डाकोजु और उनके साथी पर्यावरण योद्धा नील जोसेफ (रोटरी क्लब बैंगलोर ऑरचर्ड्स) और गजानन कंदलगांवकर (रोटरी क्लब कुडाल)। कर्नाटक और उनके गृह मंडल रो ई मंडल 3192 से शुरू हुई इस हरियाली मुहिम के अंतर्गत 1 करोड़ पेड़ लगाने का लक्ष्य है। इस अभियान का नाम है *डाकोजु धन्यवाद* जो अब महाराष्ट्र और गोवा तक फैल चुका है। और अब इस विशाल हरित पहल में रयान इंटरनेशनल स्कूल नेटवर्क भी जुड़ चुका है जिसके देशभर में 165 स्कूल हैं। इस प्रेरणादायक प्रयास के बारे में पृष्ठ 12 पर और अधिक पढ़ें।

जैसा कि कहा जाता है हर एक बूँद मायने रखती है। जयश्री की कहानी (पृष्ठ 22) यह दर्शाती है कि पश्चिम बंगाल के मालदा से 12 किलोमीटर दूर स्थित भावुक ग्राम पंचायत के 12 आदिवासी गांवों में एक शांत हरित क्रांति चल रही है। किसी भी घर में कदम रखिए तो आपको शायद एक नन्हा कटहल का पेड़ दिखेगा जो हवा में धीरे-धीरे लहराता हुआ नजर आएगा। रोटरी क्लब मालदा ने यह परियोजना शुरू की है जिसके अंतर्गत कटहल के पेड़ लगाए जा रहे हैं। आने वाले कुछ वर्षों में जब ये पेड़ फल देना शुरू करेंगे तो इससे लाभार्थियों को आर्थिक आय भी प्राप्त होगी।

दुनिया की बुराइयों में थोड़ा भी बदलाव लाने के लिए बस एक सहानुभूति से भरा दिल... और मदद के लिए बढ़े हुए दो हाथ ही काफी हैं...

रशीदा भगत

ADVT.

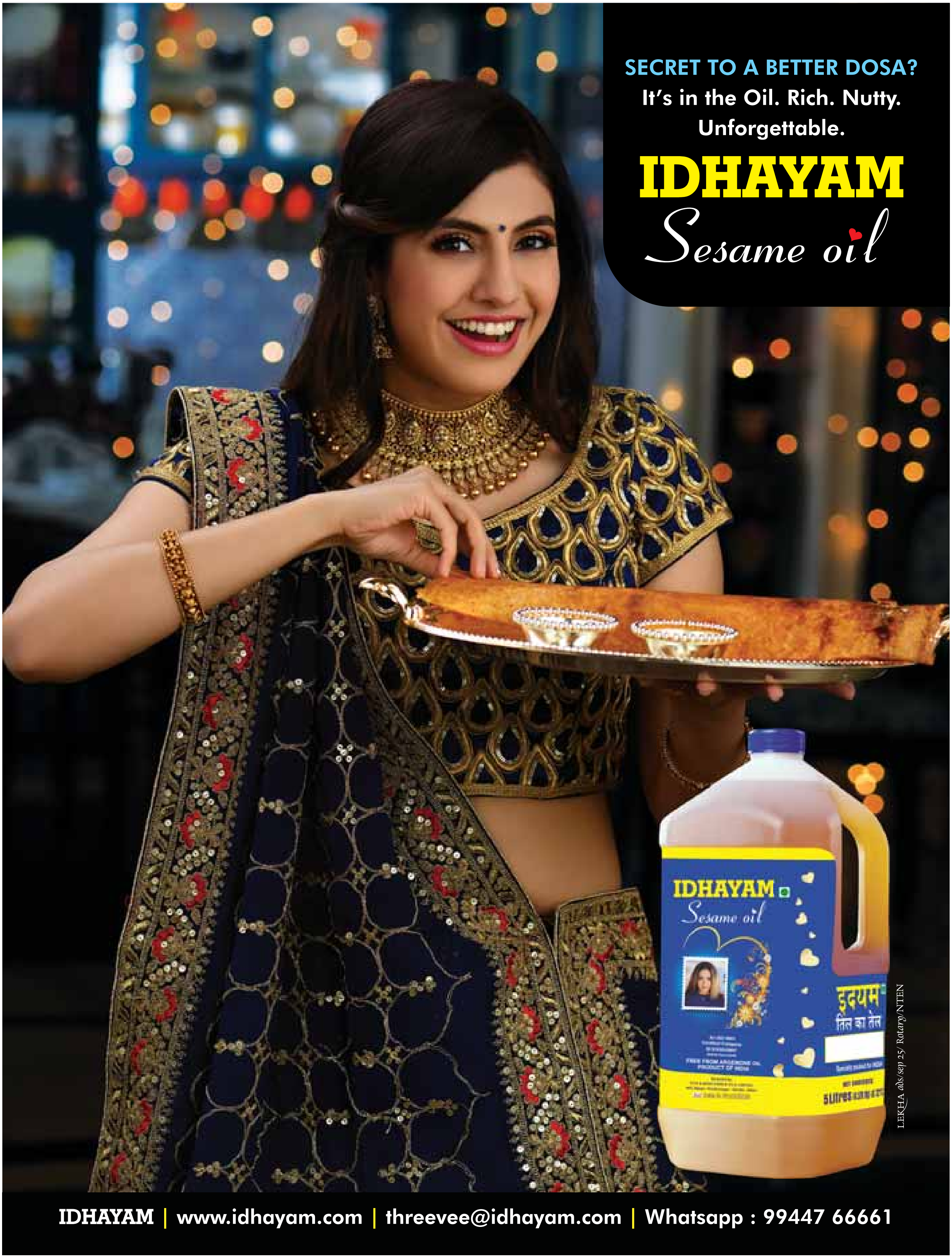
SECRET TO A BETTER DOSA?
It's in the Oil. Rich. Nutty.
Unforgettable.
IDHAYAM
Sesame oil
IDHAYAM
Sesame oil
इदयम
तिल का तेल
LEKHA ads/sep 25/ Rotary/NTEN
IDHAYAM | www.idhayam.com | threevee@idhayam.com | Whatsapp : 99447 66661

निदेशक का संदेश

1:2:3 को कहें हाँ

प्रिय मित्रों,

रोटरी हृदय से सदस्यों का एक परिवार है। और यहीं से सब कुछ शुरू होता है। जब हमारी सदस्यता मज़बूत होती है, तो हमारी परियोजनाएं, हमारे योगदान और समुदायों के प्रति हमारी सेवा और भी सशक्त एवं प्रभावशाली बन जाती है। मैं अक्सर रोटरी को एक शानदार रथ के रूप में देखता हूँ जिसके पहिए हमारे सदस्य हैं। मजबूत पहिए रथ को सुचारू रूप से चलाते हैं; लेकिन अगर पहिए कमजोर हो तो यात्रा धीमी हो जाती है। इसलिए सदस्यता हमेशा हमारी पहली प्राथमिकता रहनी चाहिए।

इस रोटरी वर्ष के तीसरे महीने में आइए हम एक सरल लेकिन शक्तिशाली विचार को अपनाएं: 1:2:3 को हाँ कहें। प्रत्येक 1 रोटेरियन के लिए चलिए हम अपने क्लबों से 2 रोटरेक्टरों और 3 इंटरेक्टरों को जोड़ें। जब हम आज के युवाओं को प्रेरित करते हैं, तो वे कल को रोटरी में शामिल होने के बारे में सोचेंगे। इस तरह हम स्थिरता सुनिश्चित करते हैं, निरंतरता बनाए रखते हैं और अपने आंदोलन को ऊर्जा एवं जीवन से भरपूर रखते हैं।

चलिए थोड़ा पीछे हटकर एक बड़ी तस्वीर को देखें। भारत आज **दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा रोटरी देश है।** यह गर्व करने की बात है! लेकिन हम यहीं नहीं रुक सकते, हमें आगे बढ़ना होगा। यदि हमारे 4,800+ क्लबों में से प्रत्येक हर वैकल्पिक महीने में एक नया सदस्य शामिल करें तो एक वर्ष में उसमें छह सदस्य शामिल होंगे। इसका गुणा करें और हम अकेले **इस वर्ष में ही 28,800 नए रोटेरियनों का स्वागत करेंगे।** इस तरह हमारे चारों ज़ोन मिलकर एक ऐतिहासिक लक्ष्य को हासिल करेंगे - 2025-26 तक 2 लाख सदस्य और 2026-27 तक 2.25 लाख सदस्य। यह रोटरी जगत के लिए भारत के रोटेरियनों की मजबूती और एकता का एक जबरदस्त संदेश होगा!

यह **RAG विश्लेषण** हमें बताएगा कि हम आज कहाँ खड़े हैं और नेताओं की भविष्य के लिए योजना बनाने में मदद करेंगे।

- रेड जोन: 25 से कम सदस्यों वाले क्लब
- एम्बर ज़ोन: 25-50 सदस्यों वाले क्लब
- ग्रीन ज़ोन: 50+ सदस्यों वाले क्लब
- सुपर ग्रीन: 75+ सदस्यों वाले क्लब

मैं प्रत्येक क्लब अध्यक्ष, मंडल गवर्नर, क्षेत्रीय और जोनल नेताओं से आग्रह करता हूँ कि वे यह संकल्प लें कि नेतृत्व की बागडोर अपने उत्तराधिकारी को सौंपने से पहले कम से कम एक ज़ोन की वृद्धि जरूर सुनिश्चित करें। जब आप सकारात्मक वृद्धि और बेहतर संख्या दिखाते हैं तो यह एक स्पष्ट, मापनीय और स्थायी विरासत बन जाती है - एक ऐसी विरासत जिस पर आप गर्व कर सकते है।

नए सदस्यों को जोड़ने पर ध्यान देते समय, हमें मौजूदा सदस्यों को बनाए रखने के लिए भी उतनी ही मेहनत करनी होगी। प्रत्येक क्लब और प्रत्येक मंडल यह ज़िम्मेदारी निभाए कि रोटरी प्रत्येक सदस्य के लिए अर्थपूर्ण और प्रेरणादायक अनुभव बने। जब लोग जुड़ाव महसूस करते हैं, जब वे अपने योगदान से वास्तविक परिवर्तन होता देखते है, तो वे रोटरी से जुड़े रहते हैं। जब हमारे युवा रोटरेक्ट और इंटरेक्ट के माध्यम से सेवा का आनंद अनुभव करते हैं, तो वे रोटरी को अपने भविष्य के रूप में देखते हैं। और जब हमारे क्लब मजबूत और जीवंत रहते हैं तो समाज पर हमारा प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

1:2:3 को हाँ कहें। विकास को हाँ कहें। रोटरी को हाँ कहें।

एम मुरुगानंदम
रो ई निदेशक, 2025-27

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

मानव अधिकार के रूप में साक्षरता

शिक्षा गरीबी के चक्र को तोड़ती है, अवसरों के द्वार खोलती है और व्यक्तियों को अपने समुदायों को बदलने के लिए सशक्त बनाती है। लेकिन शिक्षा शून्य में नहीं होती। हमें शांति, स्वास्थ्य, स्वच्छ जल, आर्थिक अवसर, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य और पर्यावरण पर भी ध्यान देना होगा। यही कारण है कि रोटरी इन सभी क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित रहता है। स्थायी परिवर्तन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। जब हम रोटरी फाउंडेशन के माध्यम से इन क्षेत्रों में सहयोग करते हैं, तो हम समुदायों को स्थायी और सम्मानजनक तरीके से आगे बढ़ाते हैं।

आज, मैंने रोटरी क्लब रेड डियर, अल्बर्टा की लिन पैराडिस से साक्षरता के प्रति उनके जुनून को साझा करने का अनुरोध किया है:

मेरा मानना है कि साक्षरता एक मानवाधिकार है। जब मैंने एक दशक से भी अधिक पहले, बेलीज़ के रोटरी क्लब सैन इग्नासियो के साथ जुड़ा, तो हमने पठन-पाठन सिखाने की गुणवत्ता सुधारने का लक्ष्य रखा था, लेकिन हमें अंदाज़ा नहीं था कि यह सफ़र हमें कितनी दूर तक ले जाएगा।

लिटरेसी अलाइव! को 2011 से रोटरी फ़ाउंडेशन के आठ वैश्विक अनुदानों का समर्थन मिला है। ध्वनि विज्ञान और विज्ञान पर आधारित एक सरल दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, हमने शिक्षकों के शिक्षण के तरीके को अद्यतन किया और इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि छात्र वास्तव में कैसे सीखते हैं। छह महीनों में हमने पठन कौशल में सुधार के आँकड़े एकत्र किए।

यह प्रदर्शित करने के बाद कि शिक्षकों ने दैनिक शिक्षण में नई प्रथाओं को शामिल किया है, परियोजना काफ़ी तेज़ी से आगे बढ़ी। बेलीज़ शिक्षा मंत्रालय ने इस पर ध्यान दिया। आज, 1,300 से अधिक शिक्षक प्रशिक्षित हो चुके है और 20,000 से अधिक छात्र लाभान्वित हुए हैं। हमने 90 प्रतिशत से अधिक सफलता दर हासिल की है, और कई छात्रों ने सिर्फ़ पाँच महीनों में ही एक साल से भी अधिक का सुधार किया है।

यह कार्यक्रम अब बेलीज़ के प्राथमिक विद्यालयों में अनिवार्य हो गया है। मुझे सबसे अधिक खुशी इस बात से होती है कि शिक्षक इस बात को लेकर कितने आश्वस्त हैं कि वे छात्रों का जीवन बदल सकते हैं। हमारी सबसे बड़ी सफलता वह है, जब हमारा काम अपने आप चलने लगे। जब स्थानीय शिक्षक आगे आते हैं, तो हमें पता चलता है कि वास्तव में स्थायी बदलाव हो रहा है।

लिन की कहानी फ़ाउंडेशन के अनुदानों की शक्ति का उदाहरण है। छह रोटरी क्लबों और तीन देशों में फैली साझेदारियों के माध्यम से, *लिटरेसी अलाइव!* हमें याद दिलाता है कि व्यवस्थागत बदलाव लाने में रोटरी कितनी सक्षम है।

जब हमारे सदस्यों का जुनून फाउंडेशन के सहयोग से जुड़ता है, तो हम न केवल व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाते हैं, बल्कि पूरे समुदाय को बदल देते हैं। फाउंडेशन के साथ मिलकर, आप इस महीने ही नहीं, बल्कि हर महीने अपने जुनून को सार्थक दिशा दे सकते हैं।

होल्गर नेक

ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 लियोन जे
RID 2982 शिवसुंदरम पी
RID 3000 कार्तिक जे
RID 3011 रविंदर गुगनानी
RID 3012 अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020 कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030 ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040 सुशील मल्होत्रा
RID 3053 निशा शेखावत
RID 3055 निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056 प्रज्ञा मेहता
RID 3060 अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070 रोहित ओबेरॉय
RID 3080 रवि प्रकाश
RID 3090 भूपेश मेहता
RID 3100 नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110 राजेन विद्यार्थी
RID 3120 अशुतोष अग्रवाल
RID 3131 संतोष मधुकर मराठे
RID 3132 सुधीर वी लातुरे
RID 3141 मनीष मोटवानी
RID 3142 हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150 राम प्रसाद एस वी
RID 3160 रविंद्र एम के
RID 3170 अरुण डैनियल भांडारे
RID 3181 रामकृष्ण पी कन्नन
RID 3182 पलक्शा के
RID 3191 श्रीधर बी आर
RID 3192 एलिज़ाबेथ चेरियन परमेश
RID 3203 धनासेकर बी
RID 3204 बिजोश मैनुअल
RID 3205 रमेश जी एन
RID 3206 चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211 टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212 जे धिनेश बाबू
RID 3231 वी सुरेश
RID 3233 डी देवेंद्रन
RID 3234 विनोद कुमार सराओगी
RID 3240 कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250 नम्रता
RID 3261 अमित जायसवाल
RID 3262 मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291 रामेन्दु होमचौधुरी

प्रकाशक एवं मुद्रक **पी टी प्रभाकर**, 15 शिवास्वामी स्ट्रीट, मायलापोर, चेन्नई - 600004, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600014 से मुद्रित एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट, दुगड़ टावरस, 3rd फ्लोर, 34 मार्शलस रोड, एगमोर, चेन्नई - 600008 से प्रकाशित।
संपादक: **रशीदा भगत**

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम RID 3000
रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट

के पी नागेश RID 3191
रो ई निदेशक

डॉ भरत पांड्या RID 3141
टीआरएफ ट्रस्टी

राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
ए एस वेंकटेश RID 3234
राजु सुब्रमण्यन RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी RID 3291
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय RID 3070
अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

ज्ञानेश्वर शेवाळे RID 3030
वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल

एम के रविंद्र RID 3160
सचिव, गवर्नर्स काउंसिल

चेल्ला के राघवेन्द्रन RID 3206
कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

टीआरएफ ट्रस्टी का संदेश

उदारता को स्थायी परिवर्तन में बदलना

रोटरी संस्थान हर दिन जीवन बदलता है। दुनिया को पोलियो उन्मूलन के कगार पर लाने से लेकर, समुदायों को स्वच्छ पानी देने, बच्चों को शिक्षित करने और महिलाओं को सशक्त बनाने तक, इसकी पहुंच वैश्विक है और इसके परिणाम स्थायी हैं। यह सकारात्मक शांति प्रवर्तकों को प्रशिक्षित करता है, बीमारी से लड़ता है, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ाता है और आपदाओं से प्रभावित ज़िंदगियों का पुनर्निर्माण करता है। संस्थान हमारी उदारता को स्थायी परिवर्तन में बदलता है और लाखों लोगों के लिए आशा, स्वास्थ्य और अवसर पैदा करता है।

टीआरएफ ग्लोबल पोलियो उन्मूलन पहल में एक प्रमुख भागीदार है। 1985 के बाद से, रोटरी ने पोलियो के मामलों में 99.9 प्रतिशत की कमी की है, 3 बिलियन से अधिक बच्चों का टीकाकरण किया है और लाखों लोगों को पक्षाघात से बचाया है। टीआरएफ शांति मित्रों को प्रशिक्षित करके **शांति और संघर्ष समाधान** को आगे बढ़ाने में मदद करता है, जो संघर्षों में मध्यस्थता करते हैं, सामुदायिक विश्वास का निर्माण करते हैं और वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों को बढ़ावा देते हैं।

टीआरएफ की उच्च कार्य कुशलता (90 प्रतिशत से अधिक धन सीधे कार्यक्रमों में इस्तेमाल होता है) दानकर्ताओं के योगदान के अधिकतम प्रभाव को सुनिश्चित करता है एवं विश्वास को प्रेरित करता है। इसका वैश्विक नेटवर्क इसकी पहुंच और प्रभावशीलता को बढ़ाता है। संक्षेप में, संस्थान ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से एक लहरनुमा प्रभाव पैदा करता है, जबकि स्थानीय समुदायों को उनकी प्रगति पर नज़र रखने में सशक्त बनाता है।

यह टीआरएफ के प्रति हमारे विश्वास और प्रतिबद्धता का प्रतिबिंब है कि 2024-25 रोटरी वर्ष में भारतीय मंडलों ने टीआरएफ में 38.2 मिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया। डीजी चेतन देसाई के नेतृत्व में मंडल 3141 दुनिया में नंबर 1 था और तीन भारतीय मंडल दुनिया भर में शीर्ष 10 में थे। तेरह मंडलों ने टीआरएफ को कुल योगदान में 1 मिलियन डॉलर का आंकड़ा पार कर लिया। यह वास्तव में उल्लेखनीय है। मैं इस शानदार उपलब्धि के लिए भारत के रोटेरियनों और रोटरी परिवारों के समर्पण एवं उदारता को सलाम करता हूं। 2024-25 के मंडल गवर्नरों और उनकी टीआरएफ टीमों को बधाई, और इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए जोनल नेतृत्व टीमों - आरआरएफसी, एआरआरएफसी, ई/एमजीए और ईपीएनसी को बधाई जिसने भारत को दुनिया में नंबर 2 योगदानकर्ता बनने में सक्षम बनाया। आप सभी का धन्यवाद।

लेकिन जब हम शीर्ष पर होते हैं तो हमें वहां बने रहने के लिये कड़ी मेहनत करनी होती है। मैं 2025-26 टीआरएफ टीमों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं क्योंकि हमारा लक्ष्य बड़ी, बेहतर और साहसिक परियोजनाओं और टीआरएफ को समर्थन देना है। आइए हम पथ प्रदर्शन करते हुए *भलाई के लिए एकजुट* हो।

भरत पांड्या
टीआरएफ ट्रस्टी

Rotary PEOPLE OF ACTION

हरी-भरी धरती के हमसफ़र

रशीदा भगत

रोटरी जगत के कई लोगों से भिन्न रो ई मंडल 3192 के निर्वाचित डीजी रवीशंकर डाकोजु को जो बात विशेष बनाती है वो है उनकी ईमानदारी और स्पष्ट बात करने की शैली। मेरे ईमेल इनबॉक्स में जब *डाकोजु धन्यवाद, रोटरी कोटी नाटी, नरहरी धन्यवाद* जैसी कई परियोजनाओं की सूचनाएँ आने लगीं - जो विभिन्न राज्यों और स्थानों पर पेड़ लगाने से जुड़ी थीं - तो इन सबमें एक साझा तत्व दिखाई दिया: हर एक में डाकोजु की भागीदारी थी। इन परियोजनाओं को लेकर जो उलझन और जिज्ञासा मेरे मन में थी, उसे दूर करने के लिए मैंने स्वयं डाकोजु से संपर्क किया।

दूसरी तरफ से मुझे इस बात पर तीखा प्रहार सुनने को मिलता है - और यह अपेक्षित भी था - कि हमारी पीढ़ी ने अपने लालच और बिना सोचे-समझे की गई भोग-विलासिता के कारण पर्यावरण का विनाश करते हुए इस धरती को बर्बाद कर दिया है। 2018 में रवीशंकर डाकोजू द्वारा रोटरी फाउंडेशन को दान किए गए ₹100 करोड़ के बड़े हिस्से का उपयोग, धरती को हरा-भरा बनाने के लिए किया जा रहा है।

कोटि नाटी शीर्षक का अर्थ है एक करोड़ पौधे लगाना; तो मैं डाकोजु से पूछता हूँ कि इस प्रयास से लोगों के जीवन में किस तरह का परिवर्तन आया है? वह स्पष्ट रूप से कहते हैं, ''ऐसी किसी भी परियोजना से आप दो या तीन साल में कोई जादू या जीवन-परिवर्तन की उम्मीद नहीं कर सकते। हमने कई प्रकार के पेड़ लगाए हैं - फलदार पेड़ और एक खास किस्म

रो ई मंडल 3192 के डीजीई रविशंकर डाकोजु रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के सदस्य और रोटरी एनवायरनमेंट फ़ाउंडेशन के सह-न्यासी नील जोसेफ़ के साथ।

की बांस की प्रजाति भी, जिसका उपयोग अगरबत्तियाँ बनाने में किया जाता है और जिसे फिलहाल चीन से आयात किया जा रहा है। इसकी एक टन की कीमत लगभग ₹8 लाख है। हम चाहते हैं कि बेंगलुरु से लगभग 195 किलोमीटर दूर चित्रदुर्ग जिले के चल्लाकेरे में चल रही 1,501 एकड़ की वनीकरण परियोजना के माध्यम से आदिवासी महिलाओं को लाभ मिले। स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जाएगा और मधुमक्खी पालन जैसी आजीविका गतिविधियाँ शुरू की जाएंगी। लेकिन यह सब तभी संभव है जब फलदार पेड़ों सहित अन्य पेड़ विकसित होंगे... जानवर तो पहले ही वहाँ आ चुके है... लगभग 100 हिरण, मोर, खरगोश, जंगली सूअर, आदि लेकिन मानव जीवन पर इसका जो असर होगा वो दिखने में कुछ साल और लगेंगे।''

बेंगलुरु के पास स्थित कोलार गोल्ड फील्ड्स के सायनाइड डंप्स में, जहाँ बीते कुछ वर्षों में रवीशंकर डाकोजु और पर्यावरण संरक्षण के एक अन्य समर्पित समर्थक, नील जोसेफ, ने मिलकर बड़े स्तर पर हरियालीकरण किया है, वहाँ अब स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रत्यक्ष लाभ देखने को मिल रहा हैं। पहले, पूरे कस्बे में सायनाइड की धूल उड़ने से गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो रही थी - जैसे कि किडनी फेल होना, फेफड़ों और अन्य प्रकार के कैंसर, तीव्र अस्थमा, आदि। लेकिन एक थकाऊ और जटिल प्रक्रिया के ज़रिए रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के रोटेरियनों - जिनका नेतृत्व डाकोजु (जो अब रोटरी क्लब बैंगलोर में स्थानांतरित हो चुके हैं) और जोसेफ ने किया - ने यह वृहद कार्य किया: उन्होंने 20 एकड़ क्षेत्र में पेड़, झाड़ियाँ और घास लगाईं ताकि धरती की नमी बनी रहे और सूखे डंप्स से उड़ने वाली जहरीली धूल कस्बे तक न पहुंचे। ''अब यह दस्तावेज़ों में दर्ज है कि फेफड़ों के कैंसर के मामलों में कमी आई है और लोगों का सामान्य स्वास्थ्य बेहतर हुआ है, KGF के मूल निवासी,'' नील जोसेफ कहते हैं।

वह आगे कहते हैं कि *कोटी नाटी* शीर्षक वाली इस 2018 की परियोजना के अंतर्गत कोलार ज़िले में एक करोड़ पौधे लगाए जाएंगे। अब तक ₹48.2 लाख पौधे लगाए जा चुके हैं, साथ ही तीन लाख सीड बॉल्स भी डाली गई हैं जिनकी सफलता दर लगभग 25 प्रतिशत है। केवल कोलार गोल्ड फील्ड्स में ही 52,000 पेड़ लगाए जा चुके हैं।

आइए अब चल्लकेरे पर लौटते हैं, जहाँ 1,501 एकड़ की वनीकरण परियोजना की वजह से अब कई

डाकोजु धन्यवाद कार्यक्रम के अंतर्गत रोटरी क्लबों द्वारा पौधों का वितरण किया गया।

बदलाव देखने को मिल रहे हैं, इस परियोजना को अब भारत में रोटरी के सबसे बड़े पारिस्थितिकीय प्रयासों में से एक माना जा रहा है। इस की लागत ₹8.5 करोड़ से अधिक होगी, जिसमें से ₹6.5 करोड़ पाओला रविशंकर डाकोजु फाउंडेशन के अनुदान से, टीआरएफ के माध्यम से आएंगे। यहाँ अब तक **720 एकड़** भूमि पर लगभग **100,000 पेड़** लगाए जा चुके हैं जो कुल परियोजना क्षेत्र का लगभग आधा हिस्सा है। जहाँ की धरती कभी पूरी तरह बंजर और वर्षा की कमी से जूझ रही थी, वहाँ अब वृक्षारोपण की इतनी बड़ी पहल के कारण 1501 एकड़ के उस भूभाग में स्थित **तीन झीलें**, जो पिछले 40 वर्षों से पूरी तरह सूख चुकी थीं, अब लबालब भर चुकी हैं। हिरण, जंगली सूअर, मोर और खरगोश जैसे वन्य जीव भी अब यहाँ की हरियाली की वजह से इस क्षेत्र में लौट आए हैं। ''मेरे हिसाब से तो यह किसी जादू से कम नहीं है... आपको क्या लगता हैं,'' डाकोजु मुस्कराते हुए सहजता से पूछते है।

इस परियोजना को समझने के लिए डाकोजु हमें उस दौर में ले जाते हैं जब तत्कालीन मैसूर महाराजा ने चल्लकेरे में लगभग 18,000 एकड़ ज़मीन वहाँ के स्थानीय आदिवासियों को दी थी ताकि वे एक खास नस्ल की स्थानीय गायों की रक्षा कर उनका पालन-पोषण कर सकें - उन गायों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध में महाराजा की सहायता की थीं। ''लेकिन आदिवासी तो आदिवासी ही थे उन्होंने धीरे-धीरे सारे पेड़ काट लिए और लकड़ी को जलाने के लिए उपयोग में ले लिया, जिससे यह भूमि पूरी तरह बंजर हो गई। बाद में, सरकार ने उस ज़मीन के एक बड़े हिस्से को ISRO, भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) आदि को दे दिया। जब केवल 1,501 एकड़ भूमि ही बची तब कर्नाटक के एक तेज़तर्रार न्यायाधीश, जस्टिस सलधाना ने सरकार से पूछा: आपको महाराजा की ज़मीन को इस तरह वितरित करने का अधिकार किसने दिया? उन्होंने सरकार से कहा: इस ज़मीन का वितरण तुरंत रोको; यदि यह नहीं रुका तो मैं ऐसा निर्णय दूँगा जिससे आपने जो ज़मीन बाँटी है, वह वापस ले ली जाएगी।'' डाकोजु मुस्कराते हुए कहते हैं: ''वह पर्यावरण के सच्चे रक्षक बनकर सामने आए।''

इस ज़मीन को बाद में कर्नाटक के बागवानी विभाग को सौंपा गया, जिसने इसे हरा-भरा बनाने की जिम्मेदारी स्थानीय 'धीना भगत सेवा ट्रस्ट' को सौंपी। यह ट्रस्ट धीना भगत स्वामीजी द्वारा संचालित है और इसका उद्देश्य इस क्षेत्र में रहने वाले आदिवासियों के लिए स्थिरता सुनिश्चित करते हुए आजीविका पैदा करना है। डाकोजु बताते हैं: स्वामीजी ने हमारी ङ्गपालार नदी पुनर्जीवन परियोजनाफ़के बारे में सुना और हमसे संपर्क किया ताकि हम मिलकर इस बंजर भूमि को एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र में बदल सके।

बाद में सेवा ट्रस्ट और रोटरी एनवायरनमेंट फाउंडेशन के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

चललकेरे में चल रहा 1,501 एकड़ का वनीकरण प्रोजेक्ट की लागत ₹8.5 करोड़ से अधिक होगी, जिसमें से ₹6.5 करोड़ पाओला रविशंकर डाकोजु फाउंडेशन के अनुदान से, टीआरएफ के माध्यम से आएंगे।

बेलगाम के रोटेरियनों द्वारा दिए गए पौधों के साथ स्कूली बच्चे।

किए गए। सेवा ट्रस्ट - जो एक विद्याश्रम चलाता है, योग सिखाता है और स्थानीय आदिवासियों के लिए औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों से आयुर्वेदिक दवाएँ बनाता है - ने इस परियोजना में सक्रिय भूमिका निभाई। रोटरी एनवायरनमेंट फाउंडेशन (REF) की स्थापना 2020 में रवीशंकर डाकोजु, नील जोसेफ (जो इसके एक न्यासी और सचिव हैं) और रो ई निदेशक के पी नागेश द्वारा की गई थी। इस हरियाली परियोजना में रोटरी क्लब बैंगलोर ऑरचर्ड्स और हैप्पीनेस इन ट्रांजिट - जो नील जोसेफ का अपना संगठन है और स्कूली बच्चों के परिवहन से जुड़ा हुआ है, ने सहयोग किया।

720 एकड़ भूमि पर लगाए गए एक लाख पेड़ों के बारे में नील जोसेफ बताते है कि ये सभी स्थानीय प्रजातियाँ हैं - जैसे कि अमरूद, आम, आँवला, सीताफल और पारंपरिक औषधीय पौधे। इस परियोजना की लागत का एक हिस्सा ₹1.41 करोड़ के एक वैश्विक अनुदान से आया जिसे रोटरी क्लब बैंगलोर ऑरचर्ड्स ने डाकोजु के टीआरएफ योगदान के माध्यम से प्राप्त किया और दूसरा

डीजीई डाकोजु और जोसेफ़, आरसी कुडल के सदस्यों के साथ - (बाएँ से) रविंद्र परब, नीता गोवेकर, मकरंद नाइक, गजानन कंडलगांवकर, अध्यक्ष राजीव पवार, सुधेन्द्रु, एजी सचिन मदने और रूपेश तेली - गाँव में पौधे वितरित करने के बाद।

ग्रीनिंग ड्राइव में भाग लेते रयान इंटरनेशनल स्कूल्स के छात्र।

एक प्रकृति पुरुष

***बाएँ से:** डीजीई डाकोजु; मंत्रालयम के श्री सुबुधेन्द्र तीर्थ स्वामीजी; नील जोसेफ़; डाकोजु के व्यवसायिक साझेदार नरहरी; और चालकेरे, कर्नाटक के धीन भगत स्वामीजी।*

जब मैंने स्वामी धीना भगत से पूछा कि उन्होंने चल्लकेरे भूमि के लिए डीजीई रविशंकर डाकोजु के साथ साझेदारी क्यों की तो वह मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''मैं वास्तव में उन्हें प्रकृति पुरुष कहता हूँ; हर कोई उस तरह की पहल नहीं कर सकता जैसी वो कर रहे है... ऐसे व्यक्ति बहुत लंबे समय में जन्म लेते हैं... किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए।''

स्वामीजी लंबे समय से स्थानीय आदिवासियों के साथ काम कर रहे हैं - योग सिखा रहे हैं, आयुर्वेदिक दवाएं बनाकर वितरित कर रहे हैं - कहते हैं, ''यह ज़मीन बंजर थी और हरियाली बिल्कुल न होने की वजह से यहाँ बारिश भी नहीं होती थी, जिससे यहाँ रहने वाले परिवार अपने बच्चों सहित नज़दीकी शहरों और कस्बों में मज़दूरी करने के लिए पलायन कर रहे थे। लेकिन पिछले दो वर्षों में रोटेरियनों द्वारा लगाए गए पेड़ों की वजह से हमें अच्छी बारिश देखने को मिली; यहाँ तक कि पिछली रात भी अच्छी बारिश हुई और वो तीनों झीलें जो पिछले 40 वर्षों से सूखी पड़ी थीं, वे अब पानी से लबालब भर चुकी हैं।''

''इतनी ज़्यादा कि स्वामीजी की जीप उन झीलों में से एक के पास नमी से भरी ज़मीन में फंस गई और उसे काफी मदद से बाहर निकाला गया,'' डाकोजु मुस्कुराते हुए कहते हैं। वह आगे कहते हैं कि इस परियोजना के अंतर्गत इस पूरे क्षेत्र में लगभग 30 किलोमीटर लंबी जैविक बाड़ तैयार की जा रही है, जिसके लिए 5-6 फीट गहरी खाइयाँ खोदी जा रही हैं ताकि जंगली जानवर अंदर न आ सकें और इन खाइयों में काँटेदार पौधे (कैक्टस) लगाए जा रहे हैं।

हिस्सा ₹1.3 करोड़ के रूप में रोटरी एनवायरनमेंट फाउंडेशन (REF) से आया जो डाकोजु और जोसेफ की संस्था का संयुक्त योगदान है। डाकोजु कहते हैं, ''जोसेफ ने अपनी संस्था के मुनाफे को पर्यावरणीय कार्यों में लगाना शुरू किया।''

परियोजना के *धन्यावाद* भाग के बारे में बताते हुए, डाकोजु, जो हमेशा उन क्षेत्रों को हरा-भरा करने के बारे में भावुक रहे हैं, जिनमें हम निवास करते हैं और स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र बनाते हैं, कहते हैं, ''2024 में, मेरे दिमाग में एक सरल लेकिन ईमानदार विचार अंकुरित होने लगा... पेड़ लगाना केवल एक पर्यावरणीय कार्य नहीं है, बल्कि धरती माता को उसके अनगिनत उपहारों के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करना है। साथ ही उस समुदाय के लिए भी

जो हम में से प्रत्येक का पालन-पोषण उस क्षण से करता है जब हम पैदा होते हैं।

यह विचार आगे चलकर *डाकोजु धन्यवाद* के रूप में विकसित हुआ। इस हरित मिशन में उनके साथ कुछ बेहद जुनूनी रोटेरियन कम कर रहे हैं। यह यात्रा शुरू हुई केजीएफ में सायनाइड के कचरे के ढेरों को पुनर्जीवित करने से - जहाँ ज़हरीली, खनन-ग्रस्त भूमि को लगातार वृक्षारोपण के ज़रिए फिर से जीवनदान मिला। यह प्रयास एक सक्रिय साझेदारी में बदल गया जिसने एक महत्वाकांक्षी पहल को जन्म दिया - *रोटरी कोटी नाटी,* जिसके तहत कोलार ज़िले में एक करोड़ पौधे लगाए जा रहे हैं। इस परियोजना का उद्देश्य है: भूमि के मरुस्थलीकरण से लड़ना और 8,000 ग्रामीणों की आजीविका को पुनःस्थापित करना।

''यह एक ऐसा आंदोलन है जो लगातार बढ़ता रहा; पिछले साल यह वनीकरण अभियान गोवा और महाराष्ट्र तक फैल गया और इस यात्रा में डाकोजु के व्यावसायिक साझेदार नरहरी भी जुड़ गए तो इस अभियान का एक हिस्सा *नरहरी धन्यवाद* बन गया जो कि मुख्य रूप से कर्नाटक के आध्यात्मिक केंद्र *मंत्रालय* में हरियाली फैलाने के मिशन पर केंद्रित है,'' जोसेफ आगे बताते हैं।

दुनिया को जितना हो सके हरित बनाने के अपने संकल्प में डाकोजु को गजानन कंडलगांवकर के रूप में एक और पर्यावरण प्रेमी साथी मिले, जो रोटरी क्लब कुडाल (महाराष्ट्र) के पूर्व अध्यक्ष हैं। उन्होंने अपने क्लब के सदस्य राजन बोभाटे के साथ मिलकर गोवा और महाराष्ट्र राज्यों में *डाकोजु धन्यवाद* आंदोलन को मजबूती प्रदान की। वर्ष

2024 में रोटरी क्लब कुडाल और रोटरी क्लब सावंतवाड़ी (दोनों रो ई मंडल 3170 से है) महाराष्ट्र ने दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में 11,000 स्थानीय प्रजातियों के पौधे लगाए।

इसके तुरंत बाद यह हरित आंदोलन गोवा पहुँचा, जहाँ रोटरी क्लब पणजिम और रोटरी क्लब मारगाओ के रोटेरियनों ने पीडीजी गौरिश धोंड के नेतृत्व में एक विशाल सामुदायिक मैराथन का आयोजन किया जिसे *रोटरी रेन रन* नाम दिया गया। इस कार्यक्रम में हज़ारों प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर, धावकों को 10,000 पौधे वितरित किए गए ताकि वे इस हरियाली मिशन को आगे बढ़ा सकें।

कंडलगांवकर कहते हैं, ''पिछले साल हमने जो 11,000 पौधे वितरित किए उनमें से अधिकांश फलदार पौधे थे और कुछ मसालेदार पौधे थे। ये पौधे हमने दूरदराज के स्कूलों में वितरित किए जहाँ के सभी छात्र किसान परिवारों से आते हैं। फलदार पेड़ की कीमत एक किसान से बेहतर और कोई नहीं समझ सकता। हमने जो पौधे वितरित किए

उनमें नारियल, आम, अमरूद, काजू और मसालों के पौधे शामिल थे। इस वर्ष हम सिंधुदुर्ग के छोटे और सीमांत किसानों को सीधे फलों और मसालों के लगभग 10,000 पौधे वितरित कर रहे हैं। हर किसान को 3 से 5 पौधे दिए जा रहे हैं।''

डेयरी और स्वयं सहायता समूहों की मदद से पौधे सीधे किसानों तक पहुंचाए जाते हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या महिला किसानों को भी फायदा हो रहा है, वह मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''दो दिन पहले, हमने 600 किसानों को पौधे वितरित किए और उनमें से 300 महिलाएं थीं। वे इन पौधों को अपने खेतों में लगाते हैं जो एक एकड़ या उससे कम क्षेत्रफल के होते हैं। इन पौधों की कीमत प्रति पौधा ₹100 से ₹200 के बीच होती है।''

इस आंदोलन से वह कैसे जुड़े, इस पर वे कहते हैं, ''करीब पांच साल पहले मेरी मुलाकात डीजीई डाकोजु से हुई थी और मैं पर्यावरण के प्रति उनके जुनून से प्रभावित हुआ। वे खुद भी यहाँ अक्सर हमारे कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए आते हैं और पौधारोपण में भाग लेते हैं। किसान बहुत खुश हैं क्योंकि 4-5 साल में इन्हीं पेड़ों से उन्हें आय मिलनी शुरू हो जाएगी।''

संत राऊल महाराज कॉलेज, कुडाल के छात्रों का एक समूह इस आंदोलन में शामिल हुआ। ''हम सिंधुदुर्ग की आर्द्रभूमियों में एक वृक्षारोपण अभियान की योजना बना रहे हैं। हम उन्हें पौधे देंगे जिन्हें वे आर्द्रभूमि क्षेत्रों में लगाएंगे, उन्हें टैग करेंगे और इन पौधों की वृद्धि पर नज़र रखेंगे। इस पहल का उद्देश्य युवाओं को पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना और उन्हें बड़े पैमाने पर हो रहे पर्यावरणीय क्षरण से पृथ्वी को बचाने की दिशा में शामिल करना है, कंडलगांवकर कहते हैं। युवाओं का यही समूह मंदिरों के आसपास पेड़ लगाने में भी सक्रिय है। इनमें से कुछ मंदिरों के पास स्थानीय लोगों ने पेड़ों को काटकर उनकी लकड़ी बेच दी ताकि मंदिर के लिए धन जुटाया जा सके। हम ऐसे स्थानों की पहचान करके वहाँ पेड़ लगाएंगे।''

रोटरी क्लब कुडाल, इसके अध्यक्ष राजीव पवार, सहायक राज्यपाल सचिन मदाने और अन्य लोगों के नेतृत्व में वृक्ष वितरण परियोजना में शामिल हैं।

ग्रामीण कर्नाटक में, जरूरतमंद महिलाओं को दो उत्साही पर्यावरण प्रेमी रोटेरियनों – रो ई मंडल 3192, जिला कृषि समिति के निदेशक अक्षय मल्लप्पा और रो ई मंडल 3191 के शिवकुमार के माध्यम से नारियल के 13,000 पौधे दिए गए। लगभग उसी समय आईपीडीजी शरद पई के नेतृत्व में बेलगाम (रो ई मंडल 3170) में छात्रों को लगभग 1,000 पौधे वितरित किए गए। महाराष्ट्र में कुल 1,50,000 में से 6,000 पौधे पहले ही वितरित किए जा चुके हैं।

रोटरी रेन रन मैराथन के प्रतिभागी, रोटरी क्लब पंजीम और मडगांव (रो ई मंडल 3170) द्वारा प्रदान किए गए पौधे लेते हुए।

गाँव की महिलाओं को पौधे वितरित करने के बाद इनर व्हील क्लब कुडल के सदस्य।

इस आंदोलन की एक बड़ी उपलब्धि रयान इंटरनेशनल स्कूलों के इससे जुड़ने के साथ हासिल हुई। ''165 स्कूलों के साथ 22 राज्यों में इनकी उपस्थिति है, जो मध्यम वर्ग के छात्रों को शिक्षा प्रदान करते हैं; इनकी वार्षिक फीस ₹ 1 लाख से कम है। यह स्कूलों की एक श्रृंखला है जो पर्यावरण पर विशेष ध्यान देती है और चूंकि मैं स्कूली बच्चों के परिवहन के व्यवसाय में हूँ इसलिए मेरा इनके साथ संपर्क हुआ।''

मैं वास्तव में उन्हें (डाकोजु)प्रकृति पुरुष (प्रकृति की संतान) कहता हूँ; हर कोई उनके जैसे उपक्रम नहीं कर सकता बहुत लंबे समय के बाद ही ऐसे व्यक्तियों का जन्म होता है एक विशेष उद्देश्य के लिए।

स्वामी धीना भगत

इसका परिणाम यह हुआ कि रयान इंटरनेशनल स्कूल के सीईओ रयान पिंटो और उपाध्यक्ष - बिज़नेस व ऑपरेशन्स जॉन एलेक्स तथा रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स, पुणे लक्ष्मी रोड और पुणे फार ईस्ट के बीच एक साझेदारी स्थापित हुई। रयान इंटरनेशनल स्कूलों में वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत बेंगलुरु और पुणे के सात स्कूलों से हुई है जहाँ अब तक 2,400 फलदार पेड़ लगाए जा चुके हैं। अगले चरण में हैदराबाद, मुंबई और बेंगलुरु के अधिक परिसरों में यह अभियान चलाया जाएगा।

रयान इंटरनेशनल के अध्यक्ष ए एफ पिंटो कहते हैं, ''मैंने हमेशा एक ऐसी दुनिया की कल्पना की है, जहाँ हर बच्चा पर्यावरण की देखभाल करना सीखे, यही वजह है कि हमने रेयान स्कूलों में मईच वन, प्लांट वनफ पहल शुरू की। 2026 में हमारी 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए रयान समूह और रोटरी मिलकर भारत के हमारे सभी स्कूलों में 10 लाख से अधिक पौधे लगाएंगे। हमारा लक्ष्य जिम्मेदार युवा वैश्विक नागरिक तैयार करना है।''

1 जुलाई, 2026 को डाकोजु के डीजी के रूप में पद ग्रहण और रयान स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह के के उपलक्ष्य में भारत के सभी 165 रयान स्कूलों में एक ही दिन में 50,000 पेड़ लगाने का गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया जाएगा। इस कार्यक्रम को लाइव स्ट्रीम किया जाएगा और इस महान प्रयास में हजारों छात्र एवं रोटेरियन एकजुट होंगे। अगला लक्ष्य और भी महत्वाकांक्षी है: अगले वर्ष में 10 लाख पौधे लगाना, साथ ही यह सपना कि रयान के 2.5 लाख छात्रों में से प्रत्येक इस पहल में भाग लें। क्या यह मातृभूमि को धन्यवाद देने का एक सुंदर तरीका नहीं है - सिर्फ शब्दों से नहीं, बल्कि जड़ों के साथ? डाकोजु ने पूछा।

भारत में जब कई कॉरपोरेट पर्यावरण तंत्र को लेकर उत्साहित हैं तो मैंने उनसे सीएसआर साझेदारी को लेकर उनके विचारों के बारे में पूछा। ''बेशक, REF सीएसआर निधि के लिए इस तरह की साझेदारी विकसित करने को लेकर उत्सुक है। लेकिन इसके लिए हमें पहले जमीन पर किए गए ठोस एवं सार्थक कार्यों का एक विश्वसनीय रिकॉर्ड बनाना होगा। एक प्रभावशाली पृष्ठभूमि या रिकॉर्ड के बिना वे हमें संदिग्ध नज़रों से देखेंगे। इसलिए हम उन्हें दिखाना चाहते हैं कि हमने अब तक क्या किया हैं और फिर एक साझेदारी करना चाहते हैं।''

एक बहुराष्ट्रीय कंपनी, ''जो भूजल को प्रदूषित करने के लिए बदनाम है, पहले ही हमसे संपर्क कर चुकी है, लेकिन हम किसी संदिग्ध संस्था के साथ साझेदारी करने को लेकर सतर्क हैं,'' वह आगे कहते हैं।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

स्थायी आय और स्वाद्य सुरक्षा

जयश्री

पश्चिम बंगाल के मालदा से 12 किलोमीटर दूर, भाबुक ग्राम पंचायत के 12 आदिवासी गाँवों में एक शांत हरित क्रांति चल रही है। किसी भी घर में कदम रखें, तो आपको हवा में धीरे-धीरे झूमता हुआ एक छोटा कटहल का पेड़ ज़रूर दिखाई देगा।

2018 से, रोटरी क्लब ऑफ़ मालदा, रो ई मंडल 3240, अपने *प्रोजेक्ट ग्रीन अर्थ* के तहत घरों, स्कूलों और किसानों को ये पौधे वितरित कर रहा है। रोटेरियन एक मिशन पर हैं: पूरे ज़िले में 10,000 कटहल के पौधे लगाना। क्लब के पूर्व अध्यक्ष भास्कर पॉल कहते हैं, ''हम पहले ही 8,000 पौधे वितरित कर चुके हैं।''

कटहल क्यों? पॉल तुरंत जवाब देते हैं: ''यह हमारा स्थानीय पौधा है, जो हमारी गर्म और समशीतोष्ण जलवायु के लिए बिल्कुल सही है। इसका कोई हिस्सा व्यर्थ नहीं जाता - पेड़ की लकड़ी फर्नीचर बनाने में काम आती है, पत्तियाँ मवेशियों के चारे के रूप में उपयोग होती हैं, बीजों का उपयोग अचार बनाने के लिए किया जाता है, और फल... स्वादिष्ट और पौष्टिक होते हैं। इसके स्वास्थ्य लाभों के प्रति बढ़ती जागरूकता के साथ, इसका बाज़ार भी बढ़ रहा है। ग्रामीणों के लिए, इसका मतलब स्थायी आय के साथ-साथ खाद्य सुरक्षा भी है।''

पॉल और क्लब की आईपीपी सुभ्रा कुंडू के लिए यह परियोजना व्यक्तिगत महत्व रखती है। दोनों के पास एक गाँव में खेती की ज़मीन है, और वे मानसून के दौरान, जो आदर्श रोपण का मौसम है, अपनी यात्राओं के दौरान एक बार में 100 पौधे खरीदकर

भास्कर पॉल (बाएँ), पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब मालदा, ग्रामीणों को कटहल के पौधे वितरित करते हुए।

क्लब के आईपीपी शुभ्र कुमार कुंडु (मध्य) गाँव में पौधों का वितरण करने के बाद आदिवासी बच्चों के साथ।

बाँटते हैं। पॉल कहते हैं, ''क्लब के अन्य सदस्य भी इसमें शामिल होते हैं। हम पौधे सौंपते हैं और ग्रामीणों को उनकी देखभाल के तरीक़े समझाते हैं। चूँकि वे किसान हैं, वे गाय के गोबर जैसी प्राकृतिक खाद का इस्तेमाल करते हैं।'' पहले दो साल नियमित पानी देना ज़रूरी होता है, और पाँचवें साल तक पेड़ फल देने लगते हैं। प्रत्येक पौधे की कीमत सिर्फ़ ₹30 है, ''एक पेड़ के लिए यह एक छोटा सा निवेश है जो दशकों तक परिवारों का पेट भर सकता है।''

रोटेरियन पौधे लगाने में बच्चों और बड़ों के साथ मिलकर काम करते हैं। इस परियोजना के लाभ भोजन और आय से कहीं आगे तक फैले हैं। वह मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''ज़्यादा हरियाली का मतलब है समृद्ध जैव विविधता, स्वस्थ मिट्टी और स्वच्छ हवा।''

भबुक ग्राम पंचायत के साथ क्लब के गहरे संबंध हैं। पिछले कुछ वर्षों में, इसने वयस्क साक्षरता कक्षाएं, चिकित्सा शिविर और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण पर जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित की हैं। ''हमने झारपुकुरिया गाँव में एक खेल का मैदान बनाया है और नियमित रूप से फुटबॉल टूर्नामेंट आयोजित करते हैं।'' क्लब द्वारा संचालित कल्याणकारी गतिविधियों के समन्वय के लिए गाँव में एक आरसीसी स्थापित किया गया है। ■

OzHarvest किचन में क्षेत्रीय पत्रिका संपादक और रोटेरियन।

ऑस्ट्रेलिया में भूखों तक भोजन पहुँचाना

रशीदा भगत

हाल ही में गोल्ड कोस्ट, ऑस्ट्रेलिया में *रोटरी डाउन अंडर* टीम द्वारा आयोजित एशिया पैसिफिक एडिटर्स सेमिनार में सबसे दिलचस्प और शिक्षाप्रद सत्रों में से एक था - OzHarvest नामक एक अद्भुत चैरिटी संस्था के रसोईघर में खाना पकाने का अनुभव, यह संस्था ऑस्ट्रेलिया में ज़रूरतमंद लोगों तक ताज़ा, स्वास्थ्यवर्धक और पौष्टिक भोजन पहुँचाने का काम करती है।

यह चैरिटी वर्ष 2004 में एक बेहद साधारण तरीके से शुरू हुई जब रोनी कान नामक एक सामाजिक उद्यमी ने यह देखा कि उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में बड़ी मात्रा में भोजन बर्बाद हो रहा है। ''तब उन्होंने OzHarvest की स्थापना की - ताकि बचे हुए भोजन को बचाकर उसे ज़रूरतमंदों तक पहुँचाया जा सके। उन्होंने किसी बड़ी चैरिटी की शुरूआत करने के लिए यह योजना नहीं बनाई थी; उन्होंने बस एक समस्या देखी और एक सरल समाधान सोचा।'' वो खुद ही वैन लेकर निकलती थीं और बड़े आयोजनों से बचा हुआ खाना इकट्ठा करके उसे किसी चैरिटी संस्था तक पहुँचा देतीं, *रोटरी न्यूज़* को दिए गए एक साक्षात्कार में OzHarvest की क्वींसलैंड की एंगेजमेंट कोऑर्डिनेटर मारिका मैमेन ने बताया।

क्षेत्रीय पत्रिका संपादक (बाएँ से): मेगन मार्टिन (ऑस्ट्रेलिया), क्योको नोज़ाकी (जापान) और थॉमस फू-मिंग चू (ताइवान)।

सिडनी में एक वैन से शुरू हुआ यह काम अब एक बड़ी चैरिटी बन चुका है जिसमें आज 400 वेतनभोगी कर्मचारी हैं, 120 वैन ड्राइवर, 4,000 स्वयंसेवक और 70 वैन शामिल हैं, जो देश भर के 20 स्थानों पर काम कर रहे हैं। आज, OzHarvest की प्रसिद्ध पीली मफूड रेस्क्यू वैनफ हर हफ्ते 250 टन से अधिक अच्छा भोजन 2,600 से भी अधिक खाद्य दाताओं से बचाकर उसे सीधे 1,500 से अधिक चैरिटियों तक पहुँचाती हैं, जो ऑस्ट्रेलिया में ज़रूरतमंद लोगों को खाना खिलाती हैं।

रोनी का यह छोटा सा उद्यम तेजी से बढ़कर अब ऑस्ट्रेलिया का अग्रणी खाद्य बचाव संगठन बन गया है। जैसे-जैसे OzHarvest बढ़ता गया रोनी और समर्थक वकीलों की एक टीम ने राज्य सरकारों से अपने कानून में संशोधन करने की मांग की ताकि संभावित खाद्य दाता बिना किसी कानूनी ज़िम्मेदारी के डर के अपना बचा हुआ भोजन चैरिटियों को दे सकें। न्यू साउथ वेल्स में 2005 में ङ्गसिविल लाइबिलिटी संशोधन अधिनियमम पारित किया गया और अन्य राज्यों ने भी इसका अनुसरण किया।

संक्षेप में, OzHarvest की मुख्य गतिविधि ऐसे भोजन को बचाना है जो अन्यथा सुपरमार्केट, किराने की दुकानों, आयोजनों, बेकरियों और भोजनालयों में बर्बाद हो जाता है और इस भोजन को या तो कच्ची सामग्री - फलों, सब्जियों, खाद्यान्न आदि के रूप में वितरित किया जाता है या फिर इसे अपने *कुकिंग फॉर ए कॉज़* प्रोग्राम के माध्यम से पके हुए "भोजन के रूप में बदलकर जरूरतमंद समुदायों तक पहुँचाया जाता है। खाद्य अपशिष्ट को रोकने के इस बड़े प्रयास में OzHarvest जिसे ऑस्ट्रेलिया में भोजन की बर्बादी रोकने के क्षेत्र में बड़ा बदलाव लाने के लिए जाना जाता है, ने बड़ी संस्थाओं और अन्य खाद्य दाताओं के साथ साझेदारी कर रखी है।"

"हम बहुत उच्च खाद्य सुरक्षा मानकों के साथ काम करते हैं। जब हमारे ड्राइवर स्टोर पर जाते हैं तो वे हर एक वस्तु की जांच करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वह ख़राब नहीं हुआ हो और खाने योग्य हो। अधिकांश मामलों में कुछ संस्थाओं के पास अतिरिक्त या बचा हुआ भोजन होता है जिनमें स्थानीय बेकरी भी शामिल होती हैं, जो हमें ब्रेड और केक देती हैं।"

समाप्ति तिथि के विपरीत, 'बेस्ट बिफोर' तारीख वाले गैर-नाशवान खाद्य पदार्थ उस तारीख के तीन महीने बाद तक भी सुरक्षित रूप से उपयोग और सेवन किए जा सकते हैं। लेकिन नाशवान वस्तुएं जैसे दूध इसके अंतर्गत नहीं आतीं। OzHarvest सभी दाताओं से अनुरोध करता है कि वे सुनिश्चित करें कि भोजन एकत्र किए जाने तक सुरक्षित रूप से रखा गया हो। हम समुदाय के सबसे कमजोर वर्गों को भोजन उपलब्ध कराते हैं और कड़े खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन करते हैं। हमारे ड्राइवरों को खतरनाक या असुरक्षित भोजन पहचानने का प्रशिक्षण दिया गया है और उन्हें निर्देश दिए गए है कि वे ऐसे किसी भी खाद्य पदार्थ को स्वीकार न करें जो उन्हें असुरक्षित लगे, वेबसाइट कहती है। "और सोने पर सुहागा... अच्छी गुणवत्ता वाले अतिरिक्त भोजन को बचाकर आप न सिर्फ अपने खुद के कचरे और उसके निपटान की लागत को घटा रहे हैं बल्कि

अपने समुदाय के ज़रूरतमंद लोगों की बहुत बड़ी मदद भी कर रहे हैं।''

ऑस्ट्रेलिया की सेवा-प्रधान संस्थाओं जैसे कि कुछ रोटरी क्लब, OzHarvest से जुड़ चुके हैं। और पिछले महीने तक टेरी टेलर - जो गोल्ड कोस्ट के रोटरी क्लब बर्ले हेड्स की एक सदस्य होने के साथ ही एक पेशेवर शेफ हैं और पहले एक कुकिंग स्कूल चलाती थीं - एक उत्साही स्वयंसेवक थीं।

मई 2025 की बात करें तो हम में से कुछ - एशिया-पैसिफिक क्षेत्र जिनमें जापान, थाईलैंड, ताइवान, ऑस्ट्रेलिया और भारत शामिल हैं - से क्षेत्रीय रोटरी मैगज़ीन के संपादक और प्रमुख रोटरी मैगज़ीन के वरिष्ठ नेता साथ ही होस्ट मैगज़ीन रोटरी डाउन अंडर (RDU) के वरिष्ठ सदस्य, जिसमें RDU की अध्यक्ष PDG काल्मा मैक्लेलन, RDU की संपादकीय अध्यक्ष PDG लिज़ कोर्टनी और इसके जनरल मैनेजर गे किडल और कुछ उत्साही रोटेरियन - हम सभी उत्साहपूर्वक OzHarvest की एक रसोई में पहुँचे जो इसके *कुकिंग फॉर ए कॉज़* कार्यक्रम के अंतर्गत चलाई जाती है।

टेरी टेलर ने वहाँ हमारा स्वागत किया और अगले कुछ घंटों तक हमारा मार्गदर्शन किया जब हमने किचन में बहुत तेज़ धार वाले चाकू उठाए (मुझे हमेशा सबसे तेज़ धार वाले रसोई चाकुओं का बहुत आकर्षण रहा है और मैं इस कीमती चीज़ को इकट्ठा करने की आदी हूँ। बाद में मुझे एक वैसा ही चाकू एक स्टोर में मिला, जिसे मैंने सावधानीपूर्वक अपने सूटकेस में पैक कर लिया ताकि उसे घर ला सकूं!), चॉपिंग बोर्ड और अन्य रसोई उपकरण चुने। लेकिन इससे पहले कि हम यह सब शुरू करते, टेरी ने हमें सीधे वॉशिंग एरिया भेजा, जहाँ हमें साबुन से अच्छे से हाथ धोने के लिए कहा गया। हमें सख़्ती से बताया गया कि स्वच्छता से कोई समझौता नहीं होगा।

उन्होंने हमें बताया कि हम एप्पल और राइस पुडिंग, मफिन्स और एक स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करेंगे

रोटरी क्लब बर्ली हेड्स की सदस्य और शेफ टैरी टेलर रोटरी समूह को एक कुकिंग सत्र में मार्गदर्शन देती हुईं।

जिसमें पोषक तत्वों से भरपूर सामग्री जैसे दालें, सब्जियाँ और चीज़ शामिल थे। यकीन मानिए इसमें सात तरह के चीज़ का इस्तेमाल हुआ! अगले दो घंटों में जो बात सबसे ज़्यादा महसूस हुई वह थी - पूरे पकवान की तैयारी में झलकता प्यार और देखभाल। सेब, हरी सब्ज़ियाँ, गाजर आदि को एक निश्चित तरीके से ऐसे काटा गया ताकि बिल्कुल भी बर्बादी न हो। कोई भी शॉर्टकट (लापरवाही) की अनुमति नहीं थी एक परफेक्ट डिश तैयार करने के लिए ज़रूरी हर एक छोटी-छोटी बात का पालन किया गया। आटा गूंधने से लेकर, सब्जियाँ काटने, बेक करने और पैक करने तक और उससे पहले मफिन्स और एप्पल पुडिंग पर भरपूर मात्रा में मेवों की सजावट की गई। यह सब कुछ बिल्कुल उसी प्रोटोकॉल के अनुसार हुआ जैसा कि किसी फाइन डाइनिंग रेस्तरां में होता है। इस अनुभव ने मदेने और पाने की गरिमाफ को एक नया अर्थ दिया।

बाद में जब पूछा गया कि जरूरतमंद लाभार्थियों की पहचान कैसे की जाती है क्योंकि सामान्य धारणा यह थी कि ऑस्ट्रेलिया जैसे देश में भूख या पौष्टिक भोजन की कमी कोई बड़ी समस्या नहीं होगी, मारिका कहती हैं। ''हम सीधे व्यक्तियों तक भोजन नहीं पहुँचाते बल्कि विभिन्न धर्मार्थ एजेंसियों या समुदायों तक इस भोजन को पहुँचाते है जो इसे जरूरतमंद लोगों को वितरित करते हैं।'' एक सामुदायिक केंद्र इस भोजन को हैम्पर्स में पैक कर सकता है और उन फूड हैम्पर्स को उन परिवारों तक पहुँचा सकता है जो हर हफ्ते आकर उन फूड हैंपर्स को प्राप्त करते है।

वह स्पष्ट करती हैं कि पका हुआ भोजन, जिसे केवल इसके *कुकिंग फॉर ए कॉज़* कार्यक्रम के अंतर्गत वितरित किया जाता है, से अधिक हमारा प्राथमिक कार्य ताजे फल और सब्जियों को बचाना है। हम ताजा उपज और पौष्टिक भोजन को प्राथमिकता देते हैं जिसे धर्मार्थ संस्थाओं को दिया

हमने ऐसे किस्से सुने हैं जहाँ माता-पिता अपने बच्चों को खिलाने के लिए स्वयं भूखे रह जाते हैं। या बच्चे सिर्फ़ इसलिए स्कूल नहीं जाते क्योंकि उनके पास दोपहर के भोजन के लिए कुछ ले जाने को नहीं होता।

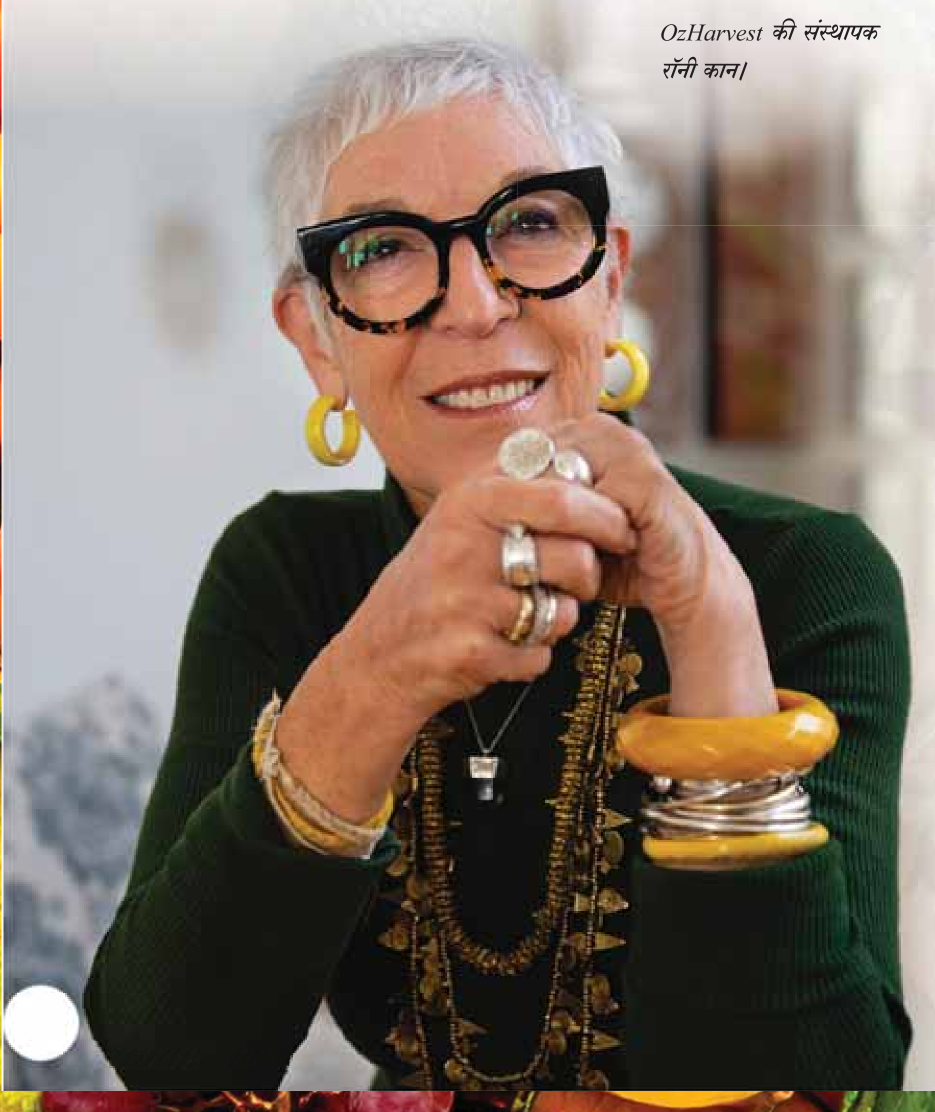

OzHarvest की संस्थापक रॉनी कान।

जाता है जो फिर उसे पकाकर भोजन या हैम्पर्स में बदलकर परिवारों तक पहुँचाते है।

जिस चीज़ ने OzHarvest को बचाए गए भोजन के लिए ऑस्ट्रेलिया की एक विशाल चैरिटी में बदल दिया, वह था रॉनी का 2005 में प्रो बोनो (नि:शुल्क सेवा देने वाले) वकीलों की एक टीम को साथ लाना ताकि वे सरकार से यह कानून पारित करवाने की पैरवी कर सकें, जिससे खाद्य व्यवसाय बिना किसी कानूनी ज़िम्मेदारी के डर के अपना अतिरिक्त भोजन दान कर सकें। इस क़दम से ऑस्ट्रेलियाई रिटेल चेन थेर्श्रीीहि जैसी संस्थाओं को OzHarvest का मुख्य खाद्य बचाव भागीदार बनने में मदद मिली।

2024 में OzHarvest जिसका 2,400 दाताओं का नेटवर्क है, ने 14,000 टन से अधिक भोजन बर्बाद होने से बचाया। यह पहले से ही 1,500 चैरिटियों को सेवा दे रहा है जबकि 1,000 अतिरिक्त चैरिटियाँ प्रतीक्षा सूची में हैं। इतने बड़े पैमाने पर संचालन के लिए बड़ी फंडिंग की भी आवश्यकता होती है और स्पष्ट रूप से इसके संस्थापक की सोच सीमाओं से परे है। नियमित अनुदान संचय में हर अक्टूबर में आयोजित होने वाला *सीईओ का कुकऑफ* शामिल होता है, जहाँ कॉरपोरेट्स के वरिष्ठ नेता एक सेलिब्रिटी शेफ के साथ *कुकिंग फॉर ए कॉज़* कार्यक्रम में भाग लेते हैं। वे फिर उस भोजन को समुदाय के लोगों को परोसते हैं और उनके साथ बैठकर वही भोजन साझा करते हैं। यह एक बड़ा आयोजन होता है। हर साल जून में एक *गिविंग डे* भी आयोजित किया जाता है।

दुनिया में खाने की बर्बादी

- दुनिया में सभी को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन का उत्पादन होता है।
- दुनिया में उत्पादित कुल खाद्य पदार्थों का एक तिहाई हिस्सा - लगभग 1.3 बिलियन टन - नष्ट या बर्बाद हो जाता है जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को हर साल लगभग 940 बिलियन डॉलर के करीब का नुकसान होता है।
- वैश्विक ग्रीनहाउस गैसों का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा उस भोजन से निकलता है जो उत्पादित तो होता है पर खाया नहीं जाता।

- अगर खाद्य बर्बादी एक देश होता तो यह अमेरिका और चीन के बाद ग्रीनहाउस गैसों का तीसरा सबसे बड़ा उत्सर्जक होता।
- वैश्विक खाद्य बर्बादी को खत्म करने से एक वर्ष में 4.4 मिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड की बचत होगी जो सड़क से हर चौथी कार को हटाने के बराबर है।
- हर 9 में से 1 व्यक्ति के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है इसका अर्थ है कि 793 मिलियन लोग कुपोषित है।
- वर्तमान में जो भोजन बर्बाद या नष्ट हो रहा है, उसका केवल एक चौथाई हिस्सा ही 870 मिलियन भूखे लोगों को भोजन दे सकता है।
- उत्पादित सभी फलों और सब्जियों में से लगभग आधा बर्बाद हो जाता है (यह 3.7 ट्रिलियन सेब है)।
- एक बर्गर फेंकने का मतलब है उतना ही पानी बर्बाद करना जितना कि 90 मिनट के शावर में खर्च होता है!
- एक लेट्यूस हेड को लैंडफिल में पूरी तरह सड़ने में 25 साल लगते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में भोजन की बर्बादी

- हर साल ऑस्ट्रेलिया में 7.6 मिलियन टन भोजन बर्बाद होता है, जिसमें से 70 प्रतिशत बिल्कुल खाने योग्य होता है। इससे देश की अर्थव्यवस्था को हर साल लगभग (A) 36.6 अरब ऑस्ट्रेलियाई डॉलर का नुकसान होता है।
- ऑस्ट्रेलिया में खाद्य बर्बादी का अधिकांश हिस्सा घरों से आता है - लगभग 2.5 मिलियन टन प्रति वर्ष - जिससे हर परिवार को सालाना लगभग 2,000 से 2,500 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तक का नुकसान होता है।
- 25 मिलियन हेक्टेयर से अधिक भूमि उस भोजन को उगाने में बर्बाद हो जाती है जिसे खाया ही नहीं जाता।
- ऑस्ट्रेलिया में सबसे अधिक बर्बाद होने वाले शीर्ष पाँच खाद्य पदार्थ हैं: सब्ज़ियाँ, ब्रेड, फल, पैक किए हुए सलाद और बचा हुआ खाना।
- इस देश में 3.4 मिलियन परिवारों रोज़ाना भोजन की व्यवस्था के लिए संघर्ष करना पड़ता है; इनमें से 2 मिलियन परिवार गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना करते है - जहाँ उन्हें नियमित रूप से भोजन छोड़ना पड़ता है या कभी-कभी पूरे दिन बिना खाए गुजारना पड़ता है।
- भोजन की मांग लगातार बढ़ रही है; OzHarvest द्वारा समर्थित चैरिटीज़ ने पिछले छह महीनों में खाद्य सहायता की मांग में 75 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है; इसमें 30 प्रतिशत पहली बार खाद्य सहायता की मांग कर रहे थे।

अन्य नवाचारों में एक फूड ट्रक भी शामिल है जिसे आयोजनों के लिए मंगाया जा सकता है - यह निजी पार्टियों या कार्यालय आयोजनों के लिए कैटरिंग करता है और मशून्य बर्बादीफ का वादा करता है। इसका टैगलाइन आकर्षक है: हर बुकिंग ज़रूरतमंद समुदायों को भोजन कराने में हमारी मदद करती है।

टेरी टेलर और उनके क्लब के अलावा देश भर के अन्य रोटेरियन भी OzHarvest से जुड़े हुए है कभी कार्यक्रमों के माध्यम से और कभी दान के माध्यम से। ''हम निश्चित रूप से अधिक रोटरी

सदस्यों को इसमें शामिल करना पसंद करेंगे क्योंकि हमने देखा है कि वे सिर्फ दान नहीं करना चाहते बल्कि वास्तव में खुद से जुड़कर काम करने का अनुभव लेना चाहते हैं,'' मारिका कहती है।

OzHarvest अगली पीढ़ी में भी निवेश कर रहा है - न केवल भोजन की बर्बादी को लेकर जागरूकता बढ़ाने में बल्कि पोषण की कमी से जूझ रहे बच्चों को संपूर्ण और स्वस्थ भोजन उपलब्ध कराने में भी। ''हमारे एक कार्यक्रम के अंतर्गत हम कम्युनिटी सेंटर्स में जाते हैं और वहाँ मौजूद वयस्कों और बच्चों दोनों को स्वस्थ भोजन और किफायती रूप से खाना पकाने का कौशल सिखाते हैं क्योंकि हम समझते हैं कि अक्सर आप भोजन तो दान कर देते हैं लेकिन अलग-अलग पृष्ठभूमियों से आने वाले लोगों को यह नहीं पता होता कि उस भोजन का उपयोग कैसे करें।''

वह एक उदाहरण देते हुए कहती हैं कि ''यदि आप किसी को शकरकंद या बटरनट स्क्वैश देते है मगर उसने इसे पहले कभी नहीं देखा हो तो वह व्यक्ति समझ ही नहीं पाएगा कि इसका क्या करना है। इसलिए हमारा उद्देश्य लोगों के खाद्य साक्षरता स्तर

OzHarvest की संस्थापक रॉनी और उनकी टीम।

को बढ़ाना है - उन्हें यह सिखाना कि सुपरमार्केट में खाद्य सामग्री के पीछे लिखे लेबल को कैसे पढ़ें और यह कैसे तय करें कि कौन सा विकल्प स्वास्थ्यवर्धक भी है और किफायती भी।''

FEAST *(Food Education and Sustainability Training)* एक ऐसा शिक्षा कार्यक्रम है जो प्राइमरी और हाई स्कूल के पाठ्यक्रम से जुड़ा हुआ है। यह भोजन की बर्बादी और पर्यावरण पर पड़ने वाले उसके प्रभाव के मुद्दे को उजागर करने के साथ ही बच्चों में सकारात्मक भोजन संबंधी आदतें विकसित करता है और कक्षा में खाना पकाने की आसान गतिविधियाँ कराता है। इसके नाम की तरह ही यह कार्यक्रम मज़ेदार, रोचक और स्वादिष्ट भोजन से भरपूर होता है! यह शिक्षकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान करता है, जो OzHarvest में एक दिन की ऑनसाइट ट्रेनिंग या एक ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल के माध्यम से किया जा सकता है। यहाँ हम बच्चों को स्वस्थ भोजन, स्वस्थ खाना पकाना, शून्य अपशिष्ट तकनीकों के साथ खाना बनाना और घर में भोजन की बर्बादी को कम करना

प्रतिकृति

जब मैं गहराई से यह सोचती हूँ कि भारत में रोटरी संगठन OzHarvest के खाद्य बचाव कार्यक्रमों की नकल कर सकता है - चाहे वह कितनी भी छोटी शुरुआत क्यों न हो - तो OzHarvest की प्रतिनिधि मारिका मेमन कहती हैं: यह कार्यक्रम पहले ही यूके में UKHarvest, न्यूज़ीलैंड में KiwiHarvest, वियतनाम में VietHarvest और साउथ अफ्रीका में SAHarvest के रूप में दोहराया जा चुका है। ये सभी संगठन एक समान खाद्य बचाव मॉडल को अपनाते हैं लेकिन निश्चित रूप से इनमें स्थानीय परिस्थितियों और ज़रूरतों के अनुसार बदलाव किया गया है।

भारत में पहले से ही कई रोटरी क्लब ऐसे फ्रिज लगा रहे हैं, जिनमें भोजन की चीज़ें रखी जाती हैं और कोई भी व्यक्ति इन्हें कभी भी - दिन हो या रात - ले सकता है।

विचार करने योग्य बात है, हैं ना?

सिखाते हैं। हमारे पास एक मर्छीीळीहफ नामक कार्यक्रम भी है, जिसमें हम युवाओं को व्यावसायिक आतिथ्य और खाना पकाने का प्रशिक्षण देते हैं ताकि वे नौकरी पा सकें।''

वह आगे कहती हैं कि ऑस्ट्रेलिया में खाद्य असुरक्षा का सामना करने वाले परिवारों की संख्या बढ़ रही है। ''आप शायद यह सोच सकते हैं कि एक घर वाला परिवार कैसे खाद्य असुरक्षा का सामना कर सकता है। लेकिन यह आज की सच्चाई है और हमने ऐसी कहानियाँ सुनी है जहाँ माता-पिता अपने बच्चों को खाना खिलाने के लिए खुद खाना छोड़ देते है। या फिर बच्चे स्कूल जाना छोड़ देते हैं क्योंकि उनके पास दोपहर के भोजन के लिए कुछ नहीं होता। ऐसे मामलों में भोजन एक आवश्यकता नहीं बल्कि एक लक्जरी बन जाता है।''

वह एक चिंताजनक बात मेरे मन में छोड़ जाती हैं - लोगों को यह समझने की ज़रूरत है कि जब आप खाना कूड़ेदान में फेंकते हैं, तो आप सिर्फ खाना बर्बाद नहीं कर रहे होते। आप उन सभी संसाधनों को भी बर्बाद कर रहे होते हैं जो उस खाने को उगाने और हम तक पहुँचाने में लगे थे वह ज़मीन जिस पर खाना उगाया गया, वह पानी जिससे उस फसल की सिंचाई हुई, वे संसाधन जो उसे ढोने, पैक करने और बाज़ार में बेचने में लगे। इसलिए इसका असर उससे कहीं ज़्यादा गहरा है जितना लोग सोचते हैं।

जिस प्यार और देखभाल के साथ *कुकिंग फॉर ए कॉज़* सत्र में भोजन तैयार किया गया था उस पर वह कहती है: ''ओह हाँ, हमारे कार्यक्रमों में जो भोजन हम लोगों तक पहुँचाते हैं उसकी गुणवत्ता के साथ-साथ हम हमेशा यह कहते हैं: उस व्यक्ति के बारे में सोचिए जिसे यह भोजन मिलने वाला है और उसमें अपना प्यार और स्नेह भी डालिए क्योंकि संभव है कि वह उस व्यक्ति के दिन का एकमात्र भोजन हो।''

फोटोग्राफ़ी: रीस मार्टिन और OzHarvest वेबसाइट

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

लैरी लंसफोर्ड
को 2027-28 रो ई अध्यक्ष चुना गया

अमेरिका के मिसौरी स्थित रोटरी क्लब कैनसस सिटी-प्लाज़ा के सदस्य लैरी ए लंसफोर्ड को नामांकन समिति द्वारा 2027-28 के लिए रो ई अध्यक्ष पद के लिए चुना गया है। यदि कोई अन्य उम्मीदवार उन्हें चुनौती नहीं देता है, तो 15 सितंबर को वे आधिकारिक रूप से अध्यक्ष पद के लिए नामित हो जाएँगे।

लंसफोर्ड का रोटरी से पहला परिचय तब हुआ जब उन्हें 1981-82 का शैक्षणिक वर्ष ऑस्ट्रेलिया के न्यूकैसल विश्वविद्यालय में बिताने के लिए रोटरी फाउंडेशन एम्बेसेडर छात्रवृत्ति मिली।

एक प्रमाणित सार्वजनिक लेखाकार के रूप में, उन्होंने अपने करियर की शुरुआत प्रतिष्ठित फर्म अर्न्स्ट एंड यंग में की, जहाँ उन्होंने लगभग सात वर्षों तक काम किया। इसके बाद, 1990 में वे बर्नस्टीन-रीन एडवरटाइजिंग, एक पारिवारिक स्वामित्व वाली कंपनी, से जुड़े। वह वर्तमान में बर्नस्टीन समूह की कंपनियों के कार्यकारी उपाध्यक्ष और मुख्य वित्तीय अधिकारी हैं।

लंसफोर्ड ने 1991 में रोटरी क्लब कैनसस सिटी-प्लाज़ा में शामिल हुए। उन्होंने रो ई के निदेशक (2013-15) और रोटरी फ़ाउंडेशन के

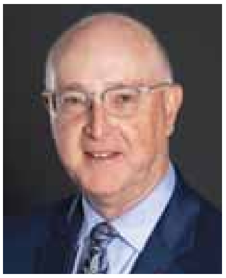

आरआईपीएन
लैरी लन्सफ़ोर्ड

ट्रस्टी (2021-25, उपाध्यक्ष 2024-25) के रूप में कार्य किया। उन्होंने रो ई की कार्यकारी समिति (2014-15), सदस्यता वृद्धि समिति (2016-18), रो ई के अध्यक्ष पद के लिए नामांकन समिति (2023-24), टीआरएफ की कार्यकारी समिति (2023-24), वित्त समिति (2022-23 और 2024-25), और प्रतिभागी अनुभव समिति (2023-24) के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है।

उन्हें टीआरएफ का विशिष्ट सेवा पुरस्कार, सराहनीय सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र और रो ई का सर्विस एबव सेल्फ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके और उनकी पत्नी जिल लंसफोर्ड के दो बच्चे और एक पोता/पोती हैं। वे प्रमुख दानदाता, बेक्वेस्ट सोसाइटी के सदस्य, कई पॉल हैरिस फेलो, रोटरी फाउंडेशन के दानदाता और सस्टेनिंग सदस्य हैं। ■

रो ई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सांगकू युन
ने इस्तीफा दिया

आरआईपीई संगकू युन

पिछले अप्रैल में, नवनिर्वाचित अध्यक्ष सांगकू युन ने रोटरी इंटरनेशनल को सूचित किया था कि उन्हें अग्नाशय के कैंसर का पता चला है और उन्होंने रोटरी की ज़िम्मेदारियों से हटने का फैसला लिया है ताकि वे अपने इलाज पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इसके बाद, 11 अगस्त को रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो को लिखे एक पत्र में, उन्होंने अपने डॉक्टरों से सलाह-मशविरा करने के बाद नवनिर्वाचित अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के अपने फैसले की जानकारी दी।

rotary.org पर अध्यक्ष अरेज़ो द्वारा साझा किए गए उनके पत्र के एक अंश में लिखा है: मेरे डॉक्टरों ने सलाह दी है कि मेरे लिए हमारे अध्यक्ष पद की मांगों के अनुरूप यात्रा और कार्यक्रम को पूरा करना संभव नहीं हो सकता। जितनी इच्छा मेरी इस भूमिका में सेवा करने की है, उतनी ही मुझे इस सलाह का सम्मान भी करना चाहिए। हमारे संगठन का नेतृत्व करने का अवसर मिलना मेरे लिए अत्यंत सम्मान और खुशी की बात है। मैं अपनी पूरी क्षमता से सेवा करता रहूँगा, और रोटरी के प्रति मेरा प्रेम और हमारे मिशन के प्रति मेरी प्रतिबद्धता अडिग रहेगी।

अध्यक्ष अरेज़ो ने रोटरी की वेबसाइट पर कहा है: ''मैं सांगकू को उनकी अद्भुत सेवा, नेतृत्व और हमारे संगठन में दिए गए योगदान के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। कृपया मेरे साथ मिलकर उनके शीघ्र स्वस्थ होने और भविष्य में अच्छे स्वास्थ्य की कामना करें।''

अगस्त 2024 में अध्यक्ष पद के लिए नामांकन समिति द्वारा यूं को 2026-27 रो ई अध्यक्ष के रूप में चुना गया था। अब, रो ई निदेशक मंडल अगस्त के अंत तक 2026-27 के लिए नए रोटरी अध्यक्ष का चयन करने हेतु बैठक करेगा।

© Rotary.org

दोस्ती से दुनिया बदल सकती है

किरण ज़ेहरा

भारत के रो ई मंडल 3040 के रोटेरियनों का एक समूह हाल ही में आधी दुनिया पार कर अमेरिका गया - केवल नई जगहें देखने के लिए ही नहीं बल्कि नए दोस्त बनाने और रोटरी को और बेहतर समझने के उद्देश्य से। 6 मई से 18 मई 2025 तक यह टीम रोटरी के फ्रेंडशिप कार्यक्रम (RFE) के अंतर्गत दक्षिणी कैलिफोर्निया का दौरा करने गई। यह एक विशेष पहल है जिसमें रोटेरियन किसी अन्य देश में अपने साथी रोटेरियनों के साथ रहते हैं और उनकी संस्कृति व सेवा कार्यों का प्रत्यक्ष अनुभव लेते हैं। ''हमने जाना कि रोटरी को वास्तव में क्या खास बनाता है - इसकी अंतर्राष्ट्रीय भावना और वह मित्रता जो भाषा और सीमाओं से परे है,'' टीम के नेता और पीडीजी संजीव गुप्ता ने कहा।

अमेरिका के रो ई मंडल 5330 की मेजबानी में भारतीय टीम का एक परिवार की तरह स्वागत किया गया। ''हम रोटेरियनों के घरों में रहे, क्लब की बैठकों में भाग लिया, स्थानीय स्कूलों, संग्रहालयों का दौरा किया और इसके साथ ही प्रकृति की सैर, एक गर्म हवा के गुब्बारे की सवारी और एक ग्रैंड कैन्यन सड़क यात्रा पर गए। इस दौरान हमने भारतीय गीत, शास्त्रीय नृत्य और कुछ व्यंजनों को साझा किया,'' पीडीजी गुप्ता की पत्नी अर्चना कहती हैं।

पाम स्प्रिंग्स से टेमेकुला तक हर पड़ाव पर, ''हमारा स्वागत अत्यंत गर्मजोशी, सार्थक संवादों और साझा उद्देश्य की भावना के साथ किया गया।'' इस यात्रा के दौरान दस से अधिक रोटरी क्लबों ने इस टीम का अभिनंदन किया और इस आदान-प्रदान के कारण तीन नई सिस्टर-क्लब साझेदारियाँ स्थापित हुईं। भारत के रो ई मंडल 3040 से आई टीम ने हंटिंग्टन रोग पर केंद्रित एक वैश्विक अनुदान परियोजना के लिए 10,000 डॉलर का योगदान देने का संकल्प लिया - यह एक दुर्लभ और प्रगतिशील मस्तिष्क विकार है। कैलिफोर्निया स्थित मेज़बान मंडल भी इस परियोजना को अपने डिस्ट्रिक्ट डेज़िग्नेटेड फंड्ज के माध्यम से समर्थन देने की अपेक्षा रखता है।

कैलिफोर्निया के सैन बर्नार्डिनो काउंटी के रिम ऑफ दी वर्ल्ड हाई स्कूल के दौरे के दौरान भारतीय

आरएफ़ई टीम

टीम ने व्यावसायिक प्रशिक्षण को प्रत्यक्ष रूप से क्रियान्वित होते देखा। आपातकालीन चिकित्सा प्रतिक्रिया और सीपीआर से लेकर वेल्डिंग, मीडिया उत्पादन और ऑटोमोटिव प्रौद्योगिकी तक व्यावहारिक दृष्टिकोण और अत्याधुनिक सुविधाओं ने भारत में इसी तरह के कौशल-निर्माण मॉडल विकसित करने के लिए नए विचारों को जन्म दिया। बाद में, टेमेकुला में आयोजित किए गए मंडल 5330 के वार्षिक सम्मेलन में भारतीय टीम का औपचारिक परिचय कराया गया और अत्यंत गर्मजोशी से स्वागत किया गया। दोनों देशों के राष्ट्रगान बजाए गए और हमने युवा सेवा और सामुदायिक प्रभाव पर केंद्रित सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लिया। हम रोटेरियन बनकर आए थे मगर एक परिवार बनकर लौटे, टीम के एक सदस्य राजेश मोदी (रोटरी क्लब इंदौर यूनाइटेड) कहते हैं।

"फ्रेंडशिप एक्सचेंज लोगों के बीच कूटनीति का माध्यम है - यह विश्वास, साझी मान्यताओं और आत्मीयता के ज़रिए एक दूसरे से जोड़ता है। जहाँ दुनिया अक्सर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को केवल सरकारों तक सीमित मानती है, वहीं रोटरी यह दिखाती है कि साधारण लोग भी सेवा और ईमानदारी के बल पर असाधारण संबंध बना सकते हैं," पीडीजी गुप्ता कहते हैं।

रोटरी फ्रेंडशिप एक्सचेंज (ठत्रए) में भाग लेने की योजना बना रहे भारतीय रोटेरियनों के लिए पीडीजी संजीव गुप्ता का कुछ मित्रतापूर्ण सुझाव है: "स्वस्थ और सक्रिय रहें क्योंकि कई दिन पैदल यात्रा और बाहरी गतिविधियों में बीतते हैं। हल्का सामान रखें ताकि मेज़बानों के बीच स्थान परिवर्तन आसान रहें। अक्सर भारतीय भोजन की व्यवस्था होती है लेकिन स्थानीय व्यंजनों को आज़माने के लिए तैयार रहना आपके अनुभव को और समृद्ध बनाता है। समूह संवादों के दौरान अंग्रेज़ी में बोलना और बुनियादी शिष्टाचार का पालन करना मेज़बानों के प्रति सम्मान दर्शाता है। हर क्षण का पूरा उपयोग करें - पूरी तरह भाग लें क्योंकि आपको कभी नहीं पता कि कौन-सा अनुभव दिल में बस जाएगा। और सबसे ज़रूरी बात - दिल खोलकर जाएं; जितना आप देंगे, यह यात्रा उतनी ही सार्थक बनेगी।"

गुप्ता को उम्मीद है कि भारत के और अधिक रोटरी क्लब फ्रेंडशिप एक्सचेंज जैसे कार्यक्रमों की मेजबानी करेंगे या उनमें भाग लेंगे। "यह रोटरी को केवल बैठकों और सेवा परियोजनाओं से आगे जाकर अनुभव करने का एक सबसे सार्थक तरीका है। यह आनंद, सांस्कृतिक समृद्धि और हमारे कार्य से एक गहरे संबंध की भावना को विकसित करता है। ऐसे समय में जब दुनिया पहले से कहीं ज़्यादा विभाजित लगती है, ठत्रए यह याद दिलाते है कि मित्रता अब भी हमारे पास शांति निर्माण का एक सबसे शक्तिशाली माध्यम है।" ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सौर ऊर्जा का उपयोग

टीम रोटरी न्यूज़

बाएँ से: माथाडी अस्पताल में आईपीडीजी दिनेश मेहता, क्लब के आईपीपी सुनील शाह और क्लब अध्यक्ष धनंजय सरकार, अस्पताल अधिकारियों और रोटेरियन के साथ।

न्यू बॉम्बे सीसाइड के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3142 ने एटीओएस ग्लोबल आईटी सॉल्यूशंस एंड सर्विसेज़ से प्राप्त कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) अनुदानों के माध्यम से नवी मुंबई स्थित मथाडी अस्पताल को 71 किलोवाट क्षमता की छत पर स्थापित सौर ऊर्जा उत्पादन इकाई से सुसज्जित किया है। क्लब के अध्यक्ष सुनील शाह ने कहा, इस नई सुविधा से प्रति वर्ष 95,000 यूनिट से ज़्यादा सौर ऊर्जा उत्पन्न होने का अनुमान है, जिससे अस्पताल को सालाना लगभग ₹12 लाख की बचत होगी। इस पहल से होने वाली पर्याप्त बचत को सीधे अस्पताल की सुविधाओं के आधुनिकीकरण और बेहतर बनाने में निवेश किया जाएगा।

इससे पहले, क्लब ने 31,000 डॉलर के दो वैश्विक अनुदानों के माध्यम से अस्पताल को विभिन्न महत्वपूर्ण चिकित्सा उपकरण प्रदान किए थे। इस पहल में क्रॉस टिम्बर्स रोटरी, टेक्सास, रो ई मंडल 5790, और रो ई मंडल 5750, ओक्लाहोमा, इसके अंतर्राष्ट्रीय भागीदार थे।

इन परियोजनाओं की कुल लागत ₹1.1 करोड़ थी। ■

फिल्म महोत्सव के माध्यम से कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन

रशीदा भगत

रोटरी वर्ष के समापन पर, रोटरी क्लब ठाणे एसेस, रो ई मंडल 3142 ने, अपनी अध्यक्ष सुनीता जैन के नेतृत्व में, कुछ अलग सोचा और एक उल्लेखनीय परियोजना का आयोजन किया - एक फिल्म महोत्सव, जिसमें उन उज्ज्वल, युवा और प्रतिभाशाली कलाकारों द्वारा बनाई गई लघु फिल्में प्रदर्शित की गईं, जो पर्याप्त दर्शक जुटाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

क्लब की अध्यक्ष सुनीता ने कहा, ''हम एक ऐसी परियोजना करना चाहते थे, जिसमें कला, संस्कृति और सेवा का अनूठा संगम हो, इसलिए हमने प्रभात चित्र मंडल और वाई बी चव्हाण केंद्र के साथ मिलकर चित्रभारती लघु फिल्म महोत्सव 2025 की मेजबानी की, ताकि कुछ अच्छी फिल्मों के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके।''

क्लब ने इस उद्यम पर ₹1.4 लाख से अधिक खर्च किए, जिसके तहत 27 युवा फिल्म निर्माताओं को अपनी फिल्मों को एक समझदार दर्शकों के सामने प्रदर्शित करने का अवसर मिला। 29 मई से 1 जून 2025 तक चार दिनों तक चले ''इस अनोखे उत्सव में दिलचस्प विषयों पर आधारित 27 उत्कृष्ट लघु फिल्में एक साथ प्रस्तुत की गईं। हमारे क्लब की एक टीम जिसमें हमारी अध्यक्ष, क्लब की सदस्य सुषमा भट्टा, जिन्हें फिल्मों में काफी रुचि और जानकारी है, प्रसिद्ध फिल्म समीक्षक एवं निर्देशक संतोष पठारे, और प्रभात चित्र मंडल के सचिव शामिल थे, ने इन फिल्मों को शॉर्टलिस्ट किया। युवा और कम-ज्ञात फिल्म निर्माताओं को एक मंच प्रदान करने के अलावा, ऐसे नए और ताज़ा चेहरों वाली फिल्में, और एक युवा तकनीकी दल के साथ बनाई गईं ज्यादातर कलाकार जो अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, उनके काम को प्रोत्साहित करने के लिए चुना गया,'' क्लब के सचिव डेविड पेजारकर ने कहा। सर्वश्रेष्ठ फिल्मों और अभिनेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा फिल्म निर्माताओं को एक सांकेतिक राशि प्रदान की गई।

फ़िल्मों की अवधि 20 से 30 मिनट के बीच थी और उनका उद्देश्य धन उगाहना नहीं था, इसलिए क्लब के सदस्यों के दोस्तों और रिश्तेदारों को मुंबई में तीन अलग-अलग जगहों पर आयोजित स्क्रीनिंग के लिए आमंत्रित किया गया था। चुनी गई फ़िल्मों के विषय विविध थे और उनमें विभिन्न सामाजिक मुद्दों को शामिल किया गया था, जैसे कि सामाजिक वर्जनाएँ, खासकर लड़कियों/महिलाओं के लिए, व्यक्तिगत रिश्ते, और बुजुर्गों में अकेलापन, आदि।

सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार प्रतीक राजेंद्र श्रीवास्तव की लघु फिल्म *माई फादर इज़ अफ्रेड ऑफ वॉटर* (पापा को पानी से डर लगता है) को दिया गया। यह फिल्म अल्ज़ाइमर रोग से पीड़ित एक

पुरस्कार विजेता फ़िल्मों की टीम, प्रभात चित्र मंडल के अध्यक्ष किरण वी शांताराम (दाएँ से दूसरे स्थान पर बैठे), सचिव संतोष पाठारे (दाएँ से तीसरे स्थान पर बैठे) और क्लब अध्यक्ष सुनीता जैन (बाएँ बैठी) के साथ।

बुज़ुर्ग व्यक्ति के मार्मिक विषय पर आधारित है। निर्देशक के निजी अनुभव से प्रेरित इस समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म में, वह अपने पिता की जीवन के अंतिम दो वर्षों में देखभाल करते हैं, जो अल्ज़ाइमर से जूझ रहे होते हैं। यह फिल्म देखभाल की चुनौतियाँ, पिता की धुंधली होती यादों, बेटे और पिता के बीच के बंधन और एक फिल्म निर्माता के रूप में अपने काम के साथ-साथ देखभाल की ज़िम्मेदारी निभाने की दुविधा को दर्शाती है। इस फिल्म को विभिन्न फिल्म समारोहों में मान्यता प्राप्त हुई है।

स्मृति लोप की जटिलताओं, मानव मन की नाज़ुकता और देखभाल के भावनात्मक बोझ को गहराई से दर्शाने के लिए इसे सराहा गया है। *नॉर्थईस्ट फ़िल्म जर्नल* के एक लेख में लिखा गया है, क्षणभंगुर पलों की सुंदरता और स्मृति के क्रमिक क्षरण को दर्शाने के लिए सिनेमैटोग्राफी की प्रशंसा की जाती है।

माय फादर इज़ अफ्रेड ऑफ़ वाटर *के एक दृश्य की झलक।*

इस फ़िल्म समारोह में प्रदर्शित एक और दिलचस्प फ़िल्म, कई दशक पहले के उस समय के एक सामाजिक मुद्दे पर आधारित थी, जब एक भारतीय गाँव में लड़कियों को सिनेमा हॉल में जाने की अनुमति नहीं थी। इसकी कहानी उस गाँव में एक नई फ़िल्म की रिलीज़ और एक लड़के द्वारा एक लड़की को थिएटर तक पहुँचने में मदद करने के बारे में थी।

इस अनोखे महोत्सव ने 27 उत्कृष्ट लघु फिल्मों को आकर्षक विषयों के साथ एक मंच पर प्रस्तुत किया।

भारत भर के उभरते फिल्म निर्माताओं द्वारा बनाई गई फिल्मों का प्रदर्शन विभिन्न स्थानों पर किया गया, जिसका समापन और पुरस्कार समारोह 1 जून को आयोजित किया गया। रो ई मंडल 3142 के निवर्तमान डीजी दिनेश मेहता, प्रभात चित्र मंडल के अध्यक्ष किरण वी. शांताराम और प्रसिद्ध अभिनेता विकास पाटिल उपस्थित थे। समापन दिवस पर छह चयनित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया और अभिनय, निर्देशन, छायांकन, ध्वनि डिजाइन और पटकथा के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए।

पेजारकर ने कहा कि क्लब के सदस्य इस बात से खुश हैं कि वे इन युवा और उभरते निर्देशकों और अभिनेताओं के लिए कुछ चर्चा का माहौल बनाने में सफल रहे। साथ ही, उन्हें यह भी एहसास हुआ कि इन उच्च-गुणवत्ता वाली लघु फिल्मों को देखने के लिए आमंत्रित दर्शक अच्छे सिनेमा के प्रति अधिक समझ और जानकारी रखते थे। ''यह हमारे क्लब का इस तरह का पहला प्रयास था, और अगली बार हम उम्मीद करते हैं कि आम जनता को अच्छी फिल्में देखने के लिए प्रेरित करने हेतु एक बड़ा मंच और अधिक विस्तृत आयोजन करेंगे।''

क्लब अध्यक्ष सुनीता ने क्लब के भीतर और बाहर के उन सभी लोगों का धन्यवाद किया, जिन्होंने इस पहल को सफल और यादगार बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने कहा, ''क्लब आने वाले वर्षों में ऐसे और भी सार्थक और रचनात्मक अनुभव आयोजित करने के लिए प्रतिबद्ध है - रोटरी की कलात्मक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तक पहुँच का विस्तार करते हुए, युवाओं को सशक्त बनाते हुए, प्रतिभाओं को निखारते हुए और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हुए।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

कक्षा से धान के खेत तक

जयश्री

कौन कहता है कि सीखना सिर्फ़ कक्षाओं में ही होता है? कर्नाटक के बेलूर मंडल के गेंडेहल्ली गाँव के सरकारी स्कूल के छात्रों के एक समूह ने, पैंट और आस्तीन ऊपर चढ़ाकर, उत्सुकता से भरी आँखों के साथ, अपनी स्कूल डेस्क छोड़कर धान के खेतों में दिन बिताने का फ़ैसला किया। यह सब रोटरी क्लब कॉफ़ीलैंड चिकमंगलूर, रो ई मंडल 3182 की एक अनोखी पहल की बदौलत संभव हुआ।

क्लब की व्यावसायिक सेवा निदेशक सुधा एच डी ने कहा, ''हमने यह कार्यक्रम बच्चों को खेती की खुशियों और चुनौतियों से परिचित कराने, किसानों की कड़ी मेहनत की कद्र करने और प्रकृति व खाद्य स्रोतों के साथ उनका गहरा जुड़ाव बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया है।'' इस गहन शिक्षण कार्यक्रम के लिए, उन्होंने 36 छात्रों और 37 रोटेरियन और एन्स की एक टीम का नेतृत्व करते हुए चिकमंगलूर से 15

स्कूल के छात्र धान की रोपाई करना सीखते हुए।

रोटरी क्लब कॉफीलैंड चिक्कमगलूरु के सदस्य धान की खेती में हाथ आज़माते हुए।

किलोमीटर दूर स्थित एक हरे-भरे, मनोरम गाँव, अल्दुर पुरा का दौरा किया।

किसान अपने उत्साही मेहमानों को खेती की बारीकियाँ सिखाने में खुश थे। बच्चे और बड़े नंगे पाँव कीचड़ भरे खेतों में उतरे और खुले आसमान के नीचे अपने पहले चावल के पौधे रोपने के लिए उत्साहित थे।

''मैंने ऐसे दृश्य सिर्फ़ फ़िल्मों में ही देखे और उनका आनंद लिया है, लेकिन जब मैंने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया, तो मुझे एहसास हुआ कि चिलचिलाती धूप में, कीचड़ से सने पैरों और हाथों के साथ खेतों में काम करना कितना मुश्किल होता है। मैं अपने किसानों की सच्ची कद्र करती हूँ; मैंने और मेरे दोस्तों ने संकल्प लिया है कि आगे से हम अन्न की बर्बादी नहीं करेंगे। अब हम चावल के एक-एक दाने को बनाने में लगने वाली कड़ी मेहनत को समझते हैं,'' कक्षा सात की छात्रा वाणी गौड़ा ने कहा।

क्लब के सचिव एम. आनंद ने टीम को एशिया में धान की खेती की प्राचीन जड़ों और भारत की खाद्य सुरक्षा में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जानकारी दी। उन्होंने जलवायु परिवर्तन से लेकर जंगली जानवरों के आक्रमण तक, किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, ''हमारा उद्देश्य युवाओं में कृषि के प्रति सम्मान पैदा करना था, क्योंकि यह एक महान और महत्वपूर्ण पेशा है, और उन्हें अपने खाने की कीमत समझाना था। ''

दोपहर में, मेहमानों को सुधा और एन श्रेया नागेश द्वारा विशेष रूप से तैयार किया गया असली मलनाड व्यंजन गाँव में पेड़ों की छाँव तले परोसा गया। वाणी ने कहा, ''हमने भोजन और माहौल का भरपूर आनंद लिया। ऐसा लगा, जैसे हम किसी अलग ही युग में पहुँच गए हों।''

क्लब के अध्यक्ष नागेश केंजीगे और पूर्व सहायक गवर्नर बी के गुरुमूर्ति ने इस पहल को पूर्ण समर्थन दिया।

सरकारी स्कूल की शिक्षिका, सुधा, इस कार्यक्रम को और आगे बढ़ाने की योजना बना रही हैं। आने वाले महीनों में, वह छात्रों को इस क्षेत्र की प्रमुख फसलों, कॉफ़ी और काली मिर्च की खेती से परिचित कराने की उम्मीद करती हैं। साथ ही, वह उन्हें चन्नपटना के खिलौनों के निर्माण और प्रिंटिंग प्रेस के कामकाज की भी जानकारी देंगी। मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा, ''कभी-कभी सीखने का सबसे अच्छा तरीका पाठ्यपुस्तक से नहीं, बल्कि ज़मीन से ही होता है।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

मणिपाल में रोटरी का डेंगू विरोधी अभियान

वी मुत्तुकुमारन

जून 2024 में नवनिर्वाचित क्लब अध्यक्षों और मंडल नेताओं के लिए आयोजित किए गए रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट में अपने दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान रोटरी क्लब मणिपाल हिल्स, रो ई मंडल 3182 की सुपर्णा शेट्टी को पता चला कि यदि किसी परियोजना का विषय दोनों पक्षों की रुचियों से मेल खाता हो तो रोटरी एक्शन ग्रुप क्लबों की सेवा परियोजनाओं और सामुदायिक पहलों को वित्त पोषित कर रहे हैं। उस समय (जून-जुलाई) मणिपाल में डेंगू का प्रकोप अपने चरम पर था, जहाँ पांच लाख की आबादी वाले इस क्षेत्र में मच्छर जनित बीमारियों के मामले तेजी से बढ़ रहे थे।

जुलाई 2024 में जब सुपर्णा क्लब अध्यक्ष बनीं तो प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के डॉक्टरों ने उनसे संपर्क किया और कहा कि डेंगू के खिलाफ लड़ाई में समुदाय को जागरूक करने के लिए पंपलेट और जागरूकता सामग्री के वितरण में मदद चाहिए। डॉक्टरों की इस आपातकालीन अपील ने सुपर्णा को सोचने पर मजबूर किया... ''मैंने गूगल किया और पाया कि रोटेरियन अगेंस्ट मलेरिया ग्लोबल (RAMG) नामक एक वर्चुअल RAG नेटवर्क है जो दुनिया के अनेक हिस्सों में मच्छर जनित बीमारियों से लड़ रहा है। मैंने अमेरिका में रह रहे RAMG के सचिव डॉ जेन पारेर को ईमेल किया और पूछा कि क्या वह डेंगू के खिलाफ संयुक्त लड़ाई में हमारे क्लब के साथ साझेदारी करने में रुचि रखते हैं, क्लब की आईपीपी याद करती है।

तीन घंटे के भीतर डॉ पारेर ने उनके ईमेल का जवाब दिया और तब से उनके और RAMG की अमेरिकी टीम के साथ लगातार संवाद चलता रहा जिसके कारण आखिरकार फरवरी-जून 2025 से पांच महीने के डेंगू विरोधी अभियान के लिए अनुदान के रूप में 2,500 डॉलर की मंजूरी मिली, जिसने मणिपाल में 15,000 से अधिक लोगों के जीवन को प्रभावित किया।

बहुआयामी अभियान

स्कूलों, कॉलेजों, पीएचसीयों, जिला स्वास्थ्य अधिकारियों और नगरपालिका अधिकारियों के साथ गठबंधन के माध्यम से, हमने मणिपाल के हर कोने को छुआ। स्वयंसेवकों की हमारी सेना में - एमआईटी, मणिपाल के 150 एनएसएस के लड़के एवं लड़कियाँ, 300 आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी शिक्षक, एमएएचई विश्वविद्यालय से सामुदायिक चिकित्सा विभाग के कर्मचारी, 32 स्वास्थ्य अधिकारी और हमारे क्लब के 15 रोटेरियन - शामिल थे, जिसने शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (यूपीएचसी, मणिपाल) के नौ वार्डों में घर-घर जाकर फ्लायर्स

ऊपर: मणिपाल के आईटीआई प्रगति नगर में स्कूल और कॉलेज छात्रों द्वारा आयोजित एंटी-डेंग्यू वॉकाथॉन।

दाएँ: रोटेरियनों और आमजन द्वारा मणिपाल झील के आसपास आयोजित मासिक स्वच्छता अभियान।

नीचे: रोटरी क्लब मणिपाल हिल्स की आईपीपी सुपर्णा शेट्टी बच्चों को स्वच्छ और स्वास्थ्यकर वातावरण की आवश्यकता पर प्रेरक संबोधन देती हुईं।

वितरित किए और संवेदनशील परिवारों को डेंगू से बचाव के प्रति जागरूक किया, सुपर्णा बताती हैं।

हर महीने के दूसरे रविवार को स्वयंसेवकों ने सार्वजनिक नालियों की सफाई की, सड़कों पर फैली गंदगी और कचरे को हटाया और मच्छर जनित बीमारियों से बचाव के लिए "क्या करें और क्या न करें' वाले फ्लायर्स बांटे। हमने डेंगू के खिलाफ अपनी लड़ाई में प्रकृति को अपना सहयोगी बनाते हुए मणिपाल झील के किनारे तुलसी के 250 पौधे, नीम के 50 पौधे और लेमनग्रास के कई पैच लगाए।''

स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े लोगों - जैसे आशा कार्यकर्ता, PHC स्टाफ और आंगनवाड़ी शिक्षक, जो दूरदराज़ के इलाकों में जाकर समुदायों को शिक्षित करते हैं - को ब्लड प्रेशर मशीनें (बीपी एपरेटस), ग्लूकोमीटर और टॉर्च वितरित किए गए। डेंगू से निपटने के उपायों को लेकर मकोड भाषाफ में संदेशों वाले पर्यावरण-अनुकूल साइनबोर्ड भी लगाए गए। हमारे पांच महीने के अभियान के दौरान अंग्रेजी और कन्नड़ में 10,000 से अधिक हैंडबिल वितरित किए गए; और उडुपी जिला आयुक्त के विद्या कुमारी द्वारा दो रैलियों को हरी झंडी दिखाई गई। प्रत्येक वॉकेथॉन में लगभग 300 स्वयंसेवकों ने भाग लिया, जो डेंगू के खिलाफ तख्तियाँ और बैनर लेकर चले, सुपर्णा बताती हैं। मलेरिया और डेंगू के प्रति संवेदनशील झुग्गी बस्तियों और संवेदनशील क्षेत्रों में परिवारों को ₹50,000 की दवा किटें वितरित की गईं।

विश्व शांति और सद्भावना दिवस (23 फरवरी) के मौके पर एक मोटर रैली का आयोजन किया गया, जिसे एसपी कुमार चंद्रा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस रैली में 100 रोटेरियनों और रो ई मंडल 3182 के अधिकारी शामिल हुए। जहाँ सुपर्णा और उनकी टीम ने डिजिटल पहुंच के लिए सोशल मीडिया का सहारा लिया, वहीं 120 से अधिक स्कूली छात्रों को भी सप्ताहांत में झुग्गी बस्तियों और संवेदनशील स्थानों में सफाई अभियानों में शामिल किया गया। नाटक, दीवार चित्रकारी और सफाई अभियानों के माध्यम से हमने लोगों तक स्वस्थ जीवन शैली का संदेश पहुँचाया। ठ-चत्र्क की टोपी, स्ट्रीट बैनर और दीवारों पर बनाए गए भित्ति चित्रों के माध्यम से मणिपाल की सड़कों और गलियों में डेंगू विरोधी संदेश फैलाया गया।

सुपर्णा अफ्रीका की एक वैश्विक विकास विशेषज्ञ अकाओमा ओनेमेलुकवे को हमारे डेंगू विरोधी अभियान के लिए हमें RAMG अनुदान दिलाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए धन्यवाद देना चाहती हैं। क्लब के नए अध्यक्ष सुरेश राय ने उन्हें आश्वासन दिया कि प्रत्येक रविवार को स्वयंसेवकों की मदद से होने वाला सफाई अभियान इस वर्ष भी जारी रहेगा, क्योंकि यह संवेदनशील वर्गों में जागरूकता फ़ैलाने से जुड़ा हुआ है। ■

UNITE FOR GOOD

ROTARY CLUB OF VIRUDHUNAGAR IDHAYAM
DIST - 3212

Project Report 2024-2025

No.of Projects - 8 | **Amount Spent - Rs.41,94,800**

Dialysis Treatment

Since 2019, dialysis treatment has been provided to more than 200 beneficiaries. They have availed the service 5,718 times at Jana Clinic, Virudhunagar. We spent ₹. 8,10,000 for dialysis treatment to 200 beneficiaries, 1,722 times in the year 2024-25.

Eye Donation

Since 2009, we have received 965 pairs of eyes as donation. In 2024-25, we spent ₹. 2,64,000 and received 97 pairs of eyes as donation and sent them to Agarwal Eye Hospital, Tirunelveli.

Midday Meal Program

Since 2021, through this program, midday meals has been served to 70 to 80 poor elderly people in Virudhunagar . This noble work is carried out jointly by Rotary Club of Virudhunagar Idhayam and Mr. K.S. Thanarajan. In 2024-25, we spent ₹. 9,90,000 for midday meal Program.

Cleaning of Public Toilet

Since 2020, everyday public toilets have been cleaned at 2 locations in Virudhunagar Main Bazaar. In 2024-25, we spent ₹. 2,37,082.

Heart Care Program

In 2024-25, Heart surgery was done for a 3-year-old baby, success Rahim from Uganda at Amrita Institute of Medical Sciences & Research Centre through Dr. Balaji. We spent ₹. 2,75,000 for this.

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

ADVT.

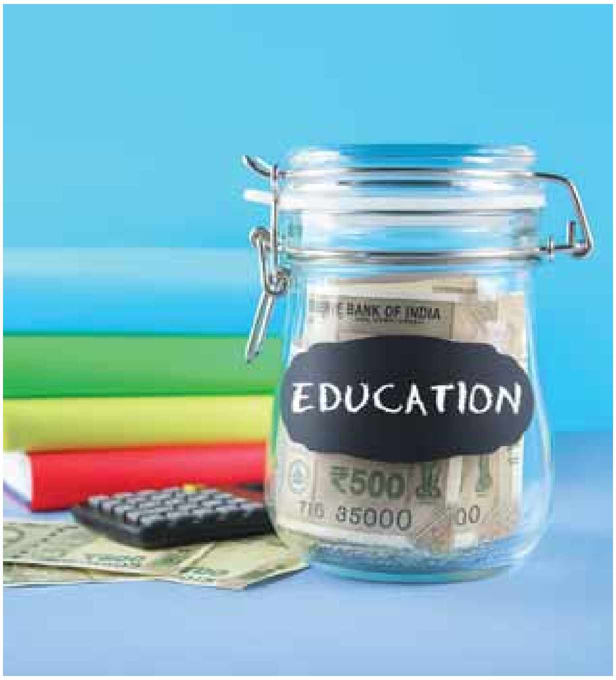

Rotary Karmaveerar Kamarajar Heart Care Bus

In 2024-25, we conducted 2 heart care camps with 285 beneficiaries. 146 ECG tests, 87 ECHO tests done and 19 people were referred to Tirunelveli Kauvery Hospital for further treatment. We spent ₹. 30,250 for this project.

Appreciating Achievers in Sports

We have been recognising school and college students who have achieved in sports in Virudhunagar. So far, 1,415 students have been honoured. In 2024-25, 131 student winners got cash prizes ranging from a minimum of ₹. 400 to a maximum of ₹. 10,000 from us. We spent ₹. 4,32,908 for this.

Providing Academic support funds

Provided financial assistance to students excelling in studies in schools and colleges. In 2024-25, we provided educational scholarships worth ₹. 11,56,370 to 285 students.

LEKHA ads/Sep 25/Inner

सतारा में नवजातों के लिए एक नई सुबह

रशीदा भगत

भारत में जो रोटरी क्लब रो ई को भेजे गए अपने वैश्विक अनुदान आवेदनों की धीमी प्रगति से निराश हैं, उन्हें रो ई मंडल 3132 की पीडीजी स्वाति हेरकल से मार्गदर्शन लेना चाहिए, जो 2025-28 से अपने मंडल की डीआरएफ़सी भी हैं।

मार्च 2025 में, उन्हें महाराष्ट्र के सतारा शहर, जहाँ वह रहती हैं, के सिविल अस्पताल के एक व्यथित डॉक्टर का फोन आया, उन्होंने बताया कि सिविल अस्पताल में नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई (एनआईसीयू) अपनी क्षमता से अधिक भर चुकी है जिसके चलते अधिकतर माता-पिता को अपने समय से पहले जन्मे नवजात शिशुओं को दो घंटे की यात्रा दूरी पर स्थित पुणे के अस्पतालों और यहाँ तक कि मुंबई के अस्पतालों में ले जाने के लिए मजबूर किया जा रहा है।

''उनसे हुई बातचीत और उनके हताश स्वर से मुझे महसूस हो गया कि इस क्षेत्र में एक मौन संकट गहरा रहा है।'' समय से पहले या कम वज़न के साथ जन्मे नाजुक शिशुओं को दूर-दराज़ के शहरों में रेफर किए जाने से न सिर्फ़ क़ीमती समय की बर्बादी हो रही थी बल्कि माता-पिता को मानसिक आघात भी झेलना पड़ रहा था। ये प्रीमैच्योर बच्चे जैसे नागरिक समाज से मदद की गुहार लगा रहे थे, स्वाति कहती हैं जिनका गृह क्लब रोटरी क्लब वाई है, जिसने पहले ही 14 वैश्विक अनुदान परियोजनाएं पूरी कर ली है।

स्वाति ने तुरंत ही इन नवजात शिशुओं की अपने ही शहर में जान बचाने में मदद करने के लिए एक परियोजना की रूपरेखा बनानी शुरू कर दी। जब उन्होंने रोटरी क्लब वेलबीइंग इंटरनेशनल, यूके की सदस्य डॉ उज्जवला चिद्रावर से संपर्क करके पूछा कि क्या रोटरी क्लब वाई के साथ वैश्विक अनुदान के लिए कोई अंतर्राष्ट्रीय साझेदार क्लब सुझाया जा सकता है,

तो डॉ चिद्रावर ने कहा: हम ही आपके साझेदार बनना चाहेंगे। आखिर हमारा क्लब एक उद्देश्य-आधारित क्लब है और हमारे नाम में ही 'वेलनेस' (कल्याण) शामिल है!

ब्रिटेन के इस डॉक्टर के पति डॉ मुकुंद चिद्रावर स्वाति के बैचमेट गवर्नर थे और इससे पहले उनके क्लब रोटरी क्लब वाई ने उनके साथ मिलकर एक वैश्विक अनुदान परियोजना की थी जिसके तहत कैंसर की जांच और जागरूकता के लिए एक वैन उपलब्ध करवाई गई थी। अब तक वैश्विक अनुदान प्रस्ताव लिखने में विशेषज्ञ बन चुकी स्वाति कहती हैं,

''हमारे क्लब के 14 वैश्विक अनुदान परियोजना के सभी प्रस्ताव मैंने खुद लिखे हैं।'' उन्होंने तेजी से एक वैश्विक अनुदान प्रस्ताव तैयार किया जिसमें रो ई मंडल 3132, 1210, 1220, 1240 और 1080 के साथ साझेदारी थी और जिसे द रोटरी फाउंडेशन का भी समर्थन मिला। इस परियोजना का उद्देश्य था: ''सातारा के सरकारी सिविल अस्पताल में NICU को सशक्त बनाना ताकि समय से पहले जन्मे नवजातों की ज़िंदगियाँ बचाई जा सकें।''

स्वाति कहती हैं कि यह प्रस्ताव लिखना मुश्किल नहीं था क्योंकि लक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट था: नवजात शिशुओं, खासकर आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आने वाले बच्चों को अत्याधुनिक, जीवनरक्षक और नि:शुल्क चिकित्सकीय सहायता प्रदान करना। और NICU (नवजात गहन चिकित्सा इकाई) को इस प्रकार सुसज्जित करना कि वह एक आधुनिक और उच्च-स्तरीय सुविधा बन जाए जिसमें वेंटिलेटर, वार्मर, इनक्यूबेटर, मॉनिटर, इनफ्यूज़न पंप और फोटोथेरेपी इकाइयाँ शामिल है... वे सभी महत्वपूर्ण उपकरण जो इसे अत्याधुनिक सुविधा में बदलने के लिए आवश्यक है।

सबसे संतोषजनक बात यह थी कि अब परिवारों को अपने नन्हें अनमोल शिशुओं को बचाने के लिए पुणे या मुंबई जैसे दूर-दराज़ के शहरों में भटकना नहीं पड़ेगा - इस परियोजना के पूर्ण होते ही अब उन्हें जो भी मदद चाहिए होगी वो उनके अपने शहर में चंद मिनटों की दूरी पर उपलब्ध होगी।

पूरी योजना प्रक्रिया के दौरान स्वाति (जो इस परियोजना की अध्यक्ष हैं) के साथ सरकारी अधिकारी लगातार संपर्क में थे और इस परियोजना को साकार होते देखने के लिए बेहद उत्साहित भी थे। लेकिन स्वाति का यह दृढ़ विश्वास था कि सरकारी अस्पताल में NICU स्थापित करने के लिए रोटरी तभी मदद कर सकती है, जब कुछ बुनियादी और गैर-समझौतावादी शर्तें पूरी हों, जैसे: स्वच्छ, पर्याप्त और

नवस्थापित एनआईसीयू में बेबी वॉर्मर में उपचाररत एक नवजात शिशु।

उपयुक्त स्थान उपलब्ध हो, प्रशिक्षित और अनुभवी नवजात चिकित्सा स्टाफ मौजूद हो और मेडिकल उपकरणों के रोज़मर्रा के उपयोग और सही रख-रखाव की स्पष्ट गारंटी दी जाए।

सौभाग्य से, सतारा सिविल अस्पताल की समर्पित टीम ने इन सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जिससे रोटरी क्लब वाई को इस पहल को आगे बढ़ाने का पूरा भरोसा मिला। वैश्विक अनुदान को एक महीने से भी कम समय में संसाधित और अनुमोदित किया गया। स्वाति, जो वर्तमान में डीआरएफसी हैं और इससे पहले भी कई बार अपने क्लब की ओर से वैश्विक अनुदान प्रस्ताव लिख चुकी हैं, कहती हैं: इसका असली मंत्र है: प्रस्ताव को स्पष्ट और पारदर्शी ढंग से लिखना, रो ई की संभावित आपत्तियों या सवालों की पहले से ही कल्पना करके उनका जवाब प्रस्ताव में ही दे देना!

उद्घाटन समारोह में जहाँ रो ई मंडल 3132 के डीजी सुधीर लातूरे, पीडीजी डॉ ओमप्रकाश मोतीपावले, सिविल सर्जन डॉ युवराज कार्पे, स्वाति और अन्य रोटेरियन एवं स्वास्थ्य अधिकारी उपस्थित थे वहीं जिला परिषद की सीईओ यशश्री नागराजन ने कहा, रोटरी सिर्फ बुनियादी ढांचा प्रदान नहीं करती – यह जीवन बदलती है। उनका निरंतर फॉलो-अप और लाभार्थियों के साथ मानवीय जुड़ाव ही असली परिवर्तन लाता हैं। आभार व्यक्त करते हुए डॉ कार्पे ने इस परियोजना को एक सच्चा सामुदायिक उपहार कहा – जो अनगिनत नवजात शिशुओं की जान बचाएगा। डीजी लातुरे ने कहा, ''रोटरी टीआरएफ के माध्यम से चमत्कार कर सकती है। यह परियोजना मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार लाने के हमारे मिशन में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।''

इस पूरी यात्रा के बारे में बात करते हुए स्वाति भावुक हो गईं। पिछले कुछ हफ्तों में उन्होंने समय से पहले जन्मे शिशुओं के माता-पिता का दर्द और सिविल अस्पताल के NICU स्टाफ का संघर्ष नजदीक से देखा था। यह NICU सिर्फ एक चिकित्सा इकाई नहीं बल्कि नवजातों के लिए जीवन द्वार है; ऐसे प्रभावशाली क्षणों के साथ रोटरी में सेवा करना अधिक सार्थक हो जाता है।

स्वाति इस ओर ध्यान दिलाती हैं कि भारत के कई सरकारी अस्पतालों में ऐसी बुनियादी सुविधाएँ ही नहीं हैं जो खासकर गरीब परिवारों के समय से पहले जन्मे शिशुओं की जान बचा सकें और इस वजह से उन्हें उस नुक़सान के दर्द से गुजरना पड़ता हैं जिसे रोका जा सकता था। इस अस्पताल में केवल 10 वार्मर थे – जबकि वास्तव में यहाँ 35 की आवश्यकता रहती है – कई बार आपात स्थिति में जब स्टाफ के सामने यह कठिन विकल्प होता है कि किसी एक बच्चे को ही बचाया जा सकता है तो उन्हें मजबूरी में एक ही वार्मर में दो नवजातों को रखना पड़ता है – जो चिकित्सीय रूप से नहीं किया जाना

चाहिए। लेकिन जब एक नन्हीं जान को बचाने की बात हो तो यह निर्णय लेना बेहद कठिन हो जाता है। हमने जो उपकरण प्रदान किए उनके ज़रिए अब NICU में 14 और समयपूर्व नवजातों को समायोजित किया जा सकता है।

54,253 डॉलर के अपने वैश्विक अनुदान के माध्यम से रोटरी ने इस अस्पताल को वेंटिलेटर, जो इसके पास नहीं थे के साथ 10 अतिरिक्त वार्मर और अन्य महत्वपूर्ण उपकरण प्रदान किए। इस परियोजना की सबसे भावनात्मक बात यह रही कि हमारे क्लब की कुछ महिला रोटेरियनों और ऐन्स ने आपस में मिलकर इस परियोजना के लिए ₹61,000 का योगदान दिया। यह राशि भले ही छोटी हो लेकिन उनका उत्साह और भावना बड़ी थी – क्योंकि यह एक ऐसे उद्देश्य के लिए था जो नन्हीं जानों को बचा सकता है, पीडीजी आगे कहते है।

सभी चिकित्सा उपकरण भारत से ही खरीदे गए और विक्रेताओं ने अस्पताल के स्टाफ को इस उपकरण के उपयोग के लिए समुचित प्रशिक्षण भी दे दिया है। हमने पहले ही उनसे यह सुनिश्चित कर लिया है कि वे अगले तीन वर्षों तक इन उपकरणों के रखरखाव की जिम्मेदारी लेंगे।

दिल छू लेने वाला पल

स्वाति एक भावुक क्षण को याद करते हुए बताती हैं कि औपचारिक उद्घाटन से ठीक दो दिन पहले इस अस्पताल में एक गंभीर रूप से बीमार नवजात को भर्ती

हमारे क्लब की महिला रोटेरियनों और ऐन्स के एक समूह ने एकजुट होकर इस परियोजना के लिए ₹61,000 का योगदान दिया। राशि भले ही कम हो, लेकिन वे ऐसे उद्देश्य में सहयोग करने के लिए उत्सुक थीं, जो नन्हीं जिंदगियाँ बचा सकता है।

पीडीजी स्वाति हेरकल

NICU में अपने नवजात शिशुओं के साथ माताएँ।

किया गया। बच्चों के चिकित्सा विभाग की एक सदस्य ने उन्हें संकोच करते हुए फोन किया और पूछा: क्या हम इस नए वेंटिलेटर का अभी इस्तेमाल कर सकते हैं? इससे उस बच्चे की जान बच सकती है। स्वाति ने बिना एक पल गंवाए जवाब दिया: अगर यह मशीन उस बच्चे की जान बचा सकती है तो तुरंत ही इसका इस्तेमाल कीजिए!

और यही हुआ – वह नवजात उस उपकरण का पहला लाभार्थी बना और उसने रिबन कटने से पहले ही प्रतीकात्मक रूप से इस NICU का उद्घाटन कर दिया!

मानना पड़ेगा कितनी तेजी से काम हुआ; अगले ही दिन जब क्लब के सदस्य NICU पहुंचे तो सभी दस वार्मर पूरी तरह से उपयोग में थे, हर एक में एक नन्हीं जान आराम कर रही थी। जो लोग वहाँ थे उनकी आंखों में आँसू आ गए – वो आँसू थे करुणा, संतोष और रोटरी की जीवंत भावना के। उनमें से एक बच्चा इतना छोटा था कि वह किसी के हाथ की हथेली में ही आसानी से आ सकता था। उसके पैर उंगलियों से भी पतले थे और वह शांति से लेटा हुआ था क्योंकि मशीन धीरे-धीरे सांस लेने में उसकी मदद कर रही थी, पूर्व गवर्नर कहती है।

कुछ दिन पहले ही सिर्फ 800 ग्राम वजन वाले एक नवजात को भर्ती कराया गया था। अब उसका वजन बढ़कर 950 ग्राम हो गया है। यह परिवर्तन बाल चिकित्सा डॉक्टरों और नर्सों के अथक समर्पण और रोटरी द्वारा दान किए गए जीवन रक्षक उपकरणों से संभव हुआ। इसलिए हमने इस विशेष सरकारी अस्पताल को चुना।

पीडीजी डॉ मोतीपावले भावुक होकर कहते हैं, मैंने जितने भी सरकारी अस्पताल देखे है वहाँ मैंने शायद ही कभी इतनी स्वच्छता और प्रतिबद्धता देखी हो। यहाँ के सीईओ और सिविल सर्जन से मिला सहयोग वास्तव में असाधारण है।

स्वाति ने अपने क्लब के सदस्यों – प्रमोद शिंदे, डॉ मनोहर दातार, मदन पोरे, डॉ जितेंद्र पाठक, कुणाल शाह (क्लब अध्यक्ष) और अनुपम गांधी (सचिव) – को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस परियोजना में अपना असाधारण सहयोग दिया। अंतर्राष्ट्रीय सहयोगी डॉ उज्ज्वला चिद्रावर और उनके पति, पीडीजी डॉ मुकुंद ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा हमें गर्व है कि हम इस परियोजना का हिस्सा बनें जो अनगिनत नवजातों को नया जीवनदान देगी। रोटरी क्लब वाई के साथ बार-बार काम करना हमारे लिए हमेशा एक संतोषजनक और प्रेरणादायक अनुभव रहा है।

जिला परिषद की सीईओ यशश्नि नागराजन के अनुरोध पर रोटरी क्लब वाई मानव दूध बैंक स्थापित करने के लिए रोटरी क्लब मिलफोर्ड, अमेरिका के साथ साझेदारी में 37,000 डॉलर के एक और वैश्विक अनुदान को निष्पादित कर रहा है। ■

पीआरआईडी अशोक महाजन (बाएँ) महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे (दाएँ) के साथ प्रेस मीट को संबोधित करते हुए।

Rotary PEOPLE OF ACTION

गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के खिलाफ लड़ाई

टीम रोटरी न्यूज़

मुलुंड के रोटरी क्लब ने ठाणे के कोरेस अस्पताल में आयोजित एक बड़े पैमाने पर सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग कैंप के माध्यम से सैकड़ों वंचित महिलाओं में कैंसर के उपचार और रोकथाम के प्रति जागरूकता फैलाई। इस कैंप में मुफ़्त स्क्रीनिंग, स्त्री रोग संबंधी परामर्श और अल्ट्रासाउंड सेवाएँ प्रदान की गईं, जो आमतौर पर इन महिलाओं की पहुँच से बाहर होती हैं।

पूर्व रो ई निदेशक अशोक महाजन ने कहा, ''लेकिन सिर्फ चिकित्सा देखभाल से अधिक, इस दिन ने इन महिलाओं को गरिमा और सम्मान प्रदान किया, और उन्हें याद दिलाया कि उनका स्वास्थ्य और कल्याण वास्तव में मायने रखता है।''

शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने किया। उन्होंने आगे कहा, ''हमारे क्लब के सदस्यों के लिए, यह शिविर सिर्फ़ बीमारी का निदान करने तक सीमित नहीं था - यह मूक संघर्षों को आवाज़ देने और उन वंचित महिलाओं तक पहुँचने का प्रयास था जो अक्सर हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की खामियों का शिकार होती हैं, और समुदाय-आधारित स्वास्थ्य सेवा की शक्ति में विश्वास बहाल करने का अवसर था।''

इस अवसर पर, रोटरी क्लब मुलुंड ने इस पहल को आगे बढ़ाने के अपने संकल्प को दोहराया, जिसके तहत मुंबई और ठाणे के वंचित क्षेत्रों में इसी प्रकार के शिविर आयोजित किए जाएंगे, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रारंभिक पहचान और उचित देखभाल के मामले में कोई भी महिला पीछे न छूट जाए।

महाजन ने आगे कहा कि रोकथाम के अगले महत्वपूर्ण चरण की ओर बढ़ते हुए, क्लब 9 से 14 वर्ष की वंचित लड़कियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए मुफ़्त एचपीवी टीकाकरण अभियान भी चलाएगा। ''अगली पीढ़ी की रक्षा करके, रोटरी का लक्ष्य पीड़ा के इस चक्र को शुरू होने से पहले ही तोड़ना है। लेकिन आदित्य बिरला कैपिटल के उदार वित्तीय सहयोग के बिना यह सब संभव नहीं होता, जिनकी साझेदारी ने इस जीवन-परिवर्तनकारी पहल को साकार किया। उनके योगदान ने सैकड़ों लोगों के जीवन को सीधे प्रभावित किया है और आने वाले वर्षों में भी ऐसा होता रहेगा,'' उन्होंने सर्वाइकल कैंसर से लड़ने के इस अभियान में शामिल सभी डॉक्टरों, नर्सों और स्वयंसेवकों का धन्यवाद करते हुए कहा। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

महाराष्ट्र के गांवों को मिले हैप्पी स्कूल

जयश्री

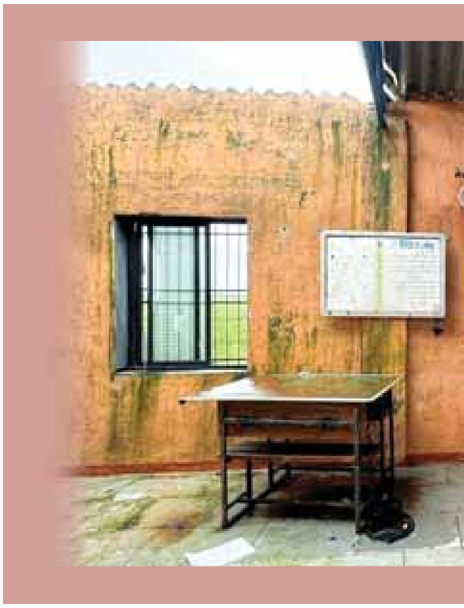

महाराष्ट्र के शहापुर और मुरबाद तालुकों के आदिवासी इलाकों में स्थित पंद्रह जिला परिषद स्कूलों को एक नया रूप दिया गया है। रंग-बिरंगी दीवारों, मरम्मत किए गए बुनियादी ढांचों और मूलभूत सुविधाओं के साथ ये स्कूल बच्चों को पढ़ने के लिए अधिक स्वागत योग्य और बेहतर शैक्षिक वातावरण प्रदान करता हैं। यह परिवर्तन रोटरी क्लब ठाणे नॉर्थ, रो ई मंडल 3142 द्वारा एक साल तक चलने वाली परियोजना का परिणाम है। ''पिछले रोटरी वर्ष की शुरुआत में, हमें साक्षरता पर ध्यान केंद्रित करने के अनुरोध के साथ एक फार्मास्यूटिकल कंपनी, मिलान लैब्स से ₹52 लाख और ₹44 लाख के दो सीएसआर अनुदान प्राप्त हुए। इसलिए हमने इस राशि को उन आदिवासी स्कूलों में लगाने का फैसला किया जिन्हें हमारे समर्थन की तत्काल आवश्यकता थी,'' क्लब की आईपीपी मेधा जोशी कहती हैं।

अपनी टीम के साथ, उन्होंने पूरे क्षेत्र के अनेक स्कूलों का दौरा किया और उन स्कूलों की पहचान की जिन्हें सबसे अधिक आवश्यकता थी। उन्होंने जो हालात देखें वो बहुत ही निराशाजनक थे। ''कुछ स्कूलों के परिसर की दीवारें टूटी हुई थीं, दरवाजे और खिड़कियां गायब थीं, फर्श और बिजली की फिटिंग क्षतिग्रस्त थी और चारों ओर जंगली झाड़ लगे हुए थे। कई बार सांप और अन्य रेंगने वाले जीव कक्षाओं में घुस जाते थे,'' वह याद करती हैं।

एक साल की अवधि में सभी चिन्हित स्कूलों का नवीनीकरण किया गया, स्वच्छ, कार्यशील शौचालयों और हाथों की धुलाई के स्टेशन बनाए गए। जहाँ आवश्यकता थी वहाँ नए फर्नीचर प्रदान किए गए और पुराने फर्नीचर की मरम्मत की गई। सभी स्कूलों में सदस्यों द्वारा दान की गई पुस्तकों के साथ पुस्तकालय स्थापित किए गए।

उद्घाटन समारोह के दौरान क्लब ने छात्रों को यूनिफ़ॉर्म, जूते, स्टेशनरी किट और लंच बॉक्स प्रदान किए। स्कूलों को डस्टबिन और वाटर प्यूरीफायर से भी सुसज्जित किया गया। क्लब ने तीन उच्च माध्यमिक विद्यालयों कक्षा 11 और 12 के छात्रों के लिए विज्ञान प्रयोगशालाएं स्थापित कीं। इस हैप्पी स्कूल परियोजना ने प्रत्येक स्कूल के 50-60 बच्चों को लाभान्वित किया।

जव्हार तालुका के दुंगणपाड़ा गाँव में क्लब द्वारा निर्मित चेक डैम और सौर ऊर्जा चालित पंप प्रणाली।

बाएँः दयनीय स्थिति में एक कक्षा। दाएँः स्कूल का नवीनीकरण करने के बाद रोटरी क्लब ठाणे नॉर्थ की आईपीपी मेधा जोशी, एक आरवाईई छात्रा और एक अध्यापक के साथ।

''ये नवीनीकरण सिर्फ दिखावे के लिए नहीं हैं। उन्होंने सीखने का माहौल पूरी तरह से जीवंत किया है और छात्रों को मूल्यवान महसूस कराया है। इनमें से अधिकांश बच्चे आर्थिक रूप से कमजोर आदिवासी परिवारों से आते हैं। बेहतर जीवन के लिए ये स्कूल ही उनकी एकमात्र उम्मीद हैं,'' वह आगे कहती हैं।

मेधा ने इन स्कूलों में काम करने वाले शिक्षकों की बहुत प्रशंसा की। ''प्रत्येक स्कूल में लगभग 8-10 शिक्षक हैं, जिनमें से कई शहापुर या मुरबाद में पढ़ाने के लिए डोंबिवली, कल्याण या अंबरनाथ से लंबी दूरी की यात्रा करते हैं। वेतन भुगतान में अक्सर देरी होने के बावजूद वे पूरी निष्ठा से काम करते हैं और शायद ही कभी किसी दिन छुट्टी लेते हैं।''

पुनर्निर्मित हैप्पी स्कूलों में जून में शुरू हुए इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान अच्छी संख्या में दाखिले हुए। क्लब जो अब अपने 49वें वर्ष में है पिछले 35 वर्षों से साक्षरता परियोजनाओं पर लगातार काम कर रहा है, विशेष रूप से ग्रामीण, आदिवासी और विशेष जरूरतों वाले स्कूलों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। ''हम छात्रों को स्कूल से जोड़े रखने में मदद करने के लिए बुनियादी ढांचे और शैक्षिक आवश्यकताएं प्रदान करते हैं। हमारे सीएसआर साझेदार मिलन लैब्स भी शिक्षा के विषय को लेकर उतने ही उत्साहित है जितना कि हम हैं,'' वह आगे कहती है।

इस साल क्लब की अध्यक्ष ममता वंजानी का लक्ष्य सीएसआर समर्थन के साथ अधिक हैप्पी स्कूल करने का है।

क्लब ने जल संरक्षण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 77,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान के साथ क्लब ने दो चेक डैम का निर्माण किया और जवाहर तालुक के एक गांव डुंगानीपाड़ा में सौर ऊर्जा संचालित पंप प्रणाली स्थापित की। हमने शुरू में केवल चेक डैम बनाने की योजना बनाई थी लेकिन अमेरिका में हमारे अंतर्राष्ट्रीय साझेदार ने अपना योगदान 62,000 डॉलर से बढ़ाकर 77,000 डॉलर कर दिया; इससे हमें सौर पैनल स्थापित करने में मदद मिली, मेधा कहती हैं। ये सुविधाएं अब पूरे गांव के लिए सिंचाई एवं घरेलू जल आपूर्ति का साधन बनती हैं।

हालाँकि, यह परियोजना बाधा रहित नहीं थी। ''शुरू में कुछ ग्रामीणों ने इस विचार का स्वागत किया जबकि अन्य लोगों ने अपनी ज़मीन खोने का डर जताया, वह याद करती हैं। लेकिन एक बार जब पहला चेक डैम पूरा हो गया और उन्होंने इसका लाभ देखा - बहुत सारा पानी और हरे-भरे खेत - तो दूसरा समूह भी हमारे पास आया और उनकी तरफ भी एक बांध बनाने का अनुरोध किया। आज इन दोनों चेक डैम की वजह से 50 किसान परिवारों में खुशहाली हैं।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सपनों की उड़ान

किरण ज़ेहरा

बस में हलचल हो उठी जब नागपुर से आए सात छात्र-छात्राओं ने खिड़की से बाहर झांककर देखा तो उनके सामने वर्ली सी लिंक फैला हुआ था जिसके दोनों ओर विशाल समुद्र फैला हुआ था। उनमें से एक छात्रा, श्रेया गजबिए ने हैरानी से सोचा ''ये पुल पानी के बीचों-बीच कैसे खड़ा है?''

यह दिन श्रेया गजबिए, राज गौतम, श्रियंश वैद्य, कल्याणी मरबटे, शिवानी भारद्वाज, माहिर शाह और वंश निखारे के लिए बहुत खास था, क्योंकि उन्होंने पहली बार हवाई जहाज से यात्रा की और रोटरी क्लब नागपुर ग्रीन सिटी, रो ई मंडल 3030 की एक परियोजना *सपनों की उड़ान* के अंतर्गत मुंबई में एक रोमांचक दिन बिताया।

यह परियोजना 18 महीने पहले शुरू हुई जब क्लब ने कक्षा 10, 11 और 12 के इन सात छात्रों को गोद लिया और पूरे साल उन्हें किताबें, करियर

क्लब अध्यक्ष चैत्रा सालंकार, क्लब सदस्य पद्मा देठे और मनीषा चौधरी के साथ बच्चे, गेटवे ऑफ़ इंडिया पर।

बच्चे ताज महल पैलेस होटल की केक शॉप में।

काउंसलिंग, मेडिकल जांच और पर्सनैलिटी डेवलपमेंट सत्र के माध्यम से मार्गदर्शन दिया। उन्हें क्लब की बैठकों में भी आमंत्रित किया गया, जिससे उन्हें नए वातावरण का अनुभव मिला, प्रेरणादायक आदर्श व्यक्तियों से मिलने का अवसर मिला और यह समझने का मौका मिला कि पेशेवर व्यक्ति मिलकर कैसे लक्ष्य प्राप्त करते हैं। क्लब ने उनकी भागीदारी के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं और लॉजिस्टिक्स का प्रबंध किया।

इन सभी प्रयासों का समापन मुंबई की एक दिवसीय यात्रा के रूप में हुआ जिसे दिल्ली की बजाय इसलिए चुना गया क्योंकि यह नज़दीक है और इसे 'सपनों के शहर' कहा जाता है। क्लब की अध्यक्ष चैत्रा सालंकर कहती हैं, ''क्लब को लगा कि मुंबई सपनों की उड़ान की भावना के अनुरूप है - बच्चों को केवल एक दिन में एक नई दुनिया देखने का मौका मिला, सुबह उड़ान भरकर गए और रात तक घर लौट आए। हम चाहते थे कि बच्चे उड़ान की रोमांचक अनुभूति करें और उस शहर को देखें जो महत्वाकांक्षा और अवसर का प्रतीक है।''

इस यात्रा की तैयारियाँ कई हफ्ते पहले ही शुरू हो गई थी। क्लब ने हवाई टिकट, भोजन और स्थानीय परिवहन का प्रबंध किया, साथ ही एक ऐसा यात्रा कार्यक्रम भी तैयार किया जिससे छात्रों को सीखने और मनोरंजन का मिश्रण प्राप्त हो - ऐतिहासिक स्थलों से लेकर समुद्र तट तक। सालंकर ने पहले मुंबई जाकर एक विस्तृत सर्वेक्षण भी किया ताकि हर जगह रुकने का समय सुनिश्चित किया जा सके, जिससे बच्चे एक ही दिन में ज्यादा से ज्यादा अनुभव कर सकें, वो भी बिना किसी हड़बड़ी के।

यात्रा के दिन (4 जून) सुबह, सभी छात्र नागपुर एयरपोर्ट पर पहुंचे - एक जैसे मैरून रंग की रोटरी टी-शर्ट्स पहने हुए। ''सुरक्षा जांच के समय मैं घबरा गई थी, शिवानी भारद्वाज कहती हैं। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि हर कोई उसी प्रक्रिया से गुजर रहा है और इससे मुझे सहज महसूस हुआ।''

''जब मेरे हाथ में बोर्डिंग पास आया तो मैं अपनी ख़ुशी थाम ही नहीं पा रहा था... मेरे पास उड़ान भरने का टिकट था,'' माहिर शाह कहता है।

श्रियंश वैद्य ने एयर इंडिया क्रू के साथ सेल्फी लेने के लिए जल्दी से अपना फोन निकाला। ''वे हमारे साथ बहुत अच्छे से पेश आ रहे थे मानो हम कोई खास मेहमान हों,'' वह कहता है।

मुंबई पहुंचते ही बच्चे उस शहर के विशाल स्वरूप से चकित रह गए। हवाई अड्डे से बस में बैठकर ''हम उत्साह से ऊंची कांच की इमारतों, अंतहीन लगने वाले फ्लायओवर और पुलों, रंग-बिरंगे बिलबोर्ड्स की ओर देख रहे थे। कुछ बिलबोर्ड्स पर वीडियो विज्ञापन भी थे। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा था। मुझे यह भी नहीं पता था कि पोस्टर भी हिल सकते हैं,'' वंश निखारे कहता है।

''हर तरफ गाड़ियाँ ही गाड़ियाँ थीं - पीली-काली टैक्सियाँ, हाथगाड़ियाँ और वो बड़ी लग्ज़री कारें जिन्हें मैंने अब तक सिर्फ टीवी पर ही देखा था। हमने एक रोल्स-रॉयस को एक छोटी सी चाय की दुकान के पास रुकते हुए भी देखा। जैसे दो अलग-अलग दुनिया एक साथ चल रही हो,'' कल्याणी मरबटे कहती है।

''मुंबई में सबसे पहले हम उन्हें बांद्रा-वर्ली सी लिंक पार करवाकर मरीन ड्राइव ले गए,'' सालंकर बताते हैं। गेटवे ऑफ इंडिया पहुँचकर उन्हें अचानक एक विचार आया कि बच्चों को सड़क के उस पार स्थित ताज महल पैलेस होटल में भी ले जाया जाए। ''यह योजना में नहीं था, लेकिन हम अंदर चले गए। बच्चे झूमर और दुकानों को देखकर हैरान रह गए। केक काउंटर पर उन्होंने 5,000 की कीमत वाला आम का एक केक देखा और वहाँ पर छोटी-छोटी चॉकलेट की कीमत 100 थी।'' केक खरीदना तो बजट में नहीं था लेकिन सालंकर ने उन्हें प्रोत्साहित

करते हुए कहा, ''एक दिन, तुम यहाँ मेहमान बनकर आओगे न कि आज की तरह एक दर्शक बनकर!''

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पर, ''बच्चे भव्य मेहराबों को देखकर दंग रह गए। दोपहर के भोजन के बाद हम तारापोरवाला एक्वेरियम गए जहाँ बच्चों ने चमचमाती आँखों से रंग-बिरंगी मछलियाँ देखीं। आख़िरकार हमने दिन का समापन करते हुए जुहू बीच पर आइसक्रीम खाई और बच्चों ने नंगे पाँव रेत पर दौड़ते हुए हर पल का भरपूर आनंद लिया।''

इस परियोजना की कुल लागत लगभग ₹1.5 लाख थी, जिसे क्लब ने प्रायोजित किया। इसमें हवाई टिकट, स्थानीय परिवहन, भोजन और प्रवेश टिकट शामिल थे। क्लब की सदस्य पद्मा देठे और मनीषा चौधरी के साथ क्लब अध्यक्ष ने भी बच्चों के साथ यात्रा की ताकि उनकी सुरक्षा और आराम सुनिश्चित किया जा सके।

वंश निखरे एयर इंडिया केबिन क्रू सदस्य के साथ सेल्फ़ी लेते हुए।

यात्रा के अंत में, ''बच्चे सिर्फ तस्वीरें ही नहीं बल्कि एक पूरी नई दुनिया के अनुभव की यादें भी लेकर घर लौटे। लेकिन इतनी उत्सुकता और खुशी के बीच उनकी रोज़मर्रा की हकीकत उनका इंतजार कर रही थी। कई माता-पिता हवाई अड्डे के अंदर अपने ऑटोरिक्शा लेकर आने की टिकट तक नहीं खरीद पाए, सलंकर कहते हैं। वह आगे कहते हैं कि बच्चे बिना किसी शिकायत के बस अपने बैग उठाकर अपने माता-पिता से मिलने बाहर चले गए। उनके लिए यह सामान्य बात है। लेकिन उनकी सहनशीलता और सहज स्वीकृति ने मेरा दिल छू लिया।''■

2026 कन्वेंशन

यह प्रचार वास्तविक है!

अगर आप कभी रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में नहीं गए हैं, तो आपके मन में यह सवाल उठ सकता है कि क्या यह वैश्विक सम्मेलन वाकई में उतना ही मज़ेदार है जितना इसके बारे में कहा जाता है - यानी कि यह अब तक के किसी भी सम्मेलन से ज़्यादा मज़ेदार होता है। आपके साथी सदस्य आपको आश्वस्त करने के लिए यहाँ हैं कि 13-17 जून को ताइपे में होने वाला यह कन्वेंशन इस दावे को सच साबित करेगा: यहाँ आपको सीखने, यात्रा करने, व्यक्तिगत विकास करने और जुड़ाव महसूस करने के बेहतरीन अवसर मिलेंगे। रोटरी कन्वेंशन इन पाँच तरीकों से अपनी परंपरा को तोड़ता है:

- **मुख्य मंच पर धूम मच जाती है।** यह ख़ास तौर पर तब होता है जब मशहूर बैंड परफ़ॉर्म करते हैं। रोज़ाना बड़े-बड़े ग्रुप सेशन में कलाकारों, प्रेरक कहानियों वाले सदस्यों और स्टार पावर वाले वक्ताओं की भरमार होती है।
- **सीखने की कार्यशालाएँ मज़ेदार होती हैं।** उबाऊ व्याख्यानों को भूल जाइए - ब्रेकआउट सत्रों का संचालन आपके रोटरी मित्रों और रो ई के मिशन के प्रति समर्पित विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है। ये सत्र आपकी ऊर्जा को पुनः जागृत करते हैं और आपकी सेवा को प्रेरित करते हैं।
- **नए सदस्य इसके लाभों को महसूस करते हैं।** यह केवल क्लब के अधिकारियों या वरिष्ठ सदस्यों की राय नहीं है, सभी मानते हैं कि यह कार्यक्रम मूल्यवान है और नई दोस्तियों की गारंटी देता है। हम इसे अक्सर सुनते हैं: जब आप किसी सम्मेलन का अनुभव करते हैं, तब आप रोटरी की अंतर्राष्ट्रीय शक्ति को वास्तव में समझते हैं।
- **परिवारों को यह सम्मेलन बहुत पसंद आता है।** रोटरी के वैश्विक टेंट में रिश्तेदारों और यात्रा साथियों का स्वागत है। सभी लोग बड़े मंच पर होने वाले भव्य कार्यक्रमों और हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप की गतिविधियों का आनंद उठाते हैं।
- **आप आराम से रह सकते हैं और बजट के भीतर भी रह सकते हैं।** ताइवान में आस-पास इतने सारे विकल्प होने के कारण, सम्मेलन के बाद छुट्टियों के लिए सैर-सपाटे करना आसान है। सीमित समय की बचत के लिए जल्द ही पंजीकरण कराएँ।

हर तरह के कलाकार सम्मेलन के मंच पर ऊर्जा और उत्साह भर देते हैं।

अधिक जानकारी प्राप्त करें और* convention.rotary.org *पर पंजीकरण कराएं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

अस्थि कैंसर देखभाल के लिए एक रोटरी पहल

जयश्री

रोटरी क्लब कोयम्बटूर मेरिडियन, रो ई मंडल 3206 ने रामकृष्ण अस्पताल, कोयंबटूर के साथ साझेदारी में, *प्रोजेक्ट ब्लॉसम* शुरू किया है, जिसका उद्देश्य बोन सार्कोमा से जूझ रहे रोगियों को सहायता प्रदान करना है। यह एक दुर्लभ प्रकार का कैंसर है, जो सभी कैंसर के मामलों में एक प्रतिशत से भी कम होता है और आमतौर पर 10 से 30 वर्ष की आयु के लोगों को प्रभावित करता है। क्लब के चार्टर अध्यक्ष एस थामिलसेलवन ने कहा, ''हड्डी सार्कोमा आमतौर पर हाथ और पैर की लंबी हड्डियों में उत्पन्न होता है, विशेष रूप से जांघ की हड्डी, पिंडली की हड्डी और ऊपरी बांह में।''

1950 के दशक में, अम्प्यूटेशन अक्सर एकमात्र उपचार विकल्प हुआ करता था। रामकृष्ण इंस्टीट्यूट ऑफ ऑन्कोलॉजी एंड रिसर्च के निदेशक डॉ पी गुहान ने कहा कि आज चिकित्सा प्रगति के चलते अंग-संरक्षण सर्जरी संभव हो पाई है, जहां हड्डी के रोगग्रस्त हिस्से को हटाकर, एंडोप्रोस्थेसिस तकनीक के माध्यम से कस्टम-निर्मित टाइटेनियम प्रत्यारोपण के साथ बदल दिया जाता है। कीमोथेरेपी आगे अंग को संरक्षित रखने में मदद करती है, और बढ़ते बच्चों में, एक एक्सपैंडेबल प्रोस्थेसिस सुनिश्चित करता है कि अंग सामान्य रूप से लंबा होता रहे। हालांकि, लागत अब भी एक बड़ी चुनौती है। प्रोस्थेटिक इम्प्लांट की लागत लगभग ₹2.5 लाख है, जबकि कीमोथेरेपी और विकिरण पर अतिरिक्त ₹2 लाख तक का खर्च आता है।

आर्थिक तंगी के कारण, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के कई रोगी सर्जरी के बाद कृत्रिम अंग न लगवा पाने की स्थिति में स्थायी विकलांगता स्वीकार करने को मजबूर हो जाते हैं। क्लब के चार्टर अध्यक्ष थमिलसेलवन ने कहा, हम इन युवाओं को पूर्ण जीवन जीने में मदद करना चाहते हैं। क्लब ने इस वर्ष 10 मरीजों के लिए लिंब साल्वेज सर्जरी के लिए ₹25 लाख रखे हैं और आगे भी मदद के लिए एक वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन किया है। इस पहल को एटीट्यूड ट्रस्ट द्वारा समर्थित किया गया है, जो एक एनजीओ है, जहां थमिलसेल्वन एक ट्रस्टी है, और कॉर्डन ब्लू प्रॉपर्टीज का समर्थन प्राप्त है। डॉ गुहान, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से 20 रोगियों के इलाज को प्रायोजित किया है, ने क्लब के माध्यम से संदर्भित मरीजों के लिए अस्पताल के शुल्क और डॉक्टरों की फीस माफ करने पर सहमति जताई है।

परियोजना के औपचारिक रूप से शुरू होने से पहले ही, क्लब दो युवा रोगियों के उपचार के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर चुका था। रामकृष्ण अस्पताल के साथ क्लब का संबंध वर्ष 2021 से है, जब उसने मरणासन्न रोगियों के लिए एक धर्मशाला एवं उपशामक देखभाल केंद्र स्थापित करने में मदद की। थमिलसेलवन ने कहा, मेरिडियन में, हम मानते हैं कि कैंसर के बाद भी जीवन है और जीवन के अंतिम चरण में, हमारा उद्देश्य उन लोगों को दर्दमुक्त और आरामदायक बनाए रखना है।

तमिलसेल्वन ने अन्य रोटरी क्लबों को *प्रोजेक्ट ब्लॉसम* से जुड़ने का आमंत्रण दिया। उन्होंने कहा ''क्लब इस कारण के लिए योगदान कर सकते हैं, सी एस आर अनुदान के साथ हमारी मदद कर सकते हैं। रोटेरियन ऐसे मरीजों को भी संदर्भित कर सकते हैं, जिन्हें अंग- निस्तारण सर्जरी की आवश्यकता है, और हम रामकृष्ण अस्पताल में उनकी देखभाल करेंगे।'' ■

कोयंबटूर स्थित रामकृष्णा अस्पताल में प्रोजेक्ट ब्लॉसम का शुभारंभ। दाएँ से दूसरे: रोटरी क्लब कोयंबटूर मेरिडियन के चार्टर अध्यक्ष एस तमिलसेल्वन, अध्यक्ष राधा कृष्णन, एसआर सुंदर (प्रबंध न्यासी, एसएनआर संस चैरिटेबल ट्रस्ट), डॉ पी गुहान (निदेशक, रामकृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ ऑन्कोलॉजी एंड रिसर्च), तथा बिंदु, जो इस परियोजना की लाभार्थी हैं।

एक रथ यात्रा

रशीदा भगत

शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा आदि क्षेत्रों में विभिन्न सरकारों द्वारा कार्यक्रमों को इतनी धीमी गति से चलाया जाता है, जिसकी कहानियाँ प्रचुर मात्रा में सुनने को मिलती हैं। ऐसे में सुब्रतो बागची का यह वर्णन पढ़ना किसी ताज़ी हवा के झोंके जैसा लगता है जिसमें वह बताते हैं कि कैसे उन्होंने 2016 में तत्कालीन मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के आमंत्रण पर ओडिशा को कौशल विकास के क्षेत्र में आगे ले जाने की चुनौती को स्वीकार किया।

हमेशा एक अच्छे कहानीकार रहे सुब्रतो बागची अपनी नवीनतम किताब *द डे द चैरियट मूव्ड* में इस किस्से को रोचक प्रसंगों के साथ प्रस्तुत करते हैं कि कैसे उन्होंने ओडिशा के युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देने का काम शुरू किया - वह भी पहले से मौजूद आईटीआई और अन्य सरकारी एवं निजी प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक शिक्षा संस्थानों का उपयोग करते हुए।

अप्रैल 2016 में जब सुब्रतो बागची माइंडट्री के एग्जीक्यूटिव चेयरमैन के पद से सेवानिवृत्त हुए तो उन्होंने आगे की ज़िंदगी किताबें पढ़ने, पढ़ाने, यात्रा करने और परिवार के साथ समय बिताने की योजना बनाई थी। तभी उन्हें भुवनेश्वर से एक फ़ोन आया। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक एक सरल से अनुरोध के साथ लाइन पर थे: ''आइए और हमारे युवाओं के कौशल विकास में मदद कीजिए।'' इसके साथ ही उन्हें ओडिशा स्किल्स डेवलपमेंट अथॉरिटी के अध्यक्ष पद की पेशकश की गई जिसके साथ पूर्ण स्वतंत्रता, कैबिनेट मंत्री का दर्जा और सीधे मुख्यमंत्री को रिपोर्ट करने की जिम्मेदारी भी शामिल थी।

भारत में कौशल की कमी को लेकर गहन अध्ययन करने और चौंकाने वाले आँकड़ों ने ''मुझे आईटी उद्योग की सीमित दुनिया से बाहर निकालकर उस वास्तविक दुनिया में पहुंचा दिया जहाँ करोड़ों युवा किसी भी कारणवश पारंपरिक शिक्षा प्रणाली से बाहर हो गए थे और किसी भी व्यावसायिक कौशल में दक्ष नहीं हो सके - लेकिन उन्हें नौकरी की सख्त ज़रूरत थी। यही लोग वेल्डर, मैकेनिक, प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन, टैक्सी चालक, सुरक्षा गार्ड, मॉल में सेल्स एसोसिएट, हवाई अड्डे पर सफाई कर्मचारी और अस्पतालों में मरीजों की देखभाल करने वाले बने।'' उन्होंने पाया कि प्रशिक्षित श्रमिकों की मांग और आपूर्ति के बीच एक बड़ा अंतर है; यह एक अवसर था इन कुशल श्रमिकों को तैयार करके एक सकारात्मक बदलाव लाने का।

पत्नी सुस्मिता ने हरी झंडी दिखाते हुए कहा - इस अवसर को हाथ से न जाने दीजिए और अपने जन्मस्थान के लिए कुछ कीजिए। इंफोसिस के सह-संस्थापक नंदन निलेकानी ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की सलाह दी लेकिन एक शर्त के साथ - मुख्यमंत्री से हमेशा मनिश्चित और स्पष्टफ संपर्क बना रहे। जब मनमोहन सिंह ने प्रधानमंत्री रहते हुए उन्हें UIDAI (आधार) की शुरुआत करने का निमंत्रण दिया था तब उन्होंने भी यही शर्त रखी थी। साथ ही, निलेकानी ने सलाह दी कि कोई नई भौतिक संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर) न बनाई जाए; ''आपको यह जानकर हैरानी होगी कि सरकार के पास पहले से ही कितनी अधिक संरचना मौजूद है।''

बागची ने पटनायक का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और मंत्री पद के सामान्य ₹20 लाख वार्षिक वेतन के स्थान पर केवल ₹1 वार्षिक वेतन लेने की इच्छा जताई। चार दशकों के कॉरपोरेट जीवन से सरकारी सेवा में उनका यह स्थानांतरण एक व्यापक 30-दिवसीय, 3,000 किलोमीटर की यात्रा से शुरू हुआ, जिसमें उन्होंने ओडिशा के 30 जिलों का दौरा किया। वे बताते हैं कि ओडिशा में सैकड़ों आईटीआई (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) और पॉलिटेक्निक कॉलेज हैं और उतनी ही संख्या में अल्पकालिक कौशल विकास केंद्र भी हैं जो सरकारी व निजी क्षेत्रों द्वारा संचालित किए जाते हैं।

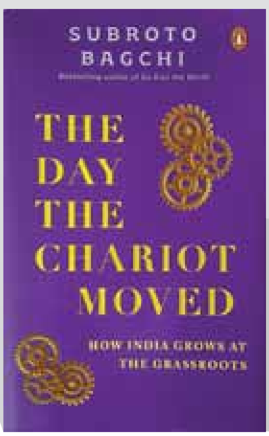

द डे द चैरियट मूव्ड
लेखक : सुब्रतो बागची
प्रकाशक : पेंग्विन बिज़नेस
मूल्य : ₹699

कौशल विकास की कहानी को 'मानवीय रूप' देने के उनके प्रयास, निजी क्षेत्र में दशकों तक काम करने के बाद सरकारी प्रणाली में बदलाव के शुरुआती संघर्ष और अपने मिशन को समझने की उनकी यात्रा, ओडिशा के कौशल विकास रोडमैप में पहले से क्या मौजूद था और उसमें व्यापक रूप से कैसे विस्तार करना है - ये सभी प्रसंग हास्यपूर्ण और विचारोत्तेजक ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं। जब उन्होंने चिलचिलाती गर्मी में ओडिशा के आईटीआई संस्थानों का पहला व्यापक दौरा किया तो इन संस्थानों के प्रधानाचार्य उत्साहपूर्वक उन्हें बताने लगे कि उनके आईटीआई कितने एकड़ ज़मीन पर फैले हैं, उनके पास कितनी लेथ मशीनें हैं और मक्लर्क व चपरासीफ के कितने पद खाली हैं जिन्हें उन्हें भरना चाहिए। तब उन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी आवश्यकता बताई - उन्हें चाहिए थे 10 पूर्व सफल छात्रों के नाम, जिनमें से चार लड़कियाँ हों और साथ ही उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और वर्तमान स्थिति की जानकारी भी। इन दस में से छह छात्र ऐसे हों जिन्होंने ओडिशा के बाहर कोई पहचान बनाई हो और दो ऐसे जिन्होंने अपना खुद का उद्यम शुरू किया हो।

अंकों में जादू होता है। वे चीज़ों को सरल बनाकर उसे सीधा मुद्दे पर ले आते हैं। आप मुझे घंटों कहानियाँ सुनाकर भ्रमित कर सकते हैं लेकिन संख्याएँ शायद ही कभी झूठ बोलती हैं। एक नेता का काम होता है चीज़ों को इतना सरल बनाना कि लोग बकवास, भ्रम और उलझनों से ऊपर उठ सकें। इससे उन्हें नेता की रणनीतिक सोच को समझना आसान हो जाता है। संख्याएँ याद रखना आसान होता हैं और यह बेहद ज़रूरी है क्योंकि लोग किसी नेता का अनुसरण तभी करते हैं जब वे याद रख सकें कि वह क्या चाहते हैं। अंततः आँकड़े किसी भी प्रयास में अगले कदमों को स्पष्ट करते हैं।''

चार लड़कियों के नाम होना बेहद ज़रूरी है ताकि उन्हें आसपास के हाई स्कूलों में दिखाया जा सके जिससे लड़कियों के नामांकन को बढ़ावा मिलेगा। दो सूक्ष्म उद्यमियों के उदाहरणों का उपयोग करके उस संख्या को

कई गुना बढ़ाया जा सकता है। लेखक कहते हैं, अगर हम लोगों को अपने हर कार्य के केंद्र में रखें... जब हम अपने काम में किसी का नाम और चेहरा जोड़ते हैं तो अचानक वह काम प्रेरणादायक, उत्साहवर्धक बन जाता है और तब हमारा कार्य सार्थक हो जाता है।

इस किताब में एक दिलचस्प किस्सा मुनी टिग्गा के बारे में है जो आईटीआई बड़गड़ से प्रशिक्षण लेकर भारतीय रेलवे में एक लोको पायलट के रूप में कार्यरत थीं। जब लेखक उनसे बात करना चाहते थे तो उन्होंने सरकार की ताकत को महसूस किया। अगर सरकार चाहे तो 1.4 अरब की आबादी वाले देश में भी किसी भी व्यक्ति को 10 मिनट के भीतर खोज सकती है। ज़िला प्रशासन और स्थानीय पुलिस को केवल 4-5 फोन कॉल करने की ज़रूरत होती है। मुनी टिग्गा 10 मिनट से भी कम समय में फोन पर मेरे साथ थीं।फ

''उन्हें बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं कौन हूँ, सिवाय इसके कि मैं कोई बड़ा आदमी हूँ जो उनके पुराने आईटीआई का दौरा कर रहा था। उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि उनका संस्थान आज अचानक उनसे संपर्क क्यों कर रहा था।'' मुनी ने उन्हें हिंदी में बताया कि वह मेन भुवनेश्वर स्टेशन पर काम करती हैं और उनका काम इंटरसिटी एक्सप्रेस को खोरदा से पलासा तक खींचकर ले जाना और वापस लाना है।

मुनी उनके सितारों में सबसे चमकदार सितारा बन गईं और राज्य के लिए एक प्रतीक बन गई। ''वह वो दृष्टिकोण बनी जिसके माध्यम से मैंने कौशल विकास और मानव रूपांतरण के बीच का अंतर समझना शुरू किया। छह बहनें, एक भाई, थोड़ी-सी ज़मीन, कुछ गायें और बकरियाँ - यही उनकी दुनिया थी। एक लड़की होने के नाते उनसे स्कूल जाने की अपेक्षा नहीं थी मगर वह स्कूल गई। जब भी उन्हें जानवरों को चराने ले जाना होता तो वे अपनी किताबें साथ ले जाती थीं। वे हाई स्कूल जाने के लिए तैयार थीं, लेकिन गाँव उस समय एक लड़की को पढ़ने और वो भी गाँव से दूर जाने देने के लिए तैयार नहीं था। उन्हें सुबह बहुत जल्दी उठकर कच्चे रास्ते से साइकिल चलाकर स्कूल जाना पड़ता था और जब वह लौटतीं, तब तक अंधेरा हो जाता था - और गाँव की वीरान गलियाँ उन्हें डराती थीं।''

लेकिन उनकी माँ ने उनका हौसला बढ़ाया और वह हाई स्कूल पास कर गई; पिता ने कहा कि अब वह अपनी राह खुद तय करे। फिर वह एक आईटीआई में पहुँची जहाँ उन्होंने लोकोमोटिव पायलट बनने का सपना देखा। प्रशिक्षण के बाद उन्होंने भारतीय रेल की प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा पास करके नौकरी पा ली। ''आप इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि वह एक भारी-भरकम इंजन संभालती है और हर दिन आठ घंटे की शिफ्ट में अच्छे या बुरे मौसम में भी ट्रेन चलाती है। अगर तुलना करें तो हमारे समाज में मर्दानगी की सबसे स्थायी छवि मबुलेट मोटरसाइकिलफ की होती है जिसका इंजन 20 से 47 हॉर्सपावर तक का होता है। इसके विपरीत मुनी जिस इंजन को चलाती है उसकी क्षमता 6,125 हॉर्सपावर की होती है और इसकी अधिकतम रफ्तार 140 से 160 किलोमीटर प्रति घंटे तक जा सकती है। आईटीआई के दो सालों ने उन्हें सिर्फ पैसे और नौकरी देने वाले कौशल नहीं दिए बल्कि एक पहचान भी दी - जो अब कोई उनसे छीन नहीं सकता।''

बागची की कहानी रोचक प्रसंगों से भरी हुई है जो इसे सहज और दिलचस्प बनाती है। उन्होंने ज़मीनी स्तर पर जाकर यह जानने की कोशिश की कि हरियाणा से लेकर तिरुपुर तक सिलाई मशीन ऑपरेटरों की क्या मांग है; उन्हें बताया गया कि ओडिशा में चमड़ा सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त महिलाएं हरियाणा की जूता फैक्ट्रियों में काम कर रही हैं। जब उन्होंने इनमें से एक फैक्ट्री का दौरा किया तो पाया कि वे महिलाएं असल में केवल उन्नत किस्म की रबर चप्पलें बनाने का काम कर रही थीं और वे इतनी दयनीय परिस्थितियों में रह रही थीं कि उनके पास पीने योग्य पानी तक उपलब्ध नहीं था।

उन्होंने पाया कि तिरुपुर का वस्त्र उद्योग मुख्य रूप से ओड़िया मजदूरों पर निर्भर है। ये लोग यहाँ इसलिए काम करते हैं ताकि वे अपने बीमार माता-पिता का इलाज करा सकें, ओडिशा में अपना घर चला सकें और अपनी शादी के लिए कुछ पैसे बचा सकें। ''एक कठोर सत्य यह है कि समाज के निचले तबके के लोगों में एक लड़की लंबे समय तक अविवाहित नहीं रह सकती।'' यह न तो सामाजिक रूप से स्वीकार्य है और न ही सुरक्षित। तिरुपुर में कुछ साल काम करके वह लड़की अपनी शादी के लिए ₹1 लाख तक बचा सकती है... मलेकिन यह तभी संभव है जब यह पैसे उसके पिता की शराब की लत, मां की बीमारी, भाई के नए मोबाइल फोन या दोपहिया की मांग या फिर किसी ऐसे चिटफंड में निवेश से बच जाएँ जो पैसा दोगुना करने का झांसा देते है।

बागची की मुलाकात बसंती प्रधान से भी हुईं जो एक गाँव की लड़की, एक बकरीपालक की बेटी और सात बहनों में तीसरे नंबर पर थी। एक शुरुआती स्तर की सिलाई मशीन ऑपरेटर से धीरे-धीरे एक लाइन सुपरवाइजर बन गईं। उन्होंने बागची को सफलता की सीढ़ी चढ़ने का पाठ पढ़ाया और बीच में एक बार रुककर उनसे यह भी पूछा कि क्या उन्हें इनपुट और आउटपुट का मतलब समझ में आया क्योंकि वह उन्हें सप्लाई चेन लॉजिस्टिक्स समझा रही थीं!

एक और प्रेरणादायक कहानी सुमती नायक की है जिनसे बागची की मुलाकात बेंगलुरु के वेस्टसाइड स्टोर में हुई। उस स्टोर के जनरल मैनेजर ने कहा था कि एक दिन वह मेरा काम संभाल लेंगी। वही कहानी - छोटा गाँव, 10वीं फेल, ट्रेंट द्वारा चुने गए एक कौशल केंद्र से प्रशिक्षित। शुरुआत में वह केवल ओड़िया और थोड़ी बहुत हिंदी बोल पाती थीं लेकिन अब वह अंग्रेज़ी और कन्नड़ दोनों में निपुण हो गई हैं। आखिरकार उन्हें कोयंबटूर के एक नए स्टोर में स्थानांतरित कर दिया गया। उनकी नई नेम टैग पर लिखा था: डिपार्टमेंट मैनेजर।

अपनी भूमिका को गैर-राजनीतिक और निष्पक्ष बनाए रखने की इच्छा रखते हुए उन्होंने विपक्ष के नेता से मुलाकात की ताकि उन्हें अपनी पहली विस्तृत यात्रा और उसके निष्कर्षों के बारे में जानकारी दे सकें। संशय के साथ उन्होंने कहा कि यह बहुत कम और बहुत देर से है। जब शिक्षा प्रणाली ही बिखरी हुई है तो आप क्या ही कर पाएंगे? जब कक्षा 5 का एक बच्चा लिख भी नहीं सकता और कक्षा 9 का बच्चा कक्षा 5 के सरल अंकगणित भी हल नहीं कर सकता। तो ऐसी स्थिति में कौशल विकास कैसे होगा जब ये बच्चे स्कूल तक नहीं जाते? इस व्याख्यान को शांतिपूर्वक सुनने के बाद

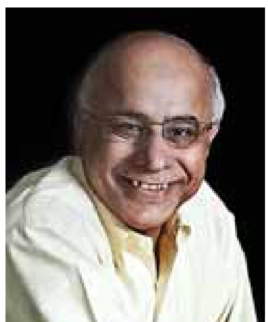

सुब्रतो बागची

बागची ने कहा कि चाहे बच्चा पढ़ना-लिखना जानता हो या नहीं, ''वह बच्चा एक वास्तविकता है। यह मायने नहीं रखता कि गलती किसकी है। अब से, वह बच्चा मेरा बच्चा है।''

इस किताब में अनेक कड़वी सच्चाइयाँ हैं जिन्हें स्वीकार करना मुश्किल है और जो अक्सर आपके दिल को छू जाती हैं। स्कूलों में अच्छा प्रदर्शन न करने वाले वंचित बच्चों को 'बुद्धिमान या होशियार न' कहकर खारिज कर देने के पीछे के कारणों को स्पष्ट करते हुए बागची कहते हैं कि इसका एक अहम कारण है – प्रारंभिक बचपन में कुपोषण के कारण मस्तिष्क का सही ढंग से विकसित न हो पाना। कुपोषण के दो स्पष्ट संकेत हैं – कद में कमी (स्टंटिंग) और वजन में कमी (वेस्टिंग) – जो शरीर की ऊँचाई और वजन को प्रभावित करते हैं। ये दोनों बातें मस्तिष्क के विकास पर गंभीर प्रभाव डालते हैं... और बच्चा ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता, निर्देशों का पालन नहीं कर पाता, चीज़ों को याद नहीं रख पाता, पढ़ने-लिखने के माध्यम से भाषा कौशल विकसित नहीं कर पाता, गणित नहीं कर पाता और तार्किक सोच विकसित नहीं कर पाता। अंततः वह किशोरावस्था में परिस्थितियों का उचित आंकलन नहीं कर पाता और यह निर्णय नहीं ले पाता कि क्या अच्छा है और क्या बुरा।

> आईटीआई में बिताए दो वर्षों ने उसे केवल आय और रोज़गार योग्य कौशल ही नहीं दिए, बल्कि एक ऐसी पहचान भी दी जिसे कोई कभी छीन नहीं सकता। एक कुशल लड़की का अर्थ है ब्रह्मांड को सौंपा गया सामर्थ्य।

ऐसे बच्चे स्कूल में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते और फिर वे स्कूल छोड़ देते है और कभी वापस नहीं लौटते। 2024 के ग्लोबल हंगर इंडेक्स के अनुसार भारत के 35.5 प्रतिशत बच्चे कद में कमज़ोर (स्टंटेड) हैं और 18.7 प्रतिशत बच्चे वजन में कमज़ोर (वेस्टेड) हैं। इस सूचकांक में 127 देशों में से हम 105वें स्थान पर हैं। ऐसे बच्चे कहाँ पढ़ते हैं? ज़ाहिर है, सरकारी स्कूलों में!

सरकार में आठ साल के अपने कार्यकाल के दौरान बागची ने उस सामाजिक व्यवस्था से संघर्ष किया जिसमें कुशल श्रमिकों को पर्याप्त सम्मान नहीं मिलता और यही भावना उनके आत्मसम्मान को कम कर देती है, जिससे उनके लिए आगे के रास्ते और भी बंद हो जाते हैं। यदि आप यूनिकॉर्न कंपनियों – जिनका मूल्य 1 बिलियन डॉलर या उससे अधिक होता है – और नैनो यूनिकॉर्न्स को समझना चाहते है तो यह किताब पढ़ें; जहाँ यूनिकॉर्न कंपनियाँ नौकरियाँ कम कर रही हैं, वहीं नैनो यूनिकॉर्न कंपनियाँ अधिक नौकरियाँ पैदा कर रही हैं।

मई 2024 के चुनावों और सरकार में बदलाव के बाद जब बागची ने पद छोड़ा तो वह खुश हैं कि नई सरकार ने हमारे द्वारा मिलकर किए गए अनेक कार्यों को आगे बढ़ाया है। जैसे कि वर्ल्ड स्किल सेंटर; इसका नैनो यूनिकॉर्न प्रोग्राम अपनाया गया और विस्तारित किया गया। साथ ही, आईटीआई एक संस्था के रूप में फल-फूल रही है, जिसमें भारत के 100 सर्वश्रेष्ठ आईटीआई में से 10 ओडिशा में हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

गतिशीलता और आजीविका सहायता

टीम रोटरी न्यूज़

छात्रों को साइकिलें प्रदान करने के बाद आरआई निदेशक एम मुरुगानंदम और उनके दाहिनी ओर डीजी नम्रता।

रोई निदेशक एम मुरुगानंदम ने 21 स्कूली छात्रों को साइकिलें और एक दिव्यांग लाभार्थी सहित चार महिलाओं को हाथगाड़ियाँ वितरित कीं, ताकि उन्हें आय के अवसर प्राप्त करने में मदद मिल सके। ये सुविधाएँ रोटरी क्लब ऑफ चाणक्य, रोई मंडल 3250 द्वारा प्रदान की गईं।

क्लब के अध्यक्ष अभिषेक अपूर्व ने कहा, ''हमने उन छात्रों की पहचान की जो स्कूल जाने के लिए लंबी दूरी तय करते हैं, और उन्हें साइकिलें प्रदान कीं गईं। इसी तरह, महिलाओं को ठेले दिए गए ताकि वे स्टॉल लगाकर अपनी आजीविका कमा सकें।''

इस अवसर पर डीजी नम्रता, क्लब सचिव राखी शर्मा, कोषाध्यक्ष आलोक स्वरूप और क्लब के सदस्य उपस्थित रहे। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

भावनगर में बाल देखभाल के 26 वर्ष

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी सेवा केंद्र में एक बच्चे का टीकाकरण।

प्रत्येक रविवार को सुबह 9.30-11.30 बजे तक, गुजरात के भावनगर में स्थित रोटरी सेवा केंद्र एक सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र के रूप में परिवर्तित हो जाता है, जहां 15 वर्ष तक के बच्चों का सुरक्षित, संरचित और वातानुकूलित वातावरण में टीकाकरण किया जाता है।

26 साल पहले, रोटरी क्लब भावनगर ने अपने तत्कालीन अध्यक्ष मनीष कोठारी के नेतृत्व में समुदाय के प्रत्येक बच्चे को सुलभ, विश्वसनीय और सुरक्षित टीकाकरण प्रदान करने के लिए यह केंद्र स्थापित किया था। अब, यह भावनगर और आसपास के क्षेत्रों में बच्चों को सेवाएं प्रदान करने वाले बाल स्वास्थ्य क्लिनिक में बदल गया है।

नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग से मिलने वाली आपूर्ति के साथ सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार अनिवार्य टीके मुफ्त प्रदान करने के अलावा, हम अत्यधिक रियायती दरों पर न्यूमोकोकल, टाइफाइड, इन्फ्लूएंजा, एचपीवी आदि के लिए अतिरिक्त टीके भी देते हैं, वह बताते हैं। हर बच्चे को बाल रोग चिकित्सक के मार्गदर्शन में टीकाकरण कार्ड दिया जाता है।

केंद्र में एक उचित कोल्ड चेन सुविधा है, यह डिस्पोजेबल सीरिंज और सुइयों का उपयोग करता है, और वैश्विक टीकाकरण मानदंडों के अनुरूप एसओपी (मानक संचालन प्रक्रियाओं) का पालन करता है। कोठारी ने कहा, 20 कर्मचारियों, रोटेरियनों एवं रोटरेक्टरों की एक टीम बच्चों और उनके माता-पिता के लिए परेशानी मुक्त अनुभव सुनिश्चित करने के लिए हर रविवार को काम करती है।

हर रविवार, रोटरी केंद्र 250 से अधिक बच्चों का टीकाकरण करता है जो दूरदराज के गांवों और आसपास के शहरों से अपने माता-पिता के साथ आते हैं। रोटरी क्लब सोसाइटी ऑफ भावनगर के सचिव जितेन शाह ने कहा, हम मुफ़्त में लगने वाले अनिवार्य टीकों के अलावा अतिरिक्त सेवाओं के लिए माता-पिता से लागत के आधार पर टीकाकरण शुल्क के रूप में साप्ताहिक रूप से लगभग 2 लाख इकट्ठा करते हैं।

टीकाकरण एक जीवन रेखा है क्योंकि यह बच्चों को बीमारी, विकलांगता और मृत्यु दर से बचाती है। कोठारी ने कहा, हमारा रोटरी केंद्र न केवल बच्चों का टीकाकरण करता है, बल्कि माता-पिता को निवारक देखभाल के बारे में भी शिक्षित करता है, जिससे "हमारे समुदायों की प्रतिरक्षा मजबूत होती है। दशकों से, इस केंद्र को पूरे क्षेत्र में एक आदर्श पहल के रूप में मान्यता प्राप्त है, और हमारी परियोजना ने अन्य क्लबों और गैर सरकारी संगठनों को अपने इलाकों में इसी तरह के कार्यक्रमों को दोहराने के लिए प्रेरित किया है।" ■

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है?

या यह आपके जंक फोल्डर में जा रही है?

हर महीने हम आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन *रोटरी न्यूज़ प्लस* निकालते हैं। यह महीने के मध्य तक ईमेल के माध्यम से प्रत्येक सदस्य को भेजा जाता है।

हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर *रोटरी न्यूज़ प्लस* पढ़ें।

आपके गवर्नर्स से मिलिए

किरण ज़ेहरा

छोटे क्लबों को बड़े परिवारों में बदलना

वर्ष 2000 में अपने पति की चाची के माध्यम से रोटरी से परिचित हुई प्रज्ञा मेहता 2009 में एक रोटेरियन बनीं और 2018 में क्लब अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। जिस चीज ने उन्हें रोटरी की ओर आकर्षित किया वह इसके सदस्य थे, ''जो मुझे शामिल करने के लिए तैयार थे और बड़ी सकारात्मकता और उत्साह के साथ भाग लेते थे।''

उनका सदस्यता लक्ष्य ''सिर्फ आंकड़ों से परिभाषित नहीं है।'' उनका उद्देश्य लगभग 10 सदस्यों वाले छोटे क्लबों को मजबूत करके उन्हें 25 सदस्यों तक बढ़ने में मदद करना है। वह सुझाव देती हैं कि क्लब की बैठकों में एक छोटा सा हिस्सा इस बात के लिए समर्पित किया जाए कि किसी सदस्य के हालिया योगदान, शौक या व्यक्तिगत उपलब्धि की सराहना की जाए और जो सदस्य अनुपस्थित हों उन्हें एक मित्रतापूर्ण संदेश भेजा जाए - आपकी कमी महसूस हुई। अपनी सदस्यता संगोष्ठी में वह सदस्यों की जरूरतों को समझने और उनकी शिकायतों को दूर करने के लिए एक घंटे की खुली बातचीत शामिल करने की योजना बना रही है।

प्रज्ञा रोटरी में अधिक महिलाओं की भागीदारी की पक्षधर हैं। ''जब तक आप एक महिला को अपने क्लब में नहीं लाते तब तक आप उपलब्ध क्षमता का 50 प्रतिशत उपयोग नहीं कर पाते।'' वह वरिष्ठ क्लबों को रोटरेक्ट और इंटरेक्ट क्लबों को सलाह देने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

उनका टीआरएफ लक्ष्य है कि सभी क्लब '100 प्रतिशत योगदान करने वाले क्लबों' का दर्जा हासिल करें। अब तक 150 सदस्यों में से प्रत्येक ने टीआरएफ को ₹1,100 का योगदान दिया और वर्तमान में डीडीएफ 9,000 डॉलर पर है, जो एक संकेतक है कि अधिक योगदान की आवश्यकता है।

इस वर्ष की प्रमुख परियोजनाओं में थैलेसीमिया जागरूकता अभियान, टीबी उन्मूलन पहल और भोजन की बर्बादी को रोकने के लिए *अन्न साधना* अभियान शामिल हैं।

प्रज्ञा मेहता
सॉफ्ट स्किल ट्रेनर
रोटरी क्लब कोटा
रो ई मंडल 3056

शिवसुंदरम पी
कपड़ा निर्माता
रोटरी क्लब कोमारपलायम
रो ई मंडल 2982

सेलम के लिए मधुमेह केंद्र

पीडीजी एके नटेसन द्वारा रोटरी से परिचय कराए जाने के बाद वह 2002-03 में रोटरी में शामिल हुए और अपनी दोस्ती, फैलोशिप, नेटवर्किंग और सेवा के लिए उससे जुड़े रहे। 2012-13 में क्लब के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने स्थायी परियोजनाओं के महत्त्व को समझा और वह याद करते है कि उस दौरान बनाए गए सार्वजनिक शौचालय आज भी उपयोग में हैं।

इस वर्ष मंडल के 23 सहायक गवर्नरों में से प्रत्येक एक नया क्लब गठित करेंगे जिसका लक्ष्य 23 नए क्लबों का गठन करके 500 से अधिक नए सदस्यों को शामिल करना है। सदस्यता प्रोत्साहन के लिए मान्यता भी निर्धारित की गई है - एक नए सदस्य को प्रायोजित करने पर प्रमाणपत्र और 25 या उससे अधिक नए सदस्यों को जोड़ने वालों को पॉल हेरिस फेलो सम्मान मिलेगा। सदस्य बनाए रखने के विषय पर वह कहते हैं: ''रोटेरियनों को यह याद दिलाते रहें कि रोटरी ने उन्हें क्या दिया है - व्यक्तिगत संतुष्टि, सार्थक मित्रताएँ, भरोसेमंद व्यावसायिक संबंध या वे अनुभव जिन्होंने उनके जीवन को छूकर उसे बदल दिया।''

मंडल में चार अखिल महिला क्लब और 200 से अधिक महिला सदस्य हैं।

डिस्ट्रिक्ट फाउंडेशन चेयर (2017-20) के रूप में कार्य करते हुए उन्हें धन संचयन का अनुभव प्राप्त हुआ जिसका उपयोग उन्होंने सलेम में एक मधुमेह केंद्र स्थापित करने के लिए रासी स्वीट्स के साथ ₹70 लाख की एक सीएसआर परियोजना को सफलतापूर्वक लागू करने में किया। अन्य पहलों में नि:शुल्क भोजन, व्यावसायिक प्रशिक्षण और एक डायलिसिस इकाई के साथ संगागिरी में एक बहु-उपयोगिता केंद्र स्थापित करना शामिल है; चिकित्सा शिविरों और रियायती उपचार के लिए छह अस्पतालों के साथ समझौता ज्ञापन किया गया। अक्टूबर-नवंबर 2025 के लिए एक कृत्रिम अंग शिविर की योजना बनाई गई है।

इस साल मंडल में छह नए रोटरेक्ट क्लब और छह नए इंटरेक्ट क्लब भी गठित किए जाएंगे।

विकास के लिए इनर व्हील के साथ साझेदारी

एक पूर्व रोटरेकटर निगमकुमार चौधरी का रोटरी से परिचय उनके परिवार के माध्यम से हुआ था। इस वर्ष उनका सदस्यता लक्ष्य है 15 नए क्लब शुरू करना और 400 सदस्यों की शुद्ध वृद्धि हासिल करना। नामांकन से पहले, संभावित सदस्यों से पूछें कि वे रोटरी के बारे में क्या जानते हैं। ''उन्हें सेवा परियोजनाओं, फैलोशिप कार्यक्रमों और क्लब की बैठकों में आमंत्रित करें ताकि वे क्लब को करीब से समझ सकें। इससे बेहतर सदस्यता बनाए रखने में मदद मिलेगी।''

वह फेलोशिप कार्यक्रमों, रोटरी यूथ एक्सचेंज और फैमिली एक्सचेंज के अवसरों पर जानकारी साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते है ताकि सदस्यों को रोटरी की अंतर्राष्ट्रीय पहचान और वैश्विक पहुँच को समझने में मदद मिल सकें।

चौधरी का ध्यान लैंगिक विविधता में सुधार लाने पर भी हैं और उनका लक्ष्य है कि मंडल में महिलाओं की सदस्यता को 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक लाया जाए। इसे प्राप्त करने के लिए क्लब अपने सदस्यों को रोटरी से परिचित कराने और दोहरी सदस्यता के विचार को बढ़ावा देने के लिए इनर व्हील क्लबों के साथ साझेदारी कर रहे हैं।

मंडल का लक्ष्य है कि 'प्रत्येक रोटेरियन एक दाता रोटेरियन' पहल के अंतर्गत टीआरएफ के योगदान को 25,000 डॉलर से बढ़ाकर 4,00,000 डॉलर किया जाए। मंडल ने सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण, व्यावसायिक केंद्रों, कृत्रिम अंगों और दृष्टिबाधित लोगों के लिए स्मार्ट ग्लासेस के निधियन के लिए ओएनजीसी और बैंक ऑफ इंडिया के साथ साझेदारी की है।

इस वर्ष की प्रमुख परियोजनाओं में बड़े पैमाने पर कैंसर जागरूकता और नशा विरोधी अभियान शामिल हैं जिसका लक्ष्य है एक ही दिन में एक लाख छात्रों तक पहुंचना।

वह रोटरी क्लबों से तीन इंटरेक्ट क्लब और दो रोटारेक्ट क्लब शुरू करने का आग्रह कर रहे हैं। युवा सदस्यों को प्रोत्साहित करने और उन्हें रोटरी की एक बड़ी तस्वीर दिखाने के लिए एक दिवसीय इंटरेक्ट सम्मेलन आयोजित करने की भी योजना बनाई गई है।

निगमकुमार चौधरी
आर्किटेक्ट
रोटरी क्लब विसनगर
रो ई मंडल 3055

चेला के राघवेंद्रन
चार्टर्ड अकाउंटेंट
रोटरी क्लब कोयंबटूर स्पेक्ट्रम
रो ई मंडल 3206

महिलाओं के स्वागत के लिए शुल्क माफ़ी

जब डीजी चेला के राघवेंद्रन मई 2002 में रोटरी क्लब चेन्नई टावर्स में शामिल हुए तो उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा उनके भाई चेला के श्रीनिवासन थे, जो 1986 से एक रोटेरियन है और वे कभी भी किसी भी क्लब बैठक में शामिल होने से नहीं चूके और उनके चाचा, पीडीजी सीएन गंगाधरन भी एक प्रसिद्ध रोटरी नेता थे।

हाल ही में विभाजित मंडलों में से एक का नेतृत्व करते हुए राघवेंद्रन का ध्यान इस वर्ष 20 नए क्लबों और लगभग 650 अतिरिक्त रोटेरियनों को जोड़ने पर है। क्लब अध्यक्षों को उनकी सलाह है कि सदस्यों को एक स्पष्ट दिशा-निर्देश दें, उन्हें अपने 'रोटरी पल' को खोजने में मदद करें और उन्हें कार्यक्रमों, फैलोशिप और एक्शन समूहों के माध्यम से व्यस्त रखें।

> जब तक एक महिला आपके क्लब का हिस्सा नहीं बनती, आप क्लब की वास्तविक क्षमता का आधा हिस्सा नज़र अंदाज़ कर रहे हैं।
>
> प्रज्ञा मेहता

2004 में वे रोटरी क्लब कोयम्बटूर स्पेक्ट्रम में शामिल हो गये। रो ई मंडल 3206 तमिलनाडु और केरल को जोड़ता है, समावेशिता बढ़ाने के लिए सभी संवाद अंग्रेज़ी में किए जाते हैं। लैंगिक विविधता (वर्तमान में 8 प्रतिशत) में सुधार लाने के लिए 2025-26 में रोटरी से जुड़ने वाली महिलाओं के लिए मंडल कुछ शुल्कों में छूट देगा। मंडल ने 1.5 मिलियन डॉलर का एक महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसमें वार्षिक निधि के लिए प्रति व्यक्ति योगदान का लक्ष्य 100 डॉलर और पोलियोप्लस के लिए 30 डॉलर रखा गया है। ''सबसे बड़ी चुनौती सोच की है। टीआरएफ में योगदान देना समुदाय को कुछ लौटाने का सबसे अच्छा तरीका है।''

उनके कार्यकाल के दौरान सेवा परियोजनाओं में लड़कियों का सशक्तिकरण, बुजुर्गों और दिव्यांगजनों की देखभाल और युवाओं में मादक द्रव्यों के सेवन को रोकना शामिल है। बड़े लक्ष्यों में 50 डायलिसिस मशीनें, 50 स्मार्ट क्लासरूम, सुविधाओं से वंचित क्षेत्रों में 500 किलोवाट सौर प्रतिष्ठान और एक मिलियन नि:शुल्क भोजन शामिल हैं।

दिल्ली के रोटरेक्टरों ने मचाई धूम

जयश्री

नई दिल्ली में एक महिला कॉलेज, मैत्रेयी कॉलेज, से संबद्ध रोटरेक्ट क्लब दिल्ली मिडटाउन मैत्रेयी को 2023 में रोटरी क्लब दिल्ली मिडटाउन, रो ई मंडल 3011, द्वारा अधिकृत किया गया था। रोटरेक्टर घरेलू हिंसा और यौन शोषण के शिकार लोगों की मदद करने के लिए समर्पित हैं। उनकी अधिकांश सेवा गतिविधियाँ महिलाओं एवं युवतियों के सशक्तिकरण पर केंद्रित हैं।

इस सब की शुरुआत अगस्त 2024 में *प्रोजेक्ट राहा* के साथ हुई, जब क्लब के सदस्यों ने कोलकाता के आर जी कर मेडिकल कॉलेज की एक 31 वर्षीय प्रशिक्षु डॉक्टर को श्रद्धांजलि

प्रोजेक्ट राहा *के अंतर्गत शांति यात्रा में भाग लेते हुए रोटारेक्टर्स।*

देने के लिए पीस वॉक निकाली, जिनकी कॉलेज परिसर के सेमिनार रूम में बेरहमी से बलात्कार करके हत्या कर दी गई थी। यह शांतिपूर्ण तरीके से आयोजित किया गया था, जहां हमारे कॉलेज और अन्य पड़ोसी कॉलेजों के लगभग 750 छात्रों ने भाग लिया। हमने महिलाओं की सुरक्षा और बलात्कार पीड़िता के लिए न्याय की वकालत करने वाले नारे लिखे हुए तख्तियां पकड़ी हुई थीं, क्लब की आईपीपी माही आज़ाद कहती है जो इसकी चार्टर अध्यक्ष भी है।

प्रोजेक्ट राहा के अगले चरण में इजरायली मार्शल आर्ट में निपुण निकी दुबे द्वारा आयोजित आत्मरक्षा कार्यशालाओं की एक श्रृंखला शामिल थी। तीन सप्ताह से अधिक समय तक लगभग 250 प्रतिभागियों ने विभिन्न सुरक्षा तकनीकों और शक्तिशाली प्रहारों को सीखा, तथा वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को आत्मविश्वास और लचीलेपन से सुसज्जित किया।

इस बहु-चरणीय परियोजना के अंतर्गत चलाई जा रही अन्य पहलों में झुग्गी बस्तियों के बच्चों को सीमा-शिक्षा देना, उन्हें अच्छे और बुरे स्पर्श के बारे में जागरूक करना, तथा अजनबियों, मित्रों और परिवार के सदस्यों से आने वाली अनुचित बातचीत और गलत इरादों को पहचानना सिखाना शामिल था। हम टीम बनाकर विभिन्न बस्तियों में जाते और बच्चों एवं युवाओं के लिए जागरूकता सत्र आयोजित करते थे। इन चर्चाओं में लड़कों को भी शामिल किया जाता था, माही बताती हैं।

तीसरे चरण में कहानी सुनाने के सत्र शामिल थे, जिन्होंने पीड़ितों को अपनी कहानियाँ साझा करने, दूसरों को प्रेरित करने

और सामूहिक शक्ति का निर्माण करने के लिए एक सुरक्षित मंच प्रदान किया। इस कार्यक्रम में सदस्यों को चार-सदस्यीय पैनल के साथ अपने जीवन की सबसे कठिन अनुभवों में से कुछ साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यह सत्र कोमलता, साहस और जुड़ाव का एक स्थान बन गया। राहा ने हमें याद दिलाया कि उपचार की शुरुआत सुने जाने से होती है, और यह कि हमारे सबसे पीड़ादायक क्षणों में भी हम कभी अकेले नहीं होते। हमारे वक्ताओं द्वारा दिखाए गए साहस ने वहाँ मौजूद हर व्यक्ति के हृदय को छू लिया और हमारे समुदाय को और करीब ला दिया, जिससे सहानुभूति, सहयोग और पारस्परिक समझ को बढ़ावा मिला। यह सिर्फ एक सत्र नहीं था; यह साझा मानवीय शक्ति की याद दिलाने वाला अनुभव था, वह कहती हैं।

उपरोक्त परियोजना से प्रेरित होकर, क्लब ने *प्रोजेक्ट प्रबल* की शुरुआत की, जो तीन चरणों वाली एक अन्य पहल थी जिसका उद्देश्य कौशल विकास, जागरूकता और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से मानव तस्करी की समस्या का समाधान करना था। पहले चरण में, रोटरेक्टरों ने 'सलाम बालक ट्रस्ट' में एक कानूनी साक्षरता कार्यशाला आयोजित की, जहाँ विशेषज्ञ वकीलों ने महिलाओं एवं किशोरियों को उनके कानूनी अधिकारों, सुरक्षा कानूनों और हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी दी। इन महत्वपूर्ण जानकारियों के मुद्रित पर्चे प्रतिभागियों के बीच बाँटे गए ताकि वे किसी भी समय आसानी से इसे पढ़ सके। जानकारी से सुसज्जित होना आत्मविश्वास जगाने की पहली सीढ़ी है, वह मुस्कुराते हुए कहती हैं।

अगला कदम मानव तस्करी और यौन उत्पीड़न से पीड़ित महिलाओं के लिए शिल्प कक्षाओं का आयोजन करना था। विहान नामक एनजीओ के समर्थन से लगभग 25 महिलाओं को कंगन, फैशन के सामान, फ़ोन आकर्षण, पवन आकर्षण और अन्य छोटी-मोटी चीज़ें बनाना सिखाया गया। हमने उन्हें बुनियादी सामग्री उपलब्ध कराई और हमारे कॉलेज तथा अन्य परिसरों में होने वाले कार्यक्रमों में उनकी कृतियों का विपणन करने में उनकी मदद की। इससे होने वाली आय उन्हें दी गई, जिससे स्थायी आय और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला। हम अपने परिचितों में उनके कौशल का प्रचार कर रहे हैं ताकि उन्हें निरंतर व्यवसाय मिलता रहे, वह कहती है।

प्रोजेक्ट प्रबल के तीसरे चरण में जनकपुरी वेस्ट स्थित एक एनजीओ में 30 बच्चों की रचनात्मक क्षमताओं को विकसित करने पर ध्यान दिया गया। उनकी रुचि के अनुसार उन्हें पेंटिंग और ड्राइंग करना या कहानियाँ लिखना सिखाया गया। हमारा उद्देश्य इन बच्चों में आत्म-मूल्य और आत्मविश्वास जगाना था, और जब

उन्होंने अपनी प्रतिभाओं को खोजते हुए खुशी से दमकते चेहरे दिखाए, तो हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई।

क्लब ने 'फेमोरा' नामक आठ-एपिसोड की एक वीडियो श्रृंखला तैयार की है, जो महिलाओं से जुड़ी महत्वपूर्ण समस्याओं जैसे सेक्स तस्करी, घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता और कार्यस्थल पर भेदभाव को संबोधित करती है। ये वीडियो यूट्यूब पर अपलोड किए गए हैं।

लेकिन *प्रोजेक्ट जागृति* माही के दिल के बेहद करीब लगता है, जैसा कि इसके बारे में बात करते समय उनकी आवाज़ में झलकती गर्मजोशी और खुशी से साफ महसूस होता है। क्लब के पास 136 रोटरेक्टर हैं और इन सभी की भागीदारी इस परियोजना में है। क्लब ने राजधानी की एक झुग्गी को गोद लिया है और अपनी कल्याणकारी गतिविधियाँ यहीं केंद्रित की हैं। हम यहाँ

मानव तस्करी और यौन शोषण से बचे लोगों के लिए आयोजित क्राफ्ट कक्षा।

स्कूल जाने वाले बच्चों को रोज़ाना दो घंटे विभिन्न विषय पढ़ाते हैं। माही हर बुधवार वहाँ बच्चों को अंग्रेज़ी सिखाने जाती हैं और बाकी सदस्य भी बारी-बारी से हर हफ्ते जाकर उन बच्चों को उन्हीं विषयों में मज़बूत करते हैं, जिनमें वे निपुण हैं। माता-पिता की प्रतिक्रिया, जो अधिकतर अशिक्षित हैं और कम आय वाली मेहनतकश नौकरियों में लिप्त हैं, बेहद उत्साहजनक रही है, माही कहती हैं। पहले बच्चे निजी ट्यूशन कक्षाओं में भेजे जाते थे जहाँ उनसे ₹400-500 महीना शुल्क लिया जाता था। तो जब हमने माता-पिता से कहा कि हम बच्चों को निःशुल्क पढ़ाएँगे तो वे बहुत खुश हुए। और बच्चे भी हमारे साथ पढ़ाई का आनंद ले रहे हैं। अब उनके अंक भी सुधरने लगे हैं, रोटरेक्टर मुस्कुराते हुए बताती हैं।

प्रोजेक्ट संजीवनी और *आयुष्मान* के माध्यम से क्लब ने पूरे वर्ष शहर में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिविरों की श्रृंखला आयोजित की, जिनसे लगभग 1,000 लोगों को लाभ मिला। क्लब द्वारा आयोजित रक्तदान शिविरों ने थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों का इलाज करने वाले केंद्रों में रक्त भंडार बढ़ाने में मदद की।

स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, माही ने अब शहर के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश लिया है। वह अपने 47 सहपाठियों के साथ रोटरेक्ट क्लब दिल्ली जेनेसिस से जुड़ गई हैं, जो रोटरी क्लब दिल्ली जेनेसिस द्वारा नवगठित एक सामुदायिक क्लब है। इस नए क्लब ने अब महिलाओं और युवाओं को लक्षित करते हुए कैंसर जागरूकता कार्यक्रमों से अपनी कल्याणकारी पहल की शुरुआत की है। नए रोटरी वर्ष की शुरुआत में, क्लब ने महिलाओं के लिए विशेष शिविर आयोजित किए जिनमें स्तन और ओवेरियन कैंसर की जांच की गई। चिकित्सा विशेषज्ञों की मदद से, हमने आगंतुकों को स्वयं-जांच की तकनीकें सिखाईं ताकि कैंसर का समय पर पता लगाया जा सके, और उन्हें यह भी समझाया कि बीमारी को जड़ से खत्म करने के लिए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लेना कितना आवश्यक है, वह बताती हैं। ■

Membership & TRF contribution summary

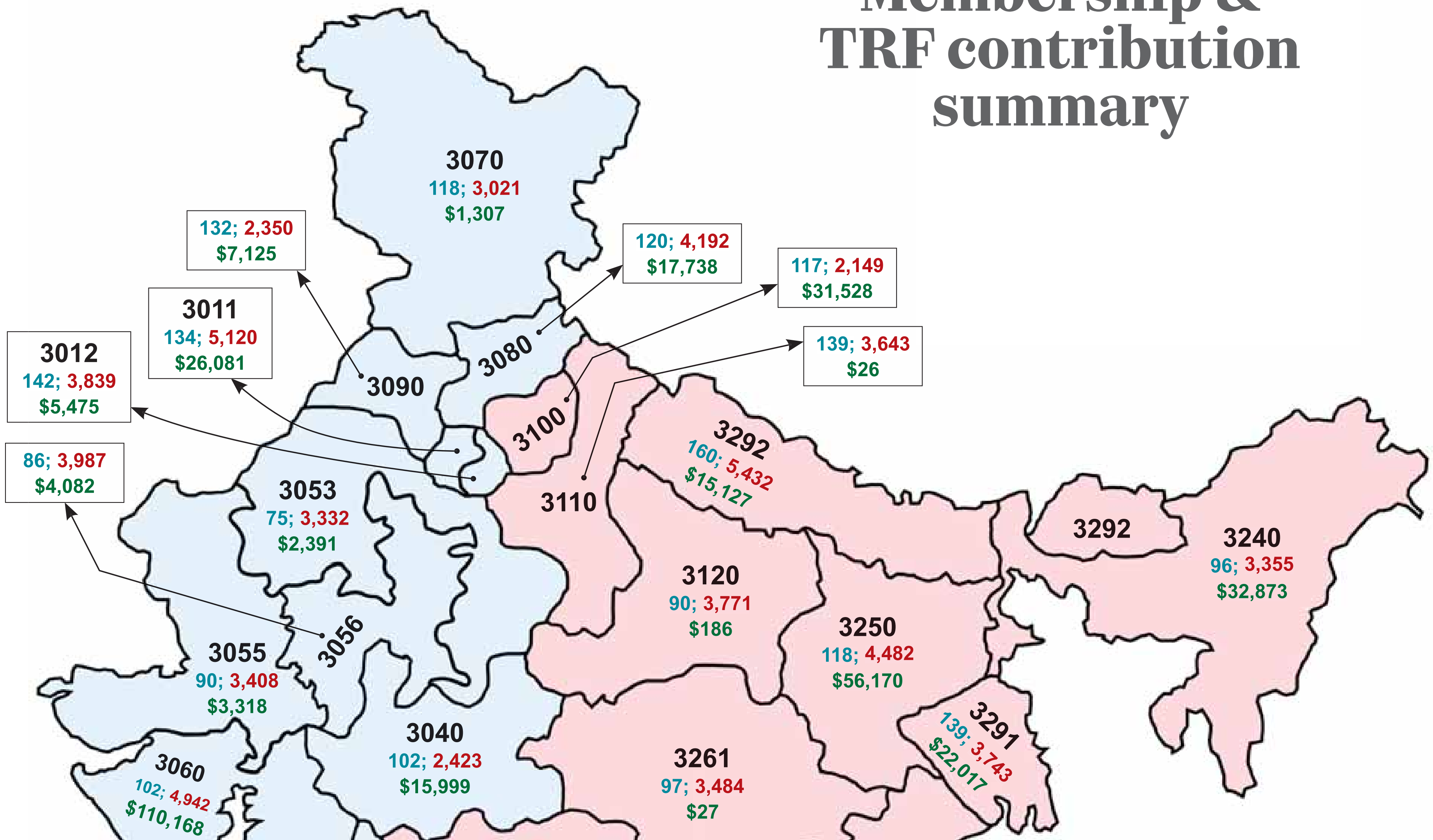

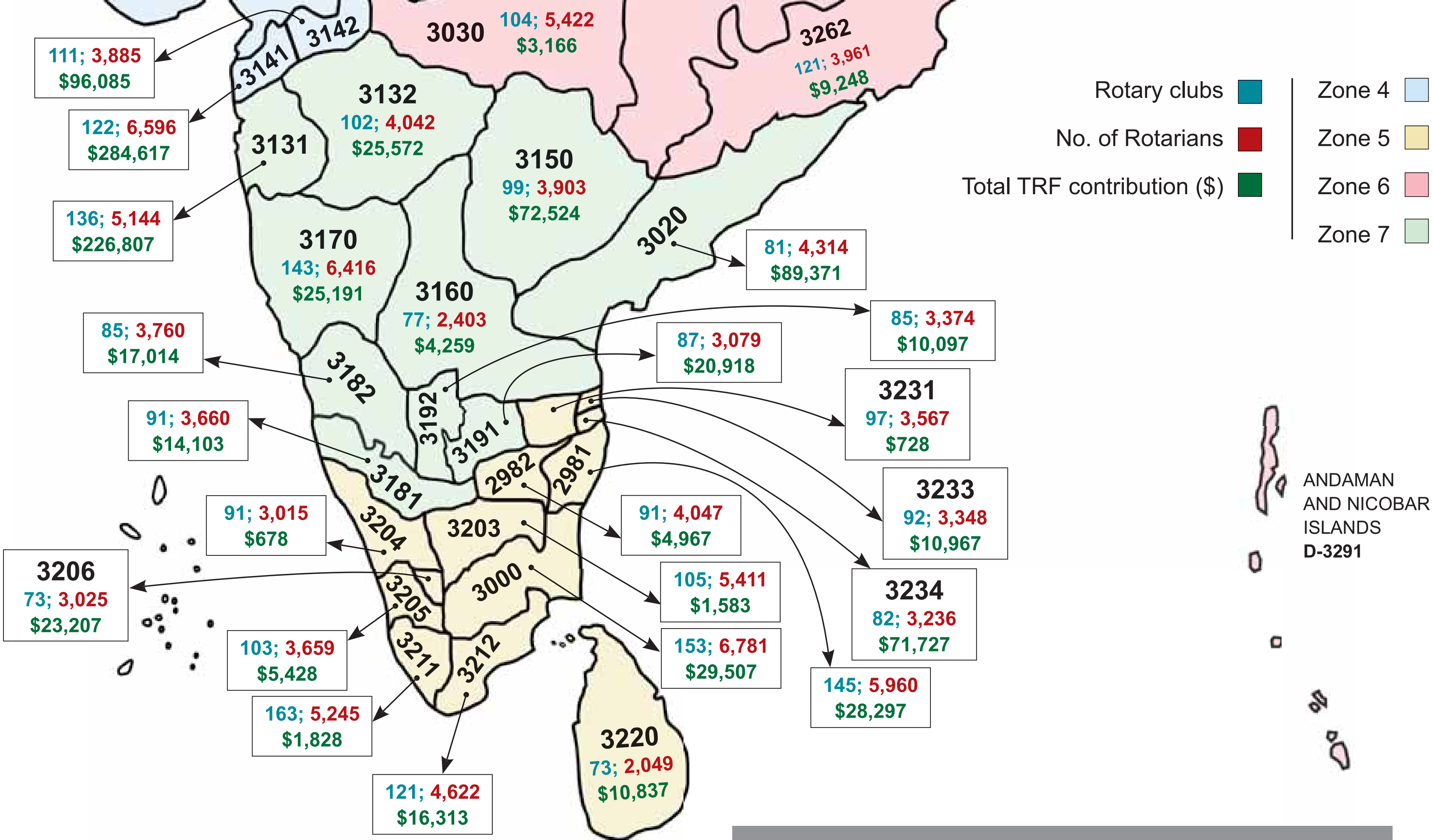

*Membership figures as on August 1, 2025.
*TRF contribution figures as on July 31, 2025.

Rotary worldwide

Rotary clubs :	36,464	Rotary members :	1,150,586
Rotaract clubs :	9,592	Rotaract members :	133,870
Interact clubs :	17,520	Interact members :	403,098
RCCs :	14,122		As on August 22, 2025

रो ई मंडल 2981

रोटरी क्लब नेवेली लिग्नाइट सिटी

₹50,000 प्रति गाड़ी की कीमत वाले दो धातु के ठेले वंचित लोगों को दान किए गए। इससे उन्हें दिन में सब्ज़ियाँ और शाम को मूंगफली बेचने में मदद मिलेगी। दोनों ठेलों पर रोटरी व्हील का लोगो और क्लब का नाम प्रमुखता से अंकित था, जिससे रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा मिला।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3070

रोटरी क्लब कपूरथला डाउनटाउन

आर्य समाज आश्रम में बच्चों को भोजन के पैकेट वितरित किए गए। क्लब के अध्यक्ष योगेश तलवार, सचिव गगनदीप मेहरा, पूर्व अध्यक्ष हरमिंदर सिंह और आश्रम में शिक्षक के रूप में कार्यरत क्लब के सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

रो ई मंडल 3131

रोटरी क्लब पुणे नांदेड़ शहर

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ अधिवक्ता उज्ज्वल निकम ने एजी उज्ज्वल केले द्वारा क्लब के नए अध्यक्ष कुशल करेवर की स्थापना के अवसर पर रोटेरियन को संबोधित किया।

रो ई मंडल 3142

रोटरी क्लब कल्याण सिटी

मंडल वन अधिकारियों और पुलिस अधिकारियों के सहयोग से कल्याण-मुरबाड रोड पर रेवती गांव के पास रोटेरियन ने 53 पौधे लगाए। परियोजना अध्यक्ष मदन शंकलेशा, सचिव पूर्वा कुलकानी और अध्यक्ष निखिल परमार ने अपनी टीम और रोटरेक्टर्स के साथ ग्रीनिंग मिशन में भाग लिया।

रो ई मंडल 2982

रोटरी क्लब डैम मेट्टूर सिटी

सलेम में मेट्टूर बाँध के आसपास के वन क्षेत्रों को मज़बूत बनाने के लिए चरणबद्ध तरीके से 10,000 पौधे लगाए जा रहे हैं, जो अपने शताब्दी वर्ष के करीब पहुँच रहा है। पहले चरण में, रोटेरियन ने हरियाली मिशन के तहत संपल्ली गाँव में वृक्षारोपण किया।

रो ई मंडल 3182

रोटरी क्लब कडुर

कादूर तालुक के 31 सरकारी स्कूलों में 500 से अधिक छात्रों को स्कूल बैग, नोटबुक, स्टेशनरी आइटम और रंगीन सेट वाले स्कूल किट वितरित किए गए।

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब होनावर

पीडीजी गौरीश धोंड ने एसडीएम कॉलेज, होनावर में एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का उद्घाटन किया, जिसे सी एस आर फंड के माध्यम से स्थापित किया गया था। इस संयंत्र में प्रतिदिन 12,000 लीटर अपशिष्ट जल को रीसायकल करने की क्षमता है, और उपचारित पानी का उपयोग बागवानी, फ्लशिंग और अन्य गैर-पीने योग्य उद्देश्यों के लिए किया जाएगा।

भय से भागने को विवश

एक चर्चित उपन्यास इस बहस में घिर गया कि किसी और की कहानी सुनाने का हक़ आखिर किसे है।

संध्या राव

आइए शुरू करते हैं इतालवी लेखक उम्बर्तो एको की किताब *फाइव मॉरल पीसेज़* के एक उद्धरण से, जो पाँच निबंधों का संग्रह है। इसका मूल संस्करण 1997 में *चिनक्वे स्क्रित्ती मोराली* नाम से प्रकाशित हुआ था और बाद में 2001 में अंग्रेज़ी में अनुवादित हुआ। 'प्रवासन, सहिष्णुता और असहिष्णुता' शीर्षक वाले निबंधों के अंत में, वह आप्रवासन और प्रवासन के बीच के अंतर की जांच करते है। उनके अनुसार आप्रवासन एक राजनीतिक रूप से नियंत्रित, सीमित, प्रोत्साहित, योजनाबद्ध और स्वीकार किया जाने वाला कार्य है। लेकिन प्रवासन इसके विपरीत एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता: प्रवासन तब होता है कोई पूरी आबादी धीरे-धीरे एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में चली जाती है... इतिहास में पूर्व से पश्चिम की ओर बड़े पैमाने पर प्रवासन हुए हैं, जिनके दौरान काकेशस क्षेत्र के लोगों ने वहाँ के मूल निवासियों की संस्कृति और जैविक विरासत को बदल दिया। यूरोप से अमेरिकी महाद्वीप की ओर भी प्रवासन हुआ था जिसे यूरोप आज भी 'आप्रवासन' मानता है, वह वास्तव में 'प्रवासन' है। तीसरी दुनिया (गरीब या विकासशील देश) हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहे है और वह अंदर आएंगे चाहे हम सहमत हों या न हो...

यह लेख 25 साल पहले लिखे गए उम्मबर्टो इको के विचारों को संदर्भित करता है, जिसमें उन्होंने प्रवासन, सहिष्णुता और असहिष्णुता के बारे में चर्चा की थी। उनके विचार आज के समय में भी प्रासंगिक हैं। हालांकि इस लेख का केंद्रबिंदु एक काल्पनिक रचना है - *अमेरिकन डर्ट* जिसका शीर्षक बहुत आकर्षक नहीं है। यह उपन्यास जीनिन कमिंस द्वारा लिखा गया है, जो एक अमेरिकी लेखिका हैं और जिनकी दादी प्यूर्टो रिको की थीं। इस उपन्यास का विषय है - दक्षिण और मध्य अमेरिका के लोगों का अमेरिका में प्रवेश करने का संघर्ष। दुनिया इस प्रवास के राजनीतिक असर से वाकिफ है। अमेरिकी सरकार द्वारा मअवैध प्रवासियोंफ को रोकने और उन्हें पकड़ने के लिए किए जा रहे प्रयासों से भी हम परिचित हैं। लेकिन हम इस बात से कितने परिचित हैं कि ये लोग ऐसा जोखिम भरा सफर क्यों करते हैं? वे कैसे इतने लंबे सफर पर निकलते हैं और कितनी मुसीबतें, डर, और निराशा झेलते हैं? *अमेरिकन डर्ट* ऐसी ही एक यात्रा की कहानी कहने की कोशिश करता है।

लीडिया पेरेज़ मैक्सिको के अकापुल्को शहर में एक किताबों की दुकान चलाती हैं। कहानी की शुरुआत एक भयावह घटना से होती है - लीडिया के परिवार के 16 सदस्यों की हत्या कर दी जाती है, जब वे उसकी भतीजी येनिफर के 15वें जन्मदिन की पार्टी मना रहे होते हैं। इन मारे गए लोगों में लीडिया के पति सेबास्टियन, जो एक पत्रकार थे, और उनकी माँ भी शामिल हैं। लीडिया को पता है कि ये नरसंहार एक प्रभावशाली ड्रग कार्टेल द्वारा करवाया गया है जिसका नाम लॉस हार्दिनेरोस है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि कार्टेल का सरगना जैवियर फुएंतेस लीडिया का मित्र होने का दिखावा करता रहा - दोनों एक-दूसरे के साथ किताबों पर बातें करते थे, जिससे लीडिया को उस पर विश्वास हो गया था। लेकिन अब, उसके पति सेबास्टियन द्वारा इस कार्टेल का पर्दाफाश किए जाने के बाद लीडिया और उसका छोटा बेटा लुका भी खतरे में हैं। उन्हें अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ता है।

डर और शोक को पीछे छोड़कर, लीडिया और उसका बेटा लुका अकापुल्को से भागने की कोशिश करते हैं - न सिर्फ उस शहर से बल्कि पूरे मेक्सिको से बाहर निकलकर एल नॉर्टे यानी संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर बढ़ने के लिए। यह उपन्यास उनकी इस यात्रा का वर्णन करता है - हालांकि यह एक काल्पनिक कहानी है जो वर्षों के शोध पर आधारित है। इस सफर में उन्हें कई दिनों तक गुप्त रूप से यात्रा करनी पड़ती है और अनगिनत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इनमें शामिल हैं: चलती हुई ट्रेनों पर चढ़ना और उनकी छतों पर यात्रा करना, रेगिस्तान को पार करना, अजनबियों पर भरोसा करना - जो या तो उनकी मदद कर सकते हैं या उन्हें धोखा देकर पकड़वा या मार भी सकते हैं, सारी जमा पूंजी खो देना, ज़हरीले सांपों (जैसे रैटलस्नेक्स) और भूख से जूझना और सबसे महत्वपूर्ण - हर जगह मौजूद ड्रग माफियाओं और सीमा सुरक्षा बलों से बचना।

जब अमेरिका तथाकथित 'अवैध प्रवासियों'– दक्षिण और मध्य अमेरिका से अमेरिका में प्रवेश करने का प्रयास करने वालों–का पता लगाने में लगा है, तब हमें कितना ज्ञान है उन यात्राओं के कारणों, तरीक़ों और अवधि का, जो ख़तरों, कठिनाइयों और निराशा से भरे दिनों के बीच पूरी की जाती हैं?

यह एक बेहद प्रभावशाली कहानी है जिसे बड़ी तेज़ गति के साथ विस्तार से कहा गया है – हालाँकि कभी-कभी यह कुछ ज़्यादा ही लिखी हुई लगती है। लेकिन जब आप इस लेखन शैली के आदी हो जाते हैं तो यह उपन्यास आपको आकर्षक लगने लगता है। और चूँकि हमें पता है कि मेक्सिको और अमेरिका की सीमा पर लोगों की आवाजाही आज भी जारी है तो यह कहानी और भी प्रभावशाली और प्रासंगिक लगती है। जब लीडिया और लुका की मुलाकात ऐसे अन्य लोगों से होती है जो उनसे भी दक्षिण की ओर से भागकर आ रहे होते हैं तो पाठक को उनकी कहानियाँ भी जानने को मिलती हैं – कि वे लोग क्यों घर छोड़ रहे हैं। ऐसा इसलिए नहीं है कि वे अपना देश छोड़ना चाहते हैं बल्कि इसलिए कि उनके पास कोई विकल्प नहीं है। अगर उन्हें ज़िंदा रहना है तो उन्हें अपने देश से जाना ही होगा।

हमने अपनी पिछली बुक क्लब मीटिंग में इस किताब पर चर्चा की और प्रतिक्रियाएँ मिश्रित थीं। लेकिन हम सभी के लिए यह साफ़ था कि जो कुछ भी इस उपन्यास में वर्णित है, वह हमारे लिए अनजाना और अपरिचित था – क्योंकि हम एक ऐसे सुविधाजनक और सुरक्षित जीवन में जी रहे हैं जहाँ हमें अपने 'घर' को लेकर कोई असुरक्षा नहीं है – कम से कम अभी तक, हम में से किसी को नहीं। आमतौर पर लोगों की सोच यह होती है कि अगर कोई परिस्थिति हमारे सामने नहीं है तो वह किसी और के साथ भी नहीं हो सकती। यही वह जगह है जहाँ एस टी कोलरिज़ की सलाह उपयोगी साबित होती है – कि हमें स्वेच्छा से अपना अविश्वास छोड़ देना चाहिए। तभी हम किसी और की स्थिति को समझ सकते हैं, उसमें सहानुभूति रख सकते हैं – भले ही हमने खुद उस चीज़ का अनुभव न किया हो या कभी कर ही न सकें।

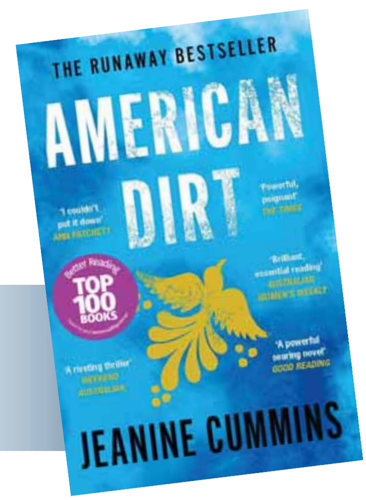

फिर एक बात और है – किसी भी चीज़ की आदत डाल लेना आसान होता है चाहे वह कितनी भी भयानक और हमारे लिए कितनी भी हानिकारक क्यों न हो। समय के साथ सब कुछ सामान्य लगने लगता है। सोलेदाद और रेबेका, दो किशोर लड़कियाँ जो होंडुरास के एक क्लाउड-फ़ॉरेस्ट गाँव से भागी हैं, जहाँ ड्रग माफिया (नार्कोस) ने हमला किया था – वे लीडिया और लुका को चलती ट्रेन पर चढ़ना और उतरना सिखाती है। कई बार ऐसा करने के बाद वे सभी बिना ज़्यादा सोच-विचार या बात किए आसानी से चढ़ने-उतरने लगते हैं। हम प्रोफ़ेशनल बनते जा रहे हैं, सोलेदाद कहती है। लेकिन लीडिया परेशान हो उठती है। कुछ देर हालात पर सोचने के बाद वह कहती है: अब से, जब भी हम ट्रेन पर चढ़ें, हर बार, मैं तुम्हें याद दिलाऊँगी कि डरना चाहिए... और तुम मुझे भी याद दिलाना: यह सामान्य नहीं है। सोलेदाद जवाब देती है: यह सामान्य नहीं है। क्योंकि वे – और हम – यह अनुमति नहीं दे सकते कि बुरे काम, अन्यायपूर्ण चीज़ें या अमानवीय परिस्थितियाँ सामान्य बन जाएँ। अगर ऐसा हुआ तो हम सतर्क रहना भूल जाएँगे और प्रतिक्रिया देना या लड़ना छोड़ देंगे।

हालाँकि *अमेरिकन डर्ट* एक बेस्टसेलर बनी और शुरू में इसे अच्छी समीक्षाएँ भी मिलीं, फिर भी यह उपन्यास विवादों में क्यों घिर गया? ऑनलाइन ढेर सारी जानकारी और आलोचनाएँ आसानी से मिल जाती हैं, लेकिन एक खास बात जो लैटिन अमेरिकी लेखकों को खटक गई, वह यह थी कि यह कहानी एक 'श्वेत' महिला द्वारा लिखी गई थी। लेखिका जीनिन कमिंस ने एक साक्षात्कार में स्वयं को 'श्वेत' बताया था और यही बात कई लोगों के लिए एक संवेदनशील मुद्दा बन गई। द गार्जियन में मई 2025 में प्रकाशित एक साक्षात्कार में लूसी नाइट लिखती हैं कि जीनिन कमिंस उस नकारात्मक प्रतिक्रिया के लिए तैयार नहीं थीं, जिसमें एक समीक्षक ने उपन्यास को *trauma porn* (यानी दुख और त्रासदी को सनसनीखेज़ और उपभोग योग्य सामग्री की तरह प्रस्तुत करना) कहा था। सबसे बड़ा सवाल यह उठा: क्या कमिंस को मैक्सिकन प्रवासियों की कहानी कहने का अधिकार है, जब वह खुद न तो मैक्सिकन हैं और न ही प्रवासी? इसके जवाब में, 141 लेखकों ने ओप्रा विन्फ्रे को एक पत्र लिखा, जिसमें उनसे अनुरोध किया गया कि वह इस किताब को अपने बुक क्लब से हटा दें।

कई मैक्सिकन-अमेरिकी और लैटिनक्स प्रवासी लेखकों की समझदारीपूर्ण राय में, *अमेरिकन डर्ट* को न तो अच्छी तरह कल्पना में गढ़ा गया है और न ही जिम्मेदारी से लिखा गया है और न ही इसका शोध प्रभावी रहा है। यह किताब व्यापक रूप से और दृढ़ता से एक शोषणकारी, सरलीकृत और अपर्याप्त जानकारी पर आधारित मानी जाती है। इसमें अक्सर प्रवास और मैक्सिकन जीवन व संस्कृति को लेकर आघात पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया गया है और उसे सनसनीखेज़ ढंग से प्रस्तुत किया गया है...

मुझे लगता है इस विषय पर हर पक्ष से बहुत कुछ कहा जा सकता है। रॉस सैमपेक ने मार्च 2020 में इनलेक्चूअल फ्रीडम ब्लॉग में लिखा कि यह उपन्यास जानबूझकर राजनीति से दूर रखा गया है। उन्होंने लिखा: मुझे लगता है कि कहानियाँ राजनीति से ऊपर उठ सकती हैं – और मेरा मानना है कि यही कमिंस का उद्देश्य भी था। जब आप प्रवासियों की एक ङ्गसमय से परेफ चलने वाली कहानी सुना रहे हैं, तो उसमें किसी अस्थायी राजनीतिक रुख को जोड़ने की क्या ज़रूरत है? जहाँ तक इस सवाल का संबंध है कि कौन किसकी कहानी सुना सकता है, जो आज बच्चों के साहित्य तक में एक बहस का विषय बना हुआ है, इसपर सैमपेक का सरल उत्तर है: ... प्रतिक्रिया की संभावना के कारण किसी को भी कुछ लिखने में संकोच नहीं करना चाहिए। सार्थक कहानियों को बताने में जोखिम शामिल है। और जब कमिंस की आलोचना की गई कि उनके शोध में गहराई नहीं है, तब सैमपेक का जवाब था: ...मुझे उनके अध्ययन की पूरी जानकारी नहीं है, लेकिन पाँच साल का समय किसी मास्टर थीसिस के लिए काफी होता है... फिर यह 'गहरा' कैसे नहीं हुआ? यह कहना कि शोध का नतीजा आपकी अपेक्षाओं से मेल नहीं खाता, उपन्यास की आलोचना करने का उचित आधार नहीं है।

मेरी सिफारिश? किताब पढ़िए। किताब के बारे में भी पढ़िए। अपने निष्कर्ष स्वयं निकालिए। लेकिन पढ़िए।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

गेटेड समुदायों का स्थायी पक्ष

प्रीति मेहरा

सामुदायिक जीवन एक पर्यावरण-अनुकूल अनुभव हो सकता है

शहरी भारत में गेटेड कॉलोनियाँ तेजी से आम होती जा रही हैं। वास्तव में, अब बहुत से लोग अपने स्वतंत्र घरों को छोड़कर गेटेड कम्युनिटीज़ में जा रहे हैं। ज़्यादातर लोग कहते हैं कि इससे जीवन आसान हो जाती है, क्योंकि ऐसी जगहें कई सुविधाएँ प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, यदि बिजली चली जाए या पानी का रिसाव हो जाए, तो आपको इधर-उधर भागने की ज़रूरत नहीं पड़ती। आप बस सोसाइटी हेल्प डेस्क पर कॉल करें, और कुछ ही समय में इलेक्ट्रिशियन या प्लंबर आपके दरवाज़े पर होगा। लेकिन ऐसी सुविधाओं के साथ आम लोगों की देखभाल और यह सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी भी जुड़ी होती है कि वे टिकाऊ हों - जैसे गलियारे, सड़कें, पार्किंग स्थल, जॉगर्स ट्रेल, बगीचे और पेड़, कुछ उदाहरण हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि ये सुविधाएँ बहुत ही सुविधाजनक हैं और जीवन को आसान बनाती हैं, खासकर कामकाजी जोड़ों और ज़रूरतमंद बुज़ुर्ग नागरिकों के लिए। लेकिन, एक ही गेटेड कम्युनिटी में रहने वाले दूसरे लोगों के प्रति भी ज़िम्मेदारी होती है। और जो लोग तय नियमों का पालन नहीं करते, वे अपने साथी निवासियों के साथ अन्याय करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आपकी रेजिडेंट वेलफेयर सोसाइटी आपसे कचरा अलग करने के लिए कहती है (जो कि उसे करना भी चाहिए), तो आपको उसका पालन करना चाहिए और इस सामूहिक प्रयास को सफल बनाने में योगदान देना चाहिए।

यह देखकर अच्छा लगता है कि ज़्यादा से ज़्यादा गेटेड समुदाय एक स्थायी जीवनशैली सुनिश्चित करने के लिए सिर्फ़ कचरा इकट्ठा करने तक ही सीमित नहीं रह गए हैं। वे सामूहिक रूप से कई तरह की पर्यावरण-अनुकूल गतिविधियों में शामिल हो रहे हैं। मैंने पाया है कि समुदाय के गीले कचरे से सक्रिय रूप से खाद बनाना एक साझा गतिविधि बन गई है जो लोकप्रिय हो रही है। इसके अलावा, कई सोसाइटियों के निवासी अपनी छतों पर सौर पैनल लगाने के लिए अपने संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं। इससे उन्हें न केवल लंबी अवधि में अपने बिजली के बिल कम करने में मदद मिलती है, बल्कि वे देश की जीवाश्म ईंधन ऊर्जा बचाने और उत्सर्जन को कम करने में भी भागीदार बनते हैं।

जल संचयन एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिस पर अब विशेष ध्यान दिया जा रहा है। जैसा कि हम जानते हैं, पानी एक अनमोल संसाधन है जिसे संरक्षित करना आवश्यक है और व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। कई गेटेड समुदायों में जल संचयन और पुनर्चक्रण प्रणालियाँ स्थापित हैं, जो पानी के बेहतर उपयोग को सुनिश्चित करती हैं। यह न केवल इन प्रणालियों को कुशलतापूर्वक संचालित रखने की सामूहिक ज़िम्मेदारी को दर्शाता है, बल्कि इस दुर्लभ प्राकृतिक संसाधन का विवेकपूर्ण उपयोग करने की प्रतिबद्धता को भी मज़बूत करता है।

हाल ही में मैंने कुछ दिलचस्प रियल एस्टेट विज्ञापन देखे, जो नागरिकों को 'पर्यावरणीय' पेशकशों के ज़रिये आकर्षित कर रहे हैं। बेशक, मुझे उम्मीद है कि ये बिल्डरों द्वारा अपनी पर्यावरण-अनुकूलता साबित करने की बेताब कोशिशों के सामान्य ग्रीन वॉशिंग अभियान नहीं हैं। लेकिन, जिन विचारों को वे लागू करने का वादा करते हैं, उनमें से कुछ निस्संदेह काफ़ी रोचक हैं।

ऐसा ही एक बिल्डर ऊँची-ऊँची रिहायशी इमारतें बनाने की पेशकश कर रहा है, जहाँ पार्कों के साथ-साथ आम जगहों पर फलदार पेड़ लगाए जाएंगे, और कॉलोनी में परिवारों के बीच फल तोड़ने और बाँटने की एक सामूहिक गतिविधि भी होगी। मुझे नहीं पता और क्या-क्या शामिल होगा, लेकिन अगर इसका मतलब यह है कि इस समुदाय में पले-बढ़े बच्चे इन पेड़ों पर चढ़कर फल तोड़ेंगे और पेड़ों की देखभाल करते हुए मिट्टी में अपने हाथ गंदे करेंगे, तो मैं पूरी तरह से इसके पक्ष में हूँ। यह न सिर्फ़ उन्हें स्क्रीन टाइम से दूर रखेगा, बल्कि उन्हें प्राकृतिक वातावरण के और करीब लाने का भी एक सुंदर तरीका होगा।

एक और रियल एस्टेट विज्ञापन अपने आवासीय प्रोजेक्ट में बच्चों और पालतू जानवरों के लिए विशेष रूप से अनुकूल जगहों का दावा करता है। इसमें बच्चों के लिए बाहरी खेल के मैदान और पशु प्रेमियों के लिए एक पालतू पार्क का वादा किया गया है। ज़्यादातर गेटेड समुदायों में कुत्ते हमेशा विवाद का विषय बने रहते हैं, क्योंकि पालतू जानवरों के प्रेमी और मइंसान के सबसे अच्छे दोस्तफ से डरने वाले लोग इस बात पर आपस में बहस करते रहते हैं कि उन्हें कहाँ घुमाया जाए। इसे देखते हुए, एक पालतू पार्क एक बहुत ही समझदारी भरा विचार है। यह एक ऐसी जगह प्रदान कर सकता है जहाँ पालतू जानवर आपस में घुलमिल सकें, और उनके 'माता-पिता' पालतू भोजन, पशु-चिकित्सक और अन्य संबंधित बातों पर आपस में चर्चा कर सकें!

लेकिन बिल्डर जो कर सकता है, उससे परे आप भी समुदाय के एक सदस्य के रूप में अपने तरीके से योगदान दे सकते हैं। हम सभी जानते हैं कि दान की शुरुआत घर से होती है। इस इस मामले में यह सचमुच लागू होता है। शुरुआत के लिए, आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जब इस्तेमाल न हो रहा हो, तो लाइटें, पंखे, टीवी, एसी और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान बंद कर दिए जाएँ। खाली कमरे में जलती हुई लाइटें और चलता हुआ पंखा केवल ऊर्जा की बर्बादी ही नहीं, बल्कि एक अप्रिय दृश्य भी हैं। याद रखें, यह आदत बिल्कुल भी 'पर्यावरण-अनुकूल' नहीं है।

गेटेड कम्युनिटीज़, टिकाऊ जीवन के तीन पवित्र सिद्धांतों – रिड्यूस, रीयूज़ और रीसाइकल – को अपनाने के लिए बेहतरीन जगहें हैं। एक साझा जगह में रहकर, आप निश्चित रूप से अपने कार्बन फुटप्रिंट को 'कम' करते हैं, क्योंकि आप सामूहिक रूप से अपने द्वारा उत्पन्न उत्सर्जन को साझा करते हैं। जहाँ तक रीयूज़ की बात है, मैंने गेटेड कम्युनिटीज़ द्वारा शुरू की गई कुछ अभिनव गतिविधियों के बारे में सुना है। उनमें से एक ने गार्डन सेल लगाई, जहाँ आप जो कुछ भी फेंकना चाहते हैं, उसे दूसरों को रियायती मूल्य पर खरीदने के लिए रख दिया जाता है। इसलिए, अगर मुझे ओवन चाहिए, तो मैं उसे किसी ऐसे व्यक्ति से खरीद सकता हूँ जो उसे फेंकना चाहता हो। बच्चों के सामान के लिए, यह काफी कारगर है। आप अच्छी हालत में एक इस्तेमाल किया हुआ प्रैम, साइकिल, पालना, कार सीट, यहाँ तक कि अच्छी तरह से रखे हुए खिलौने और किताबें भी खरीद सकते हैं।

अच्छी बात यह है कि अब अधिक से अधिक गेटेड कम्युनिटीज़ केवल कचरा संग्रहण तक ही सीमित नहीं रह रही हैं, बल्कि टिकाऊ जीवनशैली सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक रूप से अनेक हरित गतिविधियों में भाग ले रही हैं।

दरअसल, व्हाट्सएप और माईगेट ऐप भी ऐसी सेवाओं के लिए उपयोगी नेटवर्क का काम करते हैं। लेकिन, अगर कोई समुदाय इससे भी ज़्यादा घनिष्ठ हो, तो गार्डन एक्सचेंज जैसी पहल भी संभव है। मैं कई समुदायों को जानता हूँ जहाँ लोग अपनी ज़रूरत की चीज़ें बाहर रख देते हैं और दूसरे लोग उन्हें मुफ़्त में ले जाते हैं। इन चीज़ों का दोबारा इस्तेमाल किया जा रहा है।

कुछ गेटेड कम्युनिटीज़ भी एक संयुक्त गतिविधि के रूप में रीसाइक्लिंग का आयोजन करती हैं। वे एक रीसाइक्लिंग कंपनी को आमंत्रित करते हैं, और हर कोई वह सब कुछ जमा कर देते हैं जिससे वह छुटकारा पाना चाहता है। ये कपड़े हो सकते हैं जिन्हें फेंकना है, आपकी शेल्फ पर रखे पुराने लैपटॉप या मोबाइल, या इस्तेमाल में न आने वाले इलेक्ट्रॉनिक सामान। ई-कचरे से छुटकारा पाने का यह एक बेहतरीन तरीका है। जब ऐसी गतिविधियाँ सामूहिक रूप से, जैसे सप्ताहांत पर आयोजित की जाती हैं, तो यह और भी सुविधाजनक तथा प्रभावी बन जाती हैं।

गेटेड समुदायों को टिकाऊ बनाने के सुझाव अनगिनत हो सकते हैं, लेकिन उन्हें हकीकत में बदलने के लिए कुछ लोगों की इच्छाशक्ति और, ज़ाहिर है, पर्यावरण के प्रति उनका जुनून ही असली भूमिका निभाता है।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

पीठ दर्द से मुक्ति

गीता मथाई

क्या आपको पीठ दर्द की समस्या है? चाहे यह कभी-कभार हो या लगातार, आप अकेले नहीं हैं।

अगर आप आस-पास नज़र डालें, तो आपको कई बुज़ुर्ग लोग कमर के नीचे का सहारा देने वाला कोर्सेट पहने घूमते हुए दिख जाएँगे। बारह प्रतिशत वयस्क आबादी (पुरुष और महिलाएँ दोनों) को किसी न किसी समय पीठ दर्द की समस्या रहती है।

पीठ दर्द एक तीव्र बेचैनी, अचानक होने वाली असहनीय पीड़ा या लंबे समय से चली आ रही पुरानी पीड़ा हो सकती है। दोनों ही दैनिक गतिविधियों में बाधा डाल सकते हैं। इससे होने वाली विकलांगता की सीमा बहुत बड़ी है। लगातार होने वाली जलन कार्यक्षमता और कामकाज में बाधा डालती है। अध्ययनों से पता चला है कि लगभग 65 वर्ष की आयु के वे लोग जो पुरानी, लगातार या बार-बार होने वाली पीठ दर्द से पीड़ित हैं, आर्थिक रूप से अपने स्वस्थ समकक्षों की तुलना में कमज़ोर हैं। ऑस्ट्रेलिया में हुए एक अध्ययन से पता चला है कि पुरानी पीठ दर्द की वजह से लोग जल्दी सेवानिवृत्त हो जाते हैं, जिससे उनकी दीर्घकालिक वित्तीय सेहत प्रभावित होती है।

हम इंसान चार पैरों पर चलने वाले चौपायों से विकसित हुए हैं। हम द्विपाद बन गए और सीधे खड़े होने लगे। इसका मतलब है कि मानव सिर का लगभग आठ किलो भार रीढ़ की हड्डी को सहना पड़ता है। रीढ़ छोटी-छोटी कशेरुकाओं की एक श्रृंखला से बनी होती है, जो उपास्थि डिस्क द्वारा अलग होती हैं और जो आघात को सोखने वाले वॉशर का काम करती हैं। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, लगातार भार सहने और मुड़ने, खड़े होने तथा झुकने के दौरान ज़रूरत से ज़्यादा काम करने से पीठ में दर्द होने लगता है।

यह दर्द आमतौर पर निचली पसलियों के किनारों और नितंबों की सिलवटों के बीच महसूस होता है। झुकते समय या किसी भारी वस्तु को अजीब तरह से उठाते समय यह तीव्र रूप से उत्पन्न हो सकता है। कभी-कभी यह बिना किसी स्पष्ट कारण के भी हो सकता है। यह गति करने पर बढ़ सकता है, या फिर लगातार हल्का और सुस्त बना रह सकता है। यह आरामदायक नींद में बाधा डाल सकता है। इसके परिणामस्वरूप थकान, अकुशलता और चिड़चिड़ापन होता है।

कूल्हे और पैरों तक फैली नसें कशेरुकाओं की हड्डियों के बीच से निकलती हैं। पीठ (हड्डियों या डिस्क) में कोई

समस्या एक नितंब में दर्द के रूप में प्रकट हो सकती है या एक या दोनों पैरों के पिछले हिस्से तक फैल सकती है। इस लक्षण को साइटिका कहा जाता है। यह अपने आप में कोई निदान नहीं है, बल्कि दर्द का एक विवरण मात्र है। साइटिका के साथ पैरों में झुनझुनी और संवेदना का अभाव भी हो सकता है।

यदि आपको पीठ दर्द हो तो लक्षणों से राहत पाने के लिए निम्नलिखित घरेलू उपाय आज़मा सकते हैं।

- कैप्सेसिन युक्त मलहम लगाएं और फिर हर घंटे या लगभग दो मिनट के लिए बर्फ का पैक लगाएं।
- आइबुप्रोफेन या नेप्रोक्सन जैसी एनएसएआईडी (नॉन-स्टेरॉयडल एंटी-इंफ्लेमेटरी ड्रग्स) लें। पैरासिटामोल भी दर्द से राहत दिला सकती है।
- शुरुआत में आराम करें, लेकिन लगातार दो दिन से ज़्यादा नहीं, क्योंकि ऐसा करने से रीढ़ को सहारा देने वाली पैरास्पाइनल मांसपेशियाँ कमज़ोर हो जाती हैं, जिससे दर्द और बढ़ सकता है।
- करवट लेकर सोते समय घुटनों के बीच तकिया रखें, या फिर पीठ के बल लेटते समय घुटनों के नीचे तकिया रखें।

यदि दर्द किसी चोट के बाद हो, या आंतों और मूत्राशय की समस्याओं का कारण बने, बुखार हो, या पैरों में कमज़ोरी तथा संवेदना की कमी महसूस हो, तो तुरंत डॉक्टर से परामर्श लेना ज़रूरी है। इसके अलावा, दो हफ़्ते से ज़्यादा समय तक बने रहने वाले किसी भी दर्द को भी गंभीरता से लेना और उसका मूल्यांकन करना ज़रूरी है।

दुर्भाग्य से, सभी पीठ दर्द का कारण एक जैसा नहीं होता। यह सबके लिए एक ही उपाय वाली स्थिति नहीं है। इसके पीछे कई अलग-अलग कारण हो सकते हैं। समान लक्षणों के बावजूद, दो लोगों का निदान अलग-अलग हो सकता है। इसलिए लगातार बने रहने वाले दर्द की जाँच और मूल्यांकन ज़रूरी है। इसके लिए रक्त परीक्षण, एक्स-रे, सीटी स्कैन और एमआरआई स्कैन की आवश्यकता पड़ सकती है।

जाँच के परिणामों में विटामिन डी की कमी या कैल्शियम का निम्न स्तर दिखाई दे सकता है। यूरिक एसिड का स्तर बढ़ा हुआ हो सकता है। हड्डियाँ कमज़ोर हो सकती हैं, ऑस्टियोपीनिया, ऑस्टियोपोरोसिस, कशेरुकाओं का संपीड़न या वेज फ्रैक्चर, इंटरवर्टेब्रल डिस्क का खिसकना या क्षतिग्रस्त होना, फ़ेसेट जॉइंट की समस्याएँ, डिस्क एंडप्लेट्स में परिवर्तन, लम्बर कैनाल स्टेनोसिस या मकॉडा इक्विना सिंड्रोमम भी हो सकता है। कभी-कभी समस्या का मूल कहीं और हो सकता है और यह सूजन संबंधी विकारों, कैंसर मेटास्टेसिस या किसी संक्रमण के कारण हो सकता है। पेट की जाँच और स्कैन से साइलेंट एओर्टिक एन्यूरिज्म या पेट के अंदर की अन्य विकृतियाँ भी पता चल सकती हैं।

निदान और उपचार में कठिनाई इसलिए होती है क्योंकि कई मडिस्क परिवर्तनफ और अन्य रेडियोलॉजिक और रक्त रिपोर्ट कई सामान्य लोगों में भी पाई जा सकती हैं, जिन्हें गंभीर पीठ दर्द नहीं होता है।

कुछ भाग्यशाली लोगों में, एक सुधार योग्य या उपचार योग्य कारण की पहचान हो जाती है और उसके आधार पर विशिष्ट चिकित्सा शुरू की जा सकती है। कारण की पहचान और विशिष्ट उपचार मिलने के बाद भी पूर्ण राहत मिलना मुश्किल हो सकता है। अक्सर, कोई विशिष्ट कारण नहीं पहचाना जा सकता, और तब पीठ के निचले हिस्से के दर्द को *अविशिष्ट* करार दे दिया जाता है।

इलाज कभी-कभी मरीज़ और डॉक्टर, दोनों के लिए निराशाजनक हो सकता है। इससे डॉक्टर के बार-बार चक्कर लगाने की ज़रूरत, असंतोष और दुःख की स्थिति पैदा हो सकती है। दर्द के कारण कुशलता से काम न कर पाना और इलाज के प्रति धीमी प्रतिक्रिया अवसाद का कारण बन सकती है, और दर्द और उसके इलाज के प्रति धारणा तथा प्रतिक्रिया को और भी बदतर बना सकती है।

चिकित्सक दर्द निवारक दवाओं के साथ मांसपेशियों को आराम देने वाली दवाओं और अवसादरोधी दवाओं मिलाकर मरीज़ को आराम पहुँचा सकते हैं। निर्देशित व्यायाम और मज़बूती प्रदान करने वाली फिजियोथेरेपी भी अक्सर लाभकारी साबित होती है। असंतुष्ट मरीज़ वैकल्पिक दवाएँ और एक्यूपंक्चर आज़मा सकते हैं। *गैर-विशिष्ट* पीठ दर्द के इलाज की सूची लंबी है। लेकिन इनमें से ज़्यादातर इलाज काल्पनिक और अप्रमाणित हैं।

गंभीर दीर्घकालिक मामलों में, चिकित्सक रीढ़ की हड्डी में कॉर्टिकोस्टेरॉइड या नर्व ब्लॉक इंजेक्शन लगाने की सलाह दे सकते हैं। तंत्रिका संपीड़न के साथ हर्नियेटेड डिस्क, स्पाइनल स्टेनोसिस, या रीढ़ की अस्थिरता जैसे संरचनात्मक कारणों के लिए सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

जीवनशैली में कुछ बदलाव मददगार साबित हो सकते हैं:

- आदर्श शारीरिक वज़न प्राप्त करें। पेट के आसपास अतिरिक्त वज़न मुद्रा को बदल देता है और रीढ़ की हड्डी पर दबाव डालता है। यह स्थिति कुछ हद तक गर्भावस्था जैसी होती है।
- काम और अध्ययन के लिए एर्गोनॉमिक फर्नीचर का उपयोग करें।
- लंबे समय तक बैठे रहने से पैरास्पाइनल मांसपेशियां कमज़ोर हो जाती हैं। इसलिए हर घंटे उठकर स्ट्रेचिंग करें या कुछ कदम चलें।
- हफ़्ते में कम से कम छह दिन, रोज़ाना 30-40 मिनट एरोबिक व्यायाम (चलना, जॉगिंग, तैराकी, साइकिल चलाना) करें। इसके साथ ही, नियमित रूप से कम से कम 20 मिनट योग या स्ट्रेचिंग और कोर स्ट्रेंथनिंग भी करें।
- धूम्रपान न करें। निकोटीन हड्डियों के चयापचय में असंतुलन पैदा करता है, जिससे हड्डियों का घनत्व कम हो जाता है।
- शराब का सेवन कैल्शियम और विटामिन डी के अवशोषण में बाधा डाल सकता है, जिससे हड्डियाँ कमज़ोर हो जाती हैं।

पीठ दर्द होने का इंतज़ार न करें। इससे बचाव के लिए नियमित व्यायाम करें। आखिरकार, चोर के घुसने से पहले घर को ताला लगाना हमेशा बेहतर होता है।

लेखिका एक शिशु रोग विशेषज्ञ और स्टेइंग हेल्दी *इन मॉडर्न इंडिया की लेखिका हैं।*

रो ई मंडल 3211

रोटरी क्लब हरिपद ग्रेटर

डीजी टीना एंटोनी की उपस्थिति में आंगनवाड़ी के बच्चों को खिलौने दिए गए, जिन्होंने इन सरकारी बाल देखभाल केंद्रों में बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए क्लब के सदस्यों के प्रयासों की सराहना की।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3231

रोटरी क्लब तिरुपत्तूर

तिरुपत्तूर ज़िले के कीझूर गाँव में 25 किसानों को उर्वरक वितरित किए गए। एक अन्य पहल के अंतर्गत, कोबाई गाँव के 100 सरकारी स्कूल छात्रों को शैक्षणिक सामग्री और एस कोडियूर गाँव स्थित सोनिया अकादमी के 125 छात्रों को खेल सामग्री प्रदान की गई।

रो ई मंडल 3234

रोटरी क्लब अन्ना नगर मद्रास

विश्व पर्यावरण दिवस (13 जुलाई) के अवसर पर कांचीपुरम के वालाजाबाद तालुका स्थित अक्षय विद्यालय में लगभग 1,500 पौधे लगाए गए। मलेशिया के पीडीजी भास्करन गोबाला कृष्णन और रोटेरियन आईएफएस अधिकारी इरुलैंडी इस अवसर के मुख्य अतिथि थे।

रो ई मंडल 3240

रोटरी क्लब कटवा

क्लब के अध्यक्ष रूपेश कुमार अग्रवाल (2024-25) के माता-पिता नरेश कुमार अग्रवाल और पुष्पा की 50वीं शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में कोलकाता के एक बैंक्वेट हॉल में सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। नवविवाहित जोड़ों को लगभग 50 आवश्यक वस्तुएँ दान की गईं।

रो ई मंडल 3212

रोटरी क्लब रामनाड

भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि पर केंद्रीय विद्यालय स्कूल में दो आरओ वाटर प्यूरीफायर यूनिट (₹1.5 लाख) स्थापित की गईं। इन पेयजल इकाइयों को डीजीई के. गांधी द्वारा प्रायोजित किया।

रो ई मंडल 3250

रोटरी क्लब बोकारो स्टील सिटी

मुस्कान अस्पताल के सहयोग से रोटरी प्ले ग्रुप स्कूल में आयोजित सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण शिविर में 84 लड़कियों को एचपीवी वैक्सीन की दूसरी खुराक दी गई। इस कार्यक्रम का समन्वय परियोजना अध्यक्ष शाइनी ज़कारिया ने किया।

रो ई मंडल 3291

रोटरी क्लब साल्ट लेक सेंट्रल

उत्तर 24 परगना मंडल के मुरगाचा स्थित एससी सेन वृद्धाश्रम में निराश्रित महिलाओं के लिए एक रोटरी वार्ड का उद्घाटन किया गया। रोटरी क्लब ने नए परिसर के लिए ₹16.5 लाख की आंशिक धनराशि प्रदान की।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

रोटरी ओलंपियाड एथलीटों को तैयार करता है

वी मुत्तुकुमारन

चेन्नई ज़ोन में अपनी तरह के पहले आयोजन में, रो ई मंडल 3234 के 50 रोटरी क्लबों ने शहर के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में स्कूली छात्रों के लिए एक दिवसीय ट्रैक और फील्ड खेल प्रतियोगिता, रोटरी ओलंपियाड का आयोजन किया। मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन भाषण देते हुए, भारतीय सेना के दक्षिण भारत क्षेत्र के जनरल ऑफिसर कमांडिंग, लेफ्टिनेंट जनरल करणबीर सिंह बरार ने कहा, भारत में दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी है। इसलिए, उनके बीच हर प्रकार की शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देना और उनकी ऊर्जा को देश के स्वस्थ विकास की दिशा में निर्देशित करना ज़रूरी है, जहाँ प्रौद्योगिकी, खेल और प्रगति के अन्य क्षेत्रों में अपार संभावनाएँ मौजूद हैं।

देश के भविष्य के रूप में, युवाओं को सही अवसर मिलने चाहिए, और ऐसे खेल आयोजन उन प्रतिभाओं की पहचान में मदद कर सकते हैं, जो बड़े होकर देश के लिए ओलंपिक पदक जीत सकें। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना और रोटरी दोनों निस्वार्थ सेवा, सामुदायिक विकास, शांति स्थापना और राष्ट्र की प्रगति के लिए काम करने के समान मूल्यों को साझा करते हैं। साथ ही, उन्होंने स्कूली छात्रों के लिए ओलंपियाड आयोजित करने के लिए रोटरी क्लबों की सराहना की। डीजी विनोद सरावगी ने कहा कि रोटरी ओलंपियाड शहर के स्कूली छात्रों की युवा ऊर्जा, दृढ़ संकल्प, अनुशासन और खेल भावना का उत्सव है।

अपने संबोधन में, रोटरी ओलंपियाड के अध्यक्ष कर्नल (सेवानिवृत्त) भूपिंदर सिंह ने कहा, ट्रैक-एंड-फील्ड प्रतियोगिता केवल एक खेल आयोजन नहीं है, बल्कि स्कूली बच्चों के टीमवर्क, अनुशासन और समग्र विकास का मंच है। स्कूल प्रशासन और कार्यक्रम के स्वयंसेवकों का धन्यवाद करते हुए, उन्होंने कहा, मैदान पर कदम रखने वाला हर बच्चा एक चैंपियन है, क्योंकि यह सिर्फ़ जीतने के बारे में नहीं है, बल्कि साहस की खोज, दोस्ती का निर्माण और खेल भावना की सच्ची भावना को अपनाने के बारे में है।

आकांक्षी आई ए एस अधिकारी

शहर के उपनगर मीनाम्बक्कम स्थित ए एम जैन स्कूल की कक्षा 11वीं की छात्रा डिंपल तंवर रोटरी ओलंपियाड में भाग लेने को लेकर उत्साहित थीं। उन्होंने कहा, मेरा ध्यान हमेशा पाठ्येतर गतिविधियों पर रहता है और मुझे बैडमिंटन खेलना, दौड़ना और लंबी कूद खेलना बहुत पसंद है। अपने जीवन के लक्ष्यों के बारे में उन्होंने कहा, आईएएस अधिकारी बनने के लिए सिविल सेवा परीक्षा पास करने से पहले, मैं एथलेटिक्स में राष्ट्रीय पदक जीतना चाहती हूँ।

एसडीएटी (तमिलनाडु खेल विकास प्राधिकरण) ने आयोजन में सहयोग किया, जबकि लगभग 250 रोटेरियन और 100 रोटरेक्टर्स ने सक्रिय भागीदारी निभाई। प्रत्येक छात्र को एक टी-शर्ट, टोपी, एनर्जी ड्रिंक, पानी की बोतल और बिस्कुट दिए गए। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए, और विजेताओं को कुल 100 पदक दिए गए। इस कार्यक्रम में 77 स्कूलों के लगभग 1,600 छात्रों ने भाग लिया। ■

वी मुत्तुकुमारन

रो ई मंडल 3234 के डीजी विनोद सरावगी और लेफ्टिनेंट जनरल करणबीर सिंह ब्रार, जनरल कमांडिंग ऑफिसर, भारतीय सेना के दक्षिण भारत क्षेत्र, प्रेस मीट को संबोधित करते हुए। बाएँ ओर परियोजना अध्यक्ष कर्नल (सेवानिवृत्त) भूपिंदर सिंह भी नज़र आ रहे हैं।

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

महिलाओं के लिए कैंसर जांच बस

रो ई मंडल 2981 ने वैश्विक अनुदान सहायता के माध्यम से महिलाओं में कैंसर का जल्द पता लगाने के लिए कुंभकोणम में ₹1.94 करोड़ की कैंसर जांच बस की शुरुआत की। पुडुचेरी का मनकुला विनयगर मेडिकल कॉलेज कैंसर का पता लगाने वाले शिविरों के लिए सेवा भागीदार होगा।

दायें से: पीडीजी गण एस बालाजी, रमेश बाबू, एस भास्करन, डीजी जे लियोन, तंजावुर जिला कलेक्टर बी प्रियंका पंकजम और पीडीजी जॉन डैनियल (बाएँ से तीसरे) कैंसर जांच वैन के लॉन्च पर।

आदिवासी शिशुओं के लिए जीवन रक्षक देखभाल

रोटरी क्लब मुंबई बोरीवली ईस्ट, रो ई मंडल 3141, ने मोमेंटिव परफॉर्मेंस मैटेरियल्स के साथ साझेदारी में, पालघर के जवाहर में स्थित पतंगशाह कॉटेज अस्पताल को पूरी तरह से सुसज्जित एनआईसीयू एम्बुलेंस दान की। उन्नत नवजात देखभाल तक सीमित पहुंच वाले आदिवासी क्षेत्र की सेवा करते हुए, एम्बुलेंस पहले ही दो महीनों में 10 नवजात शिशुओं को बचा चुकी है।

एनआईसीयू एम्बुलेंस सौंपने के समारोह में क्लब के सदस्य।

कृषक परिवारों को चावल वितरण

रोटरी क्लब चेन्नई सिम्फनी, रो ई मंडल 3234, ने तिरुवल्लूर जिले के आरकोट के कुप्पम गांव में चावल वितरण अभियान चलाया, जिसमें 100 आर्थिक रूप से वंचित किसान परिवारों को 500 किलोग्राम चावल उपलब्ध कराया गया।

लाभार्थियों के साथ क्लब के सदस्य।

रोटरी की वार्षिक थीम को डाक टिकट संग्रह द्वारा विदाई

रोटरी क्लब इंदौर नवलखा, रो ई मंडल 3040, ने रो ई की अंतिम अध्यक्षीय थीम *रोटरी का जादू* के उपलक्ष्य में एक विशेष *लास्ट डे कवर पोस्ट* लॉन्च किया। 2025-26 रोटरी वर्ष से, पारंपरिक वार्षिक 'अध्यक्षीय थीम' को ब्रांडिंग और संचार को सुव्यवस्थित करने के लिए एक अधिक सुसंगत "अध्यक्षीय संदेश' द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।

स्मारक डाक टिकट के साथ आईपीडीजी अनीश मलिक (दाएँ)।

परिवर्तन की शक्ति

पंजाब के मोगा में एचपीवी शिविर

रोटरी क्लब मोगा स्टार्स, रो ई मंडल 3090 द्वारा डॉ शाम सुंदर नर्सिंग होम में आयोजित गर्भाशय ग्रीवा टीकाकरण शिविर में 150 से अधिक लड़कियों को टीका लगाया गया। इस अवसर पर पीडीजी परवीन जिंदल, क्लब अध्यक्ष पंकज बंसल और सचिव नलिनी जिंदल उपस्थित रहे।

₹12 लाख की इस परियोजना को रो ई मंडल 3011 ने प्रायोजित किया। शिविर का उद्घाटन करते हुए, दिल्ली से आए रोटेरियन समीर गुप्ता ने कहा कि वह भविष्य में भी इसी तरह की टीकाकरण परियोजनाओं को प्रायोजित करने के लिए तैयार हैं। ■

टीकाकरण शिविर में (बाएँ) पीडीजी परवीन जिंदल।

मुजफ्फरनगर स्कूल में एक कंप्यूटर लैब

रोटरी क्लब मुज़फ़्फ़रनगर संस्कृति, रो ई मंडल 3100 द्वारा, तत्कालीन क्लब सचिव संजीव जिंदल के स्वामित्व वाली श्री तिरुपति इन्फोटेक के साथ साझेदारी में, बीबीपुर स्थित कम्पोजिट स्कूल में एक कंप्यूटर लैब स्थापित की। उत्तर प्रदेश के कौशल विकास मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा से जुड़ी यह पहल बच्चों का भविष्य बेहतर बनाएगी और समाज को आगे ले जाएगी। तत्कालीन डीजीई नितिन कुमार अग्रवाल ने स्कूल लैब परियोजना को पूरा करने में तत्कालीन क्लब अध्यक्ष प्रशांत जैन और जिंदल के प्रयासों की सराहना की।

परियोजना अध्यक्ष संदीप मित्तल, पूर्व अध्यक्ष गौरव पाठक और सोनिया जैन ने परियोजना कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ■

कंपोज़िट स्कूल, बिबीपुर में कंप्यूटर लैब के उद्घाटन के अवसर पर डीजी नितिन कुमार अग्रवाल (दाएँ) और उत्तर प्रदेश के मंत्री कपिल देव अग्रवाल (मध्य)।

स्कूल शौचालय ब्लॉक का नवीनीकरण

रोटरी क्लब मणिपाल, रो ई मंडल 3182 ने *प्रोजेक्ट डिग्निटी* इन एवरी स्टेप के तहत इंदिरा नगर स्कूल के एक शौचालय ब्लॉक का नवीनीकरण किया।। उन्नत स्वच्छता सुविधा में अब अलग-अलग लिंग के लिए शौचालय इकाइयाँ, नियमित जल आपूर्ति वाले हैंडवाश स्टेशन और सभी छात्रों के लिए आसान पहुँच के लिए उपयोगकर्ता-अनुकूल डिज़ाइन उपलब्ध है।

रोटरी की इस परियोजना का उन छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, जिन्हें पहले उचित शौचालय सुविधाओं के अभाव में स्वच्छता संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। इस पहल के बाद, स्कूल प्रशासन ने छात्राओं की उपस्थिति में वृद्धि और बेहतर शिक्षण वातावरण देखा है। ■

नवीनीकृत शौचालय ब्लॉक के सामने रोटेरियनों और छात्रों के साथ पीडीजी जया गौरी हडिगल।

सोलापुर स्कूल में चिकित्सा शिविर

रोटरी क्लब सोलापुर प्राइड, आरआईडी 3131 द्वारा युगंधर मल्टीस्पेशालिटी हॉस्पिटल के सहयोग से कामाटी खुर्द स्थित ले. दाजिकाका गोदबोले स्कूल में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में लगभग 550 छात्रों और 50 अभिभावकों की जाँच की गई।

किडनी संबंधी रोग, अस्थि रोग, रीढ़ की समस्याएँ, नेत्र विकार, मधुमेह और उच्च रक्तचाप की विशेषज्ञ परामर्श और जाँच की गई।

क्लब अध्यक्ष सूर्यकांत अगवणे, जो एक पूर्व सैन्य चिकित्सा अधिकारी हैं, ने हृदयगति रुकने पर रोगियों को बचाने के लिए सीपीआर का प्रदर्शन किया।

स्कूल में स्व-परीक्षण के लिए एक विज़न बोर्ड स्थापित किया गया। ■

रोटरी क्लब सोलापुर प्राइड के अध्यक्ष सूर्यकांत अगवणे (मध्य) रोटेरियनों और छात्रों के साथ स्वास्थ्य जांच शिविर में।

तिरुपुर रोटरी हॉल के पास वाटर एटीएम।

तिरुपुर में रोटरी वाटर एटीएम

वी मुत्तुकुमारन

तमिलनाडु में भारत की निटवेयर राजधानी के रूप में प्रसिद्ध तिरुपुर में नि:शुल्क वाटर एटीएम स्थापित किए जा रहे हैं ताकि इस वस्त्र नगरी के घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जनता को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जा सके। रोटरी क्लब तिरुपुर साउथ, रो ई मंडल 3203 ने जुलाई 2024 में पहला एटीएम स्थापित किया, जब इस परियोजना के जनक और तत्कालीन अध्यक्ष के मोहनसुंदरम ने पदभार संभाला था। रोटरी सदस्यों के योगदान की मदद से हमने तिरुपुर रोटरी हॉल के सामने पहला एटीएम स्थापित किया जिसकी लागत ₹4.5 लाख थी। बाद में, हमने ग्रेटर सिडनी के रोटरी ई-क्लब (रो ई मंडल 9685) के साथ साझेदारी में एक वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन किया और शहर के प्रमुख स्थानों पर 14 और वाटर एटीएम स्थापित करेंगे, वह कहते है।

अस्थायी लोगों सहित 12 लाख की आबादी वाले तिरुपुर शहर को गिरते भूजल स्तर और औद्योगिक अपशिष्टों द्वारा मौजूदा स्रोतों के तेजी से प्रदूषण के चलते गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। कम आय वाले लोगों को स्वच्छ पेयजल प्राप्त करने में बहुत कठिनाई होती है जिसके कारण उन्हें विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है और यह उनके लिए अतिरिक्त बोझ बन जाता है, मोहनसुंदरम बताते हैं।

क्लब ने वाटर एटीएम स्थापित करने के लिए दो कंपनियों - एक्वा केयर सिस्टम्स और किंग एक्वा - के साथ साझेदारी की है, जिसमें मुख्य रूप से एक आर ओ फिल्टर इकाई और एक जल वितरण प्रणाली शामिल होती है। प्रत्येक मशीन की क्षमता 1,000 लीटर प्रति घंटे की होती है और क्लब ने इन कंपनियों के साथ पांच साल के वार्षिक रखरखाव अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं।

हर हफ्ते, कंपनी के अधिकारी इन वाटर एटीएम का निरीक्षण करते हैं ताकि इस प्रणाली का सुचारू रूप से संचालन सुनिश्चित किया जा सके और यदि कोई दिक्कत होती है तो उसके स्पेयर पार्ट्स बदल दिए जाते हैं। इसके अलावा हर महीने फिल्ट्रैशन झिल्ली के अधिक उपयोग में आने पर उसको बदल दिया जाता हैं, क्लब के अध्यक्ष कहते हैं। अब जब हमें वैश्विक अनुदान के रूप में 50,000 डॉलर स्वीकृत हो गए हैं, जिसमें हमारे सदस्यों द्वारा दिए गए 33,000 डॉलर शामिल हैं, तो शेष 14 एटीएम बस स्टैंड, सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, सब्जी बाजार, कलेक्ट्रेट कार्यालय और तीन सरकारी स्कूलों में स्थापित किए जा रहे हैं, वह कहते हैं। हम अगस्त के अंत तक इस परियोजना को पूरा कर लेंगे।

तिरुपुर नगर निगम को धन्यवाद देते हुए वह कहते हैं, सभी एटीएम साइट, जल और बिजली की आपूर्ति नागरिक निकाय द्वारा प्रदान की जा रही है जो हमारे लिए बहुत ही मददगार है। रोटरी हॉल के एक कर्मचारी, 70 वर्षीय रामचंद्रन कहते हैं, लगभग 150 गरीब परिवार अपनी दैनिक जरूरतों के लिए पूरी तरह से इन वाटर एटीएम पर निर्भर हैं। एक घरेलू सहायिका पलानियम्मल कहती हैं, हम अनुपचारित और दूषित पानी का सेवन करते थे जिससे बीमार हो जाते थे। अब हमें अधिक शुद्ध जल प्राप्त हो रहा है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अधिक सुरक्षित है। *प्रोजेक्ट रोटरी प्योर वाटर* को अब इस टेक्सटाइल हब में होर्डिंग और बोर्ड्स के साथ प्रदर्शित किया जा रहा है जिससे क्लब की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा मिल रहा है।

साप्ताहिक परियोजना अध्यक्ष

हर हफ्ते, क्लब के एक सदस्य को परियोजना अध्यक्ष के रूप में चुना जाता है और वह दूसरों की मदद से प्रति दिन कुछ परियोजनाएं या पहल करते है। हम रोजाना एक स्वास्थ्यवर्धक परियोजना भी करते हैं और हमारा वार्षिक नारा *नम्माल मुडियुम* (हम कर सकते हैं) है। मैंने मई 2024 में क्लब के बोर्ड को 52 सप्ताह का शेड्यूल सौंपा था और सदस्यों के सहयोग की वजह से हमने ₹9.5 करोड़ की लगत वाली 730 सेवा परियोजनाएं की हैं जो लगभग एक मिलियन लोगों की ज़िंदगियाँ परिवर्तित कर रही हैं, वह एक संतोष भरी मुस्कान के साथ कहते हैं। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3212 की
जैव विविधता परियोजनाए

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3212 की मंडल परियोजना, *जैव विविधता संरक्षण* के अंतर्गत, रोटरी क्लब शिवकाशी टाउन और राजपलायम सुपर किंग्स ने तमिलनाडु के श्रीविल्लीपुत्तूर के पास पश्चिमी घाट में स्थित सदुरागिरी महालिंग पहाड़ियों पर भगवान सुंदर महालिंग स्वामी मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को पर्यावरण-अनुकूल कपड़े के थैले वितरित करने के लिए सहयोग किया। इस परियोजना का उद्घाटन विरुधुनगर के मंडल कलेक्टर सुखपुत्र और मेगामलाई टाइगर रिजर्व के उप निदेशक देवराज पलानीसामी द्वारा किया गया।

हर साल, आदि अमावस्या के अवसर पर हज़ारों तीर्थयात्री पहाड़ी मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं। लेकिन वे प्राचीन वन क्षेत्र में एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक और अन्य कचरे से कूड़ा-कचरा फैला देते हैं, जिससे न केवल भूमि दूषित होती है, बल्कि जंगली जानवरों का जीवन खतरे में पड़ जाता है क्योंकि वे भक्तों द्वारा लापरवाही से फेंके गए ऐसे गैर-जैवनिम्नीकरणीय कचरे को खा लेते हैं। रो ई मंडल 3212 के समाचार समन्वयक बालामुरुगन ने कहा, कपड़े के थैले वितरित करते हुए, रोटेरियनों ने भक्तों से अनुरोध किया कि वे पहाड़ियों में कूड़ा न फैलाएं और मंदिर के रास्ते में फैले प्लास्टिक एवं अन्य अपशिष्ट पदार्थों की सफाई भी की। मंडल कलेक्टर सुखपुत्र ने पर्यावरण, विशेष रूप से जंगलों और मनोरम पहाड़ियों को प्लास्टिक और अन्य हानिकारक कचरे से होने वाले प्रदूषण से बचाने का आह्वान किया।

रो ई मंडल 3212 के क्लबों ने अपने डीजी दिनेश बाबू के मार्गदर्शन में रोटरी के प्रमुख क्षेत्रों में विविध परियोजनाएँ शुरू की हैं। रोटरी क्लब राजपलायम सुपर किंग्स ने क्लब के अध्यक्ष कार्तिकेयन और कॉलेज के प्रधानाचार्य सरवनन के नेतृत्व में गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज में पौधे लगाए हैं और हरियाली अभियान का नेतृत्व किया है।

डॉ अग्रवाल नेत्र चिकित्सालय के सहयोग से रोटरी क्लब कुळितुरै द्वारा कीज़्पुथलम गाँव में एक नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया, जिससे सैकड़ों वृद्धजन लाभान्वित हुए, जिनकी चिकित्सा सुविधा तक पहुँच नहीं है। रोटरी क्लब यार्न सिटी नागरकोइल और श्रीविल्लीपुत्तूर टाउन द्वारा सरकारी अस्पतालों को व्हीलचेयर दान की गईं, ताकि मरीजों को वार्डों और विभागों के बीच आसानी से आने-जाने में सुविधा हो। अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक मुक्त दिवस (25 मई) के अवसर पर, रोटरी क्लब रामनाद के सदस्यों ने जनता को कपड़े के थैले वितरित किए और अपने जीवन में एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक से बचने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता पैदा की।

रोटरी क्लब विरुधुनगर के सदस्यों ने कामराजर इंजीनियरिंग कॉलेज में छात्रों के लिए नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। रोटरी क्लब गोल्डन सिटी नागरकोइल में नए पदाधिकारियों की नियुक्ति के अवसर पर एक वंचित परिवार के स्कूली छात्र को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। ■

पहाड़ी मंदिर में कपड़े के थैले वितरित करते हुए।

नेत्र जांच शिविर जारी है।

एक कॉलेज में वृक्षारोपण अभियान।

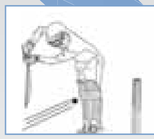

टेबल सेटिंग पूर्व बनाम पश्चिम

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

पिछले महीने मुझे कुछ महिलाओं के बीच एक वैश्विक महत्व के विषय, यानी टेबल सेटिंग, पर हो रही जीवंत चर्चा में एक अनैच्छिक, यद्यपि निष्क्रिय, भागीदार होने का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह कुछ इस प्रकार हुआ। मेरी पत्नी की तीन कॉलेज की सहेलियाँ दोपहर के भोजन के लिए आईं, या यूँ कहें कि सुबह अचानक एक कप कॉफ़ी पीने के बाद, दोपहर तक भोजन के लिए रुकीं। जब खाना ऑर्डर हो गया और मेरी पत्नी ने मुझे टेबल लगाने का निर्देश दिया, तो उनमें से एक महिला ने पूछा कि रसोई से लाए गए गिलास प्लेट के दाईं ओर रखे जाएँ या बाईं ओर। मैं बिल्कुल असमंजस में था।

मैंने कहा कि गिलास पानी के लिए हैं इसलिए उन्हें बाईं ओर रखना होगा। क्यों, उसने पूछा। मैंने कहा कि भारतीय अपने दाहिने हाथ की उंगलियों से खाते हैं और गिलास को दाईं ओर रखना बहुत गन्दा और असुविधाजनक होगा। लेकिन, उसने कहा, पारंपरिक तरीका यह है कि इसे दाईं ओर रखा जाए। हमने थोड़ा बहस की और आखिरकार मैंने कहा ठीक है, मैं गिलास रहने देता हूं और जब आपको प्यास लगे तो आप स्वयं ले सकते हैं। मेरी पत्नी को यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि उसके अनुसार मेरा स्वभाव बहुत असभ्य था। मैं जीवन भर यह नहीं समझ पाया कि उसे ऐसा क्यों लगता है, लेकिन हमेशा की तरह, मैंने साहस के बजाय विवेक को चुना। हालाँकि, मैंने टेबल सेटिंग के नियमों को गूगल किया।

यह काफी पेचीदा चीज़ निकली। मुझे अंदाज़ा भी नहीं था कि यह इतना जटिल होगा। गूगल के अनुसार: ''कांटे बाईं तरफ़ रखते है, चाकू और चम्मच दाईं तरफ़, और बर्तन इस्तेमाल के क्रम के हिसाब से बाहर से अंदर की तरफ़ रखते हैं। गिलास चाकुओं के ऊपर रखे हैं, और नैपकिन कांटे के बाईं तरफ़ या प्लेट पर रखा जा सकता है।''

निर्देश बहुत विस्तृत थे। ब्रेड प्लेट, या जिसे हम क़ार्टर प्लेट कहते हैं, मुख्य प्लेट के ऊपर बाईं ओर होनी चाहिए। मक्खन वाला चाकू उसके ऊपर रखा जाता है, कहीं और नहीं। फिर कांटे, आह, कांटे। जिस बड़े कांटे से आप खाते हैं उसे मुख्य प्लेट के सबसे पास रखा जाता है और सलाद वाला कांटा उसके बाईं ओर। फिर चाकू आते हैं। खाने का चाकू खाने की प्लेट के सबसे पास होना चाहिए, और ध्यान रहे, उसका ब्लेड अंदर की ओर हो। उसके दाईं ओर सलाद का चाकू रखा जाता है। फिर चम्मच रखी जाती हैं। सूप का चम्मच चाकुओं के दाईं ओर रखा जाता है।

सब हो गया? बिलकुल नहीं। कांच के बर्तनों को जिस तरह रखा जाता है, वह भी मायने रखता है। पानी के गिलास चाकुओं के ऊपर रखे जाते हैं। शराब के गिलास पानी के गिलास के दाईं ओर रखे जाते हैं। नैपकिन के बिना खाना खाना नहीं होता, असली नैपकिन, वो कागज़ के घिनौने नैपकिन नहीं। इन कपड़े के नैपकिन को काँटों के बाईं ओर रखा जा सकता है, लेकिन दाईं ओर कभी भी नहीं। अगर आप ज़्यादा नखरेबाज़ नहीं हैं, तो नैपकिन को खाने की प्लेट में रखा जा सकता है। लेकिन ऐसा सिर्फ़ आलसी लोग ही करते हैं।

पश्चिमी शैली के औपचारिक भोजन के नियम पानी की तरह साफ हैं। लेकिन मेरे मन में एक विचार कौंधा: भारतीय शैली के औपचारिक भोजन के क्या नियम है, खासकर अगर सभी पारंपरिक तरीके से ज़मीन पर बैठें हो और भोजन थाली में परोसा जाना हो? इसके नियम भी काफी सीधे है। वहाँ टेबल सेटिंग जैसी कोई चीज़ नहीं होती क्योंकि वहाँ कोई मेज़ ही नहीं होती है। दक्षिण में तो थाली भी नहीं होती। खाना केले के पत्तों पर परोसा जाता है जो पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल होता है।

फिर एक बेहद निराशाजनक विचार मेरे मन में आया: विदेश में, हमारे राजनयिक पारंपरिक भारतीय रात्रिभोज को कैसे परोसते हैं? दाल, रोटी, चावल और रायता को चाकू, कांटे और चम्मच के साथ? क्या वे मेहमानों को फर्श पर एक पंक्ति में बैठने के लिए कहते हैं? मुझे लगता है कि उन्हें ऐसा करना चाहिए। ■

ADVT.

YOUR POWERFUL MOVE TO TAKE RJ MANTRA TO INTERNATIONAL ARENA IS A MILESTONE TO CHERISH
Darshan G
Grade 7
Darshan G
RJ MANTRA ENGLISH SCHOOL
CONGRATULATIONS
For clinching
2ND DOLE TROPHY PASINO GRAND ACCESSION 2025
VENUE:PASINO GRAND IN AIX-EN-PROVENCE, FRANCE.
www.rjmantra.com
9489067789 | 8903660689
admin@rjmantra.com

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹40
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26

ADVT.